A Daily News Magazine
भोपाल
बुधवार, 20 मई, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 257, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

क्यों शी की 'थ्यूसीडाइड्स ट्रैप' थ्योरी रणनीतिक मजाक है..

आर. जगन्नाथन

मज़ाक, अगर शी उसे समझ सकें, तो उन्हीं पर भारी पड़ सकता है। सिर्फ अमेरिका ही नहीं, बल्कि भारत के उभार को देखकर चीन भी 'थ्यूसीडाइड्स ट्रैप' में फंस सकता है। यह दिलचस्प है कि चीन के शीर्ष नेता शी जिनपिंग ने डॉनल्ड ट्रंप की बीजिंग यात्रा के दौरान 'थ्यूसीडाइड्स ट्रैप' का ज़िक्र किया। उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से यह संकेत देने की कोशिश की कि अमेरिका को चीन के उभार से ज्यादा डरने की ज़रूरत नहीं है और उसे चीन के साथ साझेदारी करनी चाहिए।

'थ्यूसीडाइड्स ट्रैप' का विचार पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व के यूनानी इतिहासकार थ्यूसीडाइड्स से जुड़ा है। उन्होंने एथेंस और स्पार्टा के बीच हुए पेलोपोनेशियन युद्ध के कारणों को समझने की कोशिश की थी। इस सिद्धांत के मुताबिक जब कोई नई ताकत उभरती है, तो पुरानी ताकत खुद को खतरे में महसूस करती है और अक्सर इसका नतीजा युद्ध होता है।

थ्यूसीडाइड्स का मानना था कि इस युद्ध की मुख्य वजह एथेंस के बढ़ते प्रभाव से स्पार्टा का डर था, लेकिन मज़ाक, अगर शी उसे समझ सकें, तो उन्हीं पर भारी पड़ सकता है। सिर्फ अमेरिका ही नहीं, बल्कि चीन भी 'थ्यूसीडाइड्स ट्रैप' में फंस सकता है–अगर वह पहले से इसमें नहीं फंसा है–जब वह भारत के उभार को देखेगा। हालांकि, भारत का उभार अभी उस स्तर तक नहीं पहुंचा है जहां चीन को सीधा खतरा महसूस हो, लेकिन चीन ने इस पर ध्यान देना शुरू कर दिया है और भारत की प्रगति को धीमा करने की कोशिश भी कर रहा है।

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान को चीन का समर्थन और 2020 के गलवान संघर्ष के समय भारत को सीमा पर डराने की कोशिश, जबकि भारत कोविड से जूझ रहा था, यह दिखाता है कि शी को थ्यूसीडाइड्स को दोबारा पढ़ने की ज़रूरत है। उन्हें मानसिक रूप से यह स्वीकार करना होगा कि भारत का उभार बिना युद्ध, प्रॉक्सी युद्ध या कॉर्पोरेट दबाव के भी संभव है।

दो ताकतों–एक पुरानी और एक उभरती हुई–के बीच सीधा युद्ध ही 'थ्यूसीडाइड्स ट्रैप' का एकमात्र रूप नहीं है। इसमें आर्थिक युद्ध भी शामिल हो सकता है। जब ट्रंप ने टैरिफ लगाए, तो चीन ने रेयर अर्थ मैग्नेट के निर्यात पर रोक लगाकर जवाब दिया। इससे उन उद्योगों पर खतरा पैदा हुआ जो इन जरूरी सप्लाई पर निर्भर हैं। यह असर उन देशों पर भी पड़ा, जिन्होंने चीन पर टैरिफ नहीं लगाए थे।

मैनेजमेंट और रणनीति विशेषज्ञ राम चरण ने अपनी नई किताब China's 90% Model में लिखा है कि चीन की युद्ध नीति आर्थिक है। इसमें कई अहम उद्योगों में 90 प्रतिशत तक उत्पादन पर कब्ज़ा करना शामिल है। इससे चीन को उन देशों पर दबाव बनाने की ताकत मिलती है जो उसकी शर्तें नहीं मानते। यह नहीं लगता कि चीन ने 'थ्यूसीडाइड्स ट्रैप' के व्यापक मतलब को पूरी तरह समझा है।

आर्थिक और सूचना युद्ध भी आखिरकार युद्ध ही हैं। 'थ्यूसीडाइड्स ट्रैप' सिर्फ इस बारे में नहीं है कि एक देश दूसरे के उभार से डरता है। यह भी हो सकता है कि दो ताकतें मिलकर किसी तीसरी उभरती ताकत को नीचे दबाने की कोशिश करें। इस मामले में यह सिर्फ अमेरिका द्वारा चीन को रोकने की कोशिश नहीं हो सकती, बल्कि अमेरिका और चीन दोनों मिलकर भारत और भविष्य की अन्य उभरती ताकतों को रोकने की कोशिश कर सकते हैं। इसके लिए आंतरिक संघर्ष, आर्थिक और राजनीतिक प्रतिबंध, यहां तक कि युद्ध का इस्तेमाल भी किया जा सकता है।

यह विचार दुनिया के लगभग हर शक्ति संबंध पर लागू हो सकता है–चाहे वह कॉर्पोरेट ताकत हो, लैंगिक शक्ति, जनसंख्या शक्ति या बौद्धिक शक्ति। जब महिलाएं सत्ता और नेतृत्व में आगे बढ़ती हैं, तो पुरुष खुद को खतरे में महसूस करते हैं। जब नए इनोवेटर पुराने एकाधिकार को चुनौती देते हैं, तो पुरानी कंपनियां उन्हें रोकने की कोशिश करती हैं। इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट्स (IPR) व्यवस्था, जिसे असली इनोवेटर्स की सुरक्षा के लिए जरूरी बताया जाता है, कई बार प्रतिस्पर्धा को सीमित करने का तरीका भी बन जाती है। यह 'ट्रैप' हर तरह के शक्ति संबंधों पर लागू होता है। जब राजनीतिक नेता, कॉर्पोरेट प्रमुख या आध्यात्मिक गुरु अपने उत्तराधिकारी तय नहीं करते, तो उसके पीछे भी सत्ता खोने का डर होता है। असल समस्या इंसान के भीतर मौजूद उस डर से पैदा होती है जिसमें वह शक्ति खोने से डरता है। इसका समाधान मानसिक बदलाव में है, जहां व्यक्ति अस्थायी और भौतिक ताकत से आगे की चीजों पर ध्यान देना सीखता है।

यही बात चार पुरुषार्थ–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास भी बताते हैं। जीवन के एक चरण पर व्यक्ति को सत्ता छोड़कर आगे बढ़ना होता है। जब गृहस्थ जीवन और धन-सत्ता का चरण खत्म होने लगता है, तब व्यक्ति को वानप्रस्थ की ओर बढ़ना चाहिए, जहां वह रोजमर्रा की जिम्मेदारियां दूसरों को सौंपने लगता है। इसका मतलब पूरी तरह पीछे हटना नहीं, बल्कि ध्यान को आंतरिक विकास की ओर मोड़ना है। जब देशों को नए प्रतिद्वंद्वियों से खतरा महसूस होता है, तो उन्हें नए देशों के लिए जगह बनानी चाहिए ताकि वे भी आगे बढ़ सकें।

कंपनियां भी ऐसा करती हैं। जब उन्हें नए प्रतियोगी दिखाई देते हैं, तो वे कम लाभ वाले कारोबार छोड़कर ज्यादा मूल्य वाले क्षेत्रों में आगे बढ़ती हैं। प्रकृति के नियम भी एक तय चक्र का पालन करते हैं–सृजन, स्थिरता, विनाश और पुनर्जन्म। इसे हिंदू मान्यता में ब्रह्मा, विष्णु और महेश की भूमिकाओं से समझा जाता है। 'थ्यूसीडाइड्स ट्रैप' इसी प्राकृतिक सत्य का एक रूप है।

इसका मतलब है कि ताकतवर देशों को दुनिया में उभर रही नई ताकतों के लिए जगह बनानी चाहिए और अपनी शक्ति का इस्तेमाल बड़े लक्ष्यों के लिए करना चाहिए। दूसरों को खत्म करके अपनी सर्वोच्चता बनाए रखने की कोशिश आखिरकार असफल होती है। अमेरिका, चीन और भविष्य में भारत को भी शक्ति संतुलन में बदलाव की इस सच्चाई को स्वीकार करना होगा, बिना जीत-हार की सोच में फंसे।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

आसमान पर 'पारा', बरस रही आग

● भीषण गर्मी से हाल बेहाल, अब तो जीना हुआ मुहाल ● दुनिया के 100 सबसे गर्म शहरों में सभी भारत के

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश और बिहार समेत पूरे उत्तर भारत में इस समय भीषण गर्मी का कहर जारी है। आसमान से आग बरस रही है और तापमान अब 46 के पार पहुंच गया है। हालात यह हैं कि मंगलवार को दुनिया के 100 सबसे गर्म शहरों में सभी भारत के हैं। ग्लोबल टेम्परेचर रैंकिंग्स में यह जानकारी सामने आई है। इस रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया के टॉप 100 सबसे गर्म शहरों की सूची में सभी के सभी शहर भारत के दर्ज किए गए हैं, यानी इस समय दुनिया में भारत से ज्यादा गर्म कोई और देश नहीं है।

लिस्ट में देश के कई बड़े शहर शामिल हैं। दिल्ली, गुड़गांव, फरीदाबाद, चंडीगढ़, आगरा और वाराणसी जैसे बड़े शहरों में दोपहर होते ही पारा रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है। वहीं सूची में सबसे ऊपर उत्तर प्रदेश के तीन जिलों ने जगह बनाई है। मंगलवार को औरैया, बांदा और इटावा दुनिया के सबसे गर्म स्थान रहे, जहां दोपहर में तापमान 46 के पार पहुंच गया।

अभी और बढ़ेगा पारा

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने 19 मई को आने वाले दिनों में मौसम को लेकर बड़ी चेतावनी जारी है। मौसम विभाग के मुताबिक, अगले कुछ दिनों में उत्तर-पश्चिम भारत के कई हिस्सों में अधिकतम तापमान में 2-3 डिग्री की और बढ़ोतरी हो सकती है। आईएमडी के मुताबिक राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, मध्य प्रदेश और विदर्भ में यह पूरा हफ्ता भीषण लू की चपेट में रहेगा। वहीं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 19 से 24 मई तक और पूर्वी उत्तर प्रदेश में 20 मई तक लू का कहर जारी रहेगा। इससे पहले आईएमडी ने सोमवार को कहा था कि इस सप्ताह उत्तर-पश्चिम और मध्य भारत के मैदानी इलाकों में लू से लेकर भीषण लू की स्थिति बने रहने की आशंका है। लू को लेकर जारी अपने विशेष बुलेटिन में विभाग ने कई जानकारी दी है।

पेट्रोल-डीजल के दाम 90 पैसे बढ़े

● 4 दिन पहले 3-3 रू बढ़ाए थे, 15 राज्यों में पेट्रोल 100 रू लीटर पार, डीजल 17 में 90 रू से ऊपर

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में पेट्रोल और डीजल 19 मई से औसतन 90 पैसे प्रति लीटर और महंगा हो गया है। इससे पहले 15 मई, शुक्रवार को ही पेट्रोल-डीजल की कीमतों में 3-3 रुपए प्रति लीटर की बढ़ोतरी की गई थी। यानी पांच दिन के भीतर में यह दूसरी बढ़ोतरी है। देश के 15 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में पेट्रोल 100 रुपए लीटर के ऊपर बिक रहा है। वहीं 17 में डीजल का दाम 90 रुपए लीटर से ज्यादा है।

शरद की सुबह

आओ बैठो बात करेंगे
हर मंज़र वीराने की
तुमको इतनी जल्दी क्या है
अपना दर्द सुनाने की
पहले ये बतलाओ तुमने
खुद कितने घर फूँके हैं
फिर समझाना सारी बातें
अपना घर जल जाने की
तुमने ही तो मासूमों को
खुद हथियार थमाए थे
अब क्यों तुमको चिंता इतनी
उनकी अर्थी आने की
अब अपनों का खून बहा तो
क्यों रोते चिल्लाते हो
तुमने ही आदत डाली थी
सबका खून बहाने की
तुम ही रक्खो जन्नत,
हूरें हमको अपना देश भला
हम काफ़िर हैं, हमको
आदत है यूँ ही मर जाने की।

– समीक्षा सिंह

तबादला नीति 2026 को आज मिलेगी मंजूरी

मोहन यादव कैबिनेट बैठक में तबादलों की लिमिट और अवधि पर होगी चर्चा

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश सरकार की वर्ष 2026 की नई तबादला नीति को बुधवार को डॉ. मोहन यादव कैबिनेट मंजूरी देगी। इसका ड्राफ्ट सामान्य प्रशासन विभाग ने तैयार कर लिया है और मुख्यमंत्री सचिवालय को भेज दिया गया है।

ड्राफ्ट के प्रस्तावों पर मुख्यमंत्री और मुख्य सचिव के बीच चर्चा के बाद इसे कैबिनेट में लाने के लिए प्रस्तावित किया जाएगा। मंत्रियों की सहमति मिलने के बाद इसे स्वीकृति दी जाएगी। इसके बाद सामान्य प्रशासन विभाग आदेश जारी करेगा। इस तबादला नीति में स्वैच्छिक और प्रशासनिक तबादलों की लिमिट अलग-अलग रखी जा सकती है।

स्वैच्छिक तबादलों की लिमिट नहीं रखने का आग्रह

इससे पहले 11 मई को हुई कैबिनेट बैठक के दौरान मंत्री विजय शाह ने स्वैच्छिक तबादलों की लिमिट न रखने का आग्रह मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से किया था। इस पर सीएम ने विचार करने की बात कही थी। साथ ही अगली कैबिनेट बैठक में तबादला नीति का प्रस्ताव रखने के निर्देश अधिकारियों को दिए थे।

मुख्यमंत्री यादव ने बस्तर में आयोजित मध्य क्षेत्रीय परिषद की बैठक में अमित शाह का स्वागत किया

शाह बोले- बस्तर के हर आदिवासी को गाय-भैंस देंगे, कहा- डेयरी नेटवर्क बनेगा, नक्सल खात्मे का टारगेट पूरा, कांग्रेस सरकार ने मदद नहीं की

जगदलपुर (नप्र)। छत्तीसगढ़ के बस्तर में पहली बार मध्य क्षेत्रीय परिषद की 26वीं बैठक हुई। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि 31 मार्च 2026 से पहले नक्सलवाद के खात्मे का टारगेट हासिल कर लिया गया। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता में मंगलवार को बस्तर (छत्तीसगढ़) में मध्य क्षेत्रीय परिषद् की 26वीं बैठक में शामिल हुए। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का बस्तर (छत्तीसगढ़) में आयोजित मध्य क्षेत्रीय परिषद की बैठक में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने पुष्प-गुच्छ भेंट कर स्वागत किया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जगदलपुर में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से भेंट कर भगवान महाकाल मन्दिर का चित्र भेंट किया। शाह ने कहा कि छत्तीसगढ़ की कांग्रेस (भूपेश) सरकार से उन्हें नक्सल उन्मूलन में सहयोग नहीं मिला। बस्तर के नक्सल मुक्त होने के बाद 70 कैंपों में से लगभग एक-तिहाई कैंपों को 'वीर शहीद गुंडाधर सेवा डेरा' के रूप में विकसित किया जाएगा। गृहमंत्री ने आगे कहा कि हर आदिवासी महिला को पशुपालन से जोड़ने की योजना है। बस्तर के हर आदिवासी नागरिक को एक गाय और एक भैंस देंगे। 6 महीने में बस्तर में बड़ा डेयरी नेटवर्क बनेगा।

बैठक में 4 राज्यों के मुख्यमंत्री शामिल हुए– केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में जगदलपुर में हुई इस बैठक में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी शामिल हुए। बैठक में राज्यों के विकास के साथ-साथ गंभीर सामाजिक और सुरक्षा मुद्दों पर कड़े फैसले लिए गए हैं। बैठक में चारों राज्यों में अपराध नियंत्रण, विशेषकर महिलाओं के उत्पीड़न और रेप जैसे मामलों पर जल्द फैसले लेने पर चर्चा की गई।

परंपरा, विज्ञान और कॉर्पोरेट का अनोखा संगम

भोपाल में 'सदानीरा समागम' के जरिए जल संरक्षण को जन आंदोलन बनाने की तैयारी

भोपाल। मध्य प्रदेश में जल संरक्षण को जनआंदोलन बनाने के उद्देश्य से चल रहे 'जल गंगा संवर्धन अभियान' के तहत अब तक 1.77 लाख से अधिक कार्य पूरे किए जा चुके हैं। इसी कड़ी में उज्जैन में शिप्रा तीर्थ परिक्रमा और भोपाल में सदानीरा समागम जैसे सांस्कृतिक व राष्ट्रीय स्तर के आयोजन किए जाएंगे, जिनमें देश-विदेश के विशेषज्ञ और कलाकार शामिल होंगे।

मुख्यमंत्री के संस्कृति सलाहकार और महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ के निदेशक एवं वीर भारत न्यास के न्यासी सचिव श्रीराम तिवारी ने मंगलवार को पत्रकार वार्ता में बताया कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्य प्रदेश जल आत्मनिर्भरता का एक नया इतिहास लिख रहा है। नदी, तालाब, जल संरचनाओं को संरक्षित व संवर्धित करने के उद्देश्य से शुरू किया गया जल गंगा संवर्धन अभियान व्यापक रूप से आम लोगों की भागीदारी से जन अभियान बन चुका है। प्रदेश में अब तक 1 लाख 77 हजार 121 जल संरक्षण संबंधी कार्यों को सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया गया है। इसी क्रम में जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा उज्जैन में 25-26 मई को शिप्रा तीर्थ परिक्रमा की जा रही है। इसमें लोक गायिका मैथिली ठाकुर सहित कई लोकप्रिय कलाकारों की प्रस्तुति होगी। इसके साथ ही वीर भारत न्यास द्वारा राजधानी भोपाल में 27 मई से 2 जून तक सदानीरा समागम का आयोजन किया जा रहा है।

शिप्रा तीर्थ परिक्रमा का ये होगा रूट– श्रीराम तिवारी ने बताया कि उज्जैन में गंगा दशमी के अवसर पर होने वाली शिप्रा तीर्थ परिक्रमा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण आयोजन है। 25 मई को शुरू होने वाली इस परिक्रमा की शुरूआत रामघाट से होकर नृसिंहघाट, कर्कराज मंदिर, वेधशाला महामृत्युंजय द्वार, प्रशांतिधाम, शनि मंदिर से दत्तअखाड़ा घाट पहुंचेगी। यात्रा रात्रि विश्राम के बाद गंगा दशमी पर यह परिक्रमा विभिन्न स्थानों रणजीत हनुमान मंदिर, भैरवगढ़ सिद्धवट, मंगलनाथ, सांदीपनि आश्रम गढ़कालिका, गोपाल मंदिर से होत हुए रामघाट पर पहुंचेगी।

मुख्यमंत्री 300 फीट चुनरी माँ शिप्रा को करेंगे अर्पित– श्रीराम तिवारी ने बताया कि शिप्रा तीर्थ परिक्रमा के श्रद्धालुओं की उपस्थिति में मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा 300 फीट की चुनरी माँ शिप्रा को अर्पित की जायेगी।

आकर्षण का केन्द्र होगी भारतीय नौसेना बैंड की प्रस्तुति– उन्होंने बताया कि उज्जैन में 25-26 मई की तिथियों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पंडित ढोली बुवा द्वारा नारद कथा गायन परंपरा पर हरिकथा 17 मई से प्रतिदिन सायं 7:30 रामघाट पर प्रारंभ हो चुकी है। इसके साथ ही दत्तअखाड़ा घाट पर भजन संध्या में श्रेयश शुक्ला एवं साथी, इंदौर तथा जबलपुर की लोक गायिका संजो बघेल एवं साथियों की प्रस्तुति होगी। इसी क्रम में 26 मई को भारतीय नौसेना का बैंड की प्रस्तुति तथा मुंबई के केशवम् बैंड की भजन जैमिंग एवं सुप्रसिद्ध लोक गायिका मैथिली ठाकुर एवं साथियों द्वारा भजनों की प्रस्तुति दी जायेगी।

भोपाल में होगा सदानीरा समागम– श्रीराम तिवारी ने बताया कि भारत भवन में 27 मई से 2 जून 2026 तक आयोजित होने जा रहे सदानीरा समागम के माध्यम से जल संरक्षण, भारतीय संस्कृति और पंचमहाभूतों पर केंद्रित राष्ट्रीय विमर्श का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस सात दिवसीय समागम में देश-विदेश के विद्वान, वैज्ञानिक, कलाकार, पर्यावरणविद् और नीति-निर्माता सहभागी होंगे। यह पहली बार हो रहा है जिसमें इसरो, जेके ट्रस्ट, एचयूएल फाउंडेशन, जेके सीमेंट, जेएसडब्ल्यू, टाटा ट्रस्ट, एमडीएल, आईजीआरएमएस, हीरो फ्यूचर एनर्जीस, ओएनजीसी, हिन्दुस्तान पावर, वेदांता ग्रुप, टाटा संस जैसे बड़ी कंपनियों के प्रतिनिधि जल संरक्षण और संवर्धन को लेकर एक मंच पर आ रहे हो। समारोह में फिजी, त्रिनिदाद एवं टोबैगो, वेनेजुएला, मैक्सिको, सूरीनाम, इक्वाडोर, साइप्रस और नेपाल सहित अनेक देशों के राजनयिक प्रतिनिधियों की सहभागिता इसे अंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करेगी।

मुख्य अतिथि होंगे मुख्यमंत्री– उन्होंने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ 27 मई को सायं 7 बजे मुख्यमंत्री डॉ. यादव के मुख्य आतिथ्य में होगा। इस अवसर पर इसरो हैदराबाद के भू-विज्ञान समूह के समूह निदेशक डॉ. ईश्वर चंद्र दास विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति, पर्यटन एवं धार्मिक न्यास राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) धर्मेन्द्र सिंह लोधी करेंगे।

प्रवाह फिल्म समारोह

28 मई ये 2 जून तक जल एकाग्र डाक्यूगड्रामा फिल्मों का प्रदर्शन भारत भवन के अभिरंग में होने जा रहा है। जिसमें जल केन्द्रित हिन्दीस और अंग्रेजी भाषाओं में 15-15 फिल्मों का प्रदर्शन होगा। जिसमें जल संकट, गंगा नदी, जल डाकू, जब हर एक बूंद मायने रखती है, खतरे में नदियां, आखिरी बूंद जैसे प्रमुख है।

जल केन्द्रित पर चार प्रदर्शनियां

सदानीरा समागम अंतर्गत जल-केंद्रित 4 प्रदर्शनियाँ संयोजित की जा रही है। जिसमें लघु चित्रों में जल, भूगर्भीय जल स्त्रोत, मध्य प्रदेश में जलगंगा संवर्धन अभियान, जलचर जलीय जीवन के प्राणतत्व शामिल है। जिसमें मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, बरकतुल्ला विश्वविद्यालय एवं क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय, भोपाल सहयोगी है।

इन पुस्तकों का होगा लोकार्पण

1. अंतर्जली यात्रा वीर भारत न्यास, मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् 2. पुरोवाक् - वीर भारत न्यास 3. आत्मा की घाटी में पानी का संगीत- प्रेमशंकर शुक्ल 4. युगयुगीन जल- दिनेश पाठक 5. जल, संस्कृति और स्थापत्य- राजेश्वर त्रिवेदी 6. लोक तीर्थ माहात्म्य - डॉ. प्रदीप जिलवाने

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 20 मई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

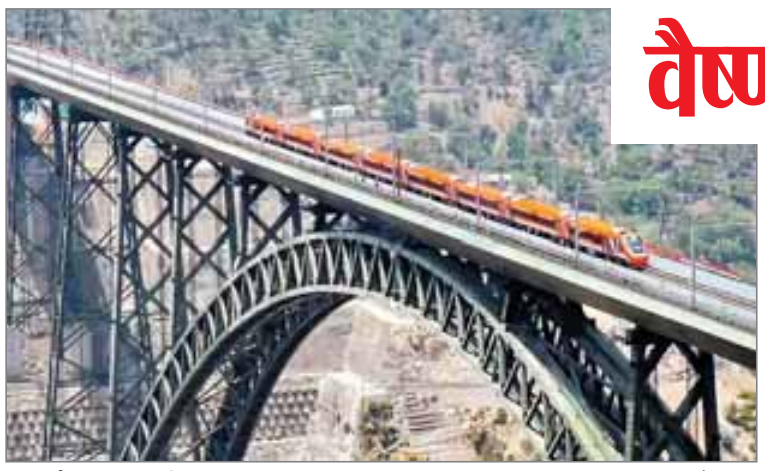

वैष्णो देवी कटड़ा रेल रूट को अभेद्य बनाने की तैयारी

2193 करोड़ रूपए के तीन बड़े प्रोजेक्ट को रेलवे की मंजूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय रेलवे ने देश के रेल नेटवर्क को और मजबूत, सुरक्षित और रफ्तार देने के लिए 2193 करोड़ रुपये के तीन बड़े प्रोजेक्ट को हरी झंडी दी है। रेल मंत्रालय की ओर से मंगलवार को दी गई जानकारी के अनुसार, इन प्रोजेक्ट का उद्देश्य जम्मू-श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा रूट पर सुरक्षा बढ़ाना, व्यस्त हावड़ा-दिल्ली कॉरिडोर की क्षमता का विस्तार करना और चेन्नई के सबअर्बन नेटवर्क में भीड़भाड़ को कम करना है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि कटड़ा सेक्शन पर होने वाले काम देश के सबसे चुनौतीपूर्ण इलाकों में सुरक्षित और विश्वसनीय कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने की सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। वहीं, अन्य दो प्रोजेक्ट्स से यात्री और मालगाड़ियों दोनों के संचालन में सुधार होगा।

● **कटरा सेक्शन के लिए 238 करोड़ रुपये का सुरक्षा पैकेज-** जम्मू-श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा रेल खंड पर भूस्खलन, टनल पुनर्वास, टनल से पानी के रिसाव को रोकने और संवेदनशील स्थानों पर पुलों की सुरक्षा सुनिश्चित करना। यह इसलिए क्योंकि कठिन भौगोलिक परिस्थितियों और खराब मौसम के कारण इस रूट पर परिचालन में कई चुनौतियां आती हैं। हर साल लाखों तीर्थयात्री इस मार्ग से वैष्णो देवी जाते हैं, इसलिए उनकी सुरक्षा के लिए यह प्रोजेक्ट बेहद अहम है।

962 करोड़ में क्यूल-झाझा तीसरी लाइन

हावड़ा-दिल्ली कॉरिडोर की क्षमता का विस्तार करने के उद्देश्य से इस 54 किलोमीटर लंबी तीसरी लाइन को बनाया जाएगा। फिलहाल क्यूल और झाझा के बीच की डबल लाइन अपनी क्षमता से अधिक पर काम कर रही है। इस तीसरी लाइन के बनने से ट्रेनों की लेटलतीफी कम होगी और मालगाड़ियों के संचालन में आसानी होगी। यह रूट कोलकाता/हल्दिया बंदरगाहों और नेपाल को जोड़ने के साथ-साथ कई थर्मल पावर प्लांट के लिए है।

संक्षिप्त समाचार

ट्रम्प-नेतन्याहू की हत्या करने वाले को ईनाम देगा ईरान

● 500 करोड़ देने का ऐलान, संसद में बिल लाने की तैयारी

तेहरान (एजेंसी)। ईरान की संसद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की हत्या करने वालों को 500 करोड़ से ज्यादा इनाम देने वाला बिल ला सकती है। द टेलीग्राफ की रिपोर्ट के मुताबिक, ईरानी संसद का राष्ट्रीय सुरक्षा आयोग इस बिल की तैयारी कर रहा है। आयोग के प्रमुख इब्राहिम अजीजी ने कहा कि 'इस्लामिक रिपब्लिक की सैन्य और सुरक्षा बलों की जवाबी कार्रवाई' नाम से बिल तैयार किया जा रहा है। ईरानी सांसद महमूद नबावियन ने कहा कि संसद जल्द इस बिल पर वोटिंग कर सकती है, जो ट्रम्प और नेतन्याहू को जहन्नुम पहुंचाने वालों को इनाम देगा। रिपोर्ट में कहा गया है कि ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई समेत कई सैन्य और राजनीतिक नेताओं की मौत के बाद यह कदम उठाया जा रहा है। इस बीच ट्रम्प ने कहा है कि उन्होंने ईरान पर मंगलवार को होने वाला हमला फिलहाल टाल दिया है।

होर्मुज में बढ़ा संकट, 1500 कारोबारी जहाज फंसे- ईरान तनाव और समुद्री नाकेबंदी के बीच स्ट्रेट ऑफ होर्मुज में करीब 1,500 कारोबारी जहाज फंसे हुए हैं। इन पर 20 हजार से ज्यादा नाविक मौजूद हैं। एक्सपर्ट्स ने मिसाइल और ड्रोन हमलों का खतरा बताया है। सऊदी अरब ने दावा किया कि उसके एयर डिफेंस सिस्टम ने इराक की दिशा से आए 3 ड्रोन मार गिराए। कुवैत और कतर ने इसे सऊदी संप्रभुता और क्षेत्रीय सुरक्षा पर हमला बताया।

'वन नेशन, वन इलेक्शन' की टीम गुजरात पहुंची

● प्रियंका गांधी समेत 39 सदस्य सभी पार्टियों के नेताओं से करेंगे मुलाकात

गांधीनगर (एजेंसी)। वन नेशन-वन इलेक्शन के मुद्दे पर गठित संयुक्त संसदीय समिति ने विभिन्न राज्यों का दौरा कर राजनीतिक दलों और अधिकारियों से परामर्श शुरू कर दिया है। प्रियंका गांधी, संबित पात्रा और बांसुरी स्वराज समेत समिति के 39 सदस्य आज से तीन दिनों के लिए गुजरात पहुंचे हैं। जेपीसी सदस्य मंगलवार की शाम गुजरात सीएम भूपेंद्र पटेल और राज्य के शीर्ष अधिकारियों से मुलाकात कर उनके विचार जानेंगे। समिति की पहली प्रेस कॉन्फ्रेंस शाम 5.30 बजे गांधीनगर की गिफ्ट सिटी में हुई। वहीं, समिति ने समिति ने 20 मई 2026 को सभी राजनीतिक दलों को अपने विचार रखने के लिए गांधीनगर बुलाया है। इस मुद्दे पर भाजपा के मुख्य प्रवक्ता अनिल पटेल ने कहा- गुजरात भाजपा एक राष्ट्र-एक चुनाव का पूरी तरह से समर्थन करती है। वहीं कांग्रेस प्रवक्ता मनीष दोषी ने कहा- कांग्रेस इस मुद्दे पर अपने विचार रखेगी।

पिछले साल महाराष्ट्र और उत्तराखंड का दौरा कर चुकी जेपीसी

जेपीसी ने 17-18 मई 2025 को महाराष्ट्र दौरा किया। वहां मुख्यमंत्री, राजनीतिक दलों, प्रशासनिक अधिकारियों, बैंकों, सार्वजनिक उपक्रमों और रेगुलेटरी संस्थाओं से बातचीत की गई। समिति का मकसद यह समझना था कि एक साथ चुनाव कराने से फायदा होगा।

रूस से कच्चा तेल खरीदता रहेगा भारत

● सरकार बोली-अमेरिकी प्रतिबंध बेअसर ● फंसे जहाजों से तेल खरीदने की है छूट

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका की तरफ से मिलने वाली प्रतिबंधों की छूट खत्म होने के बाद भी भारत रूस से कच्चा तेल खरीदना जारी रखेगा। पेट्रोलियम मंत्रालय की जॉइंट सेक्रेटरी सुजाता शर्मा ने कहा कि अमेरिकी प्रतिबंधों से हमारे इम्पोर्ट प्लान पर कोई असर नहीं पड़ेगा। इस बीच वैश्विक सप्लाई संकट को देखते हुए अमेरिकी ट्रेजरी विभाग ने समुद्र में फंसे रूसी तेल के जहाजों से तेल खरीदने के लिए 30 दिनों का अस्थायी लाइसेंस जारी कर दिया। अमेरिकी ट्रेजरी मंत्री स्कॉट बेसेंट ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर इसकी जानकारी दी। बेसेंट के मुताबिक इससे अतिरिक्त लचीलापन मिलेगा। यह सामान्य लाइसेंस कच्चे तेल के बाजार को स्थिर करने और ऊर्जा की दृष्टि से संवेदनशील देशों तक तेल की पहुंच सुनिश्चित करने में सहायक होगा।

घरेलू बाजार में महंगाई रोकने के लिए सप्लाई जरूरी

ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय अधिकारियों ने अमेरिकी प्रशासन को स्पष्ट कर दिया था कि ग्लोबल मार्केट में उतार-चढ़ाव के बीच देश की तेल सप्लाई बनाए रखना सरकार की सबसे पहली प्राथमिकता है। अधिकारियों ने चेतावनी भी दी थी कि अगर तेल की सप्लाई में कोई रुकावट आती है, तो इसका सीधा असर भारतीय उपभोक्ताओं पर पड़ेगा। इससे देश में डोमेस्टिक कुकिंग गैस जैसी जरूरी चीजों की किल्लत और महंगाई बढ़ सकती है। हालांकि, इस पूरे मामले पर भारत के तेल मंत्रालय, विदेश मंत्रालय और अमेरिकी ट्रेजरी विभाग की तरफ से कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं आई थी।

मई में रूस से तेल आयात रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचा- अमेरिकी छूट की डेडलाइन खत्म होने से पहले भारतीय रिफाइनरी कंपनियों ने रूस से कच्चे तेल की खरीद काफी तेज कर दी है। डेटा इंटेलिजेंस एजेंसी केपलर के आंकड़ों के मुताबिक, मई महीने में अब तक भारत का रूसी तेल आयात रिकॉर्ड 23 लाख बैरल प्रति दिन के स्तर पर पहुंच गया है, जो अब तक का सबसे ऊंचा आंकड़ा है। विश्लेषकों का अनुमान है कि पूरे मई महीने का औसत आयात भी करीब 19 लाख बैरल प्रति दिन के आसपास रहने वाला है। पिछले साल नवंबर में यूक्रेन के साथ जंग के चलते ट्रम्प प्रशासन ने रूसी तेल कंपनियों लुकोइल और रोजनेफ्ट पर कड़े प्रतिबंध लगाए थे। इसके बाद जनवरी में भारत का रूसी तेल आयात गिरकर 11 लाख बैरल प्रति दिन रह गया था, जो नवंबर 2022 के बाद सबसे कम था। हालांकि, फरवरी में यह हिस्सेदारी फिर से बढ़कर 30 फीसदी तक पहुंच गई है।

बंगाल में वोटिंग से पहले ही झुक गया 'पुष्पा'

● फालता विधानसभा चुनाव से टीएमसी कैंडीडेट जहांगीर खान का किनारा ● ईवीएम पर भाजपा के सिंबल पर टेप लगा मिला था, यहां 21 मई को वोटिंग

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की फालता विधानसभा सीट पर वोटिंग से दो दिन पहले तृणमूल कांग्रेस उम्मीदवार जहांगीर खान ने चुनाव नहीं लड़ने का ऐलान किया है। जहांगीर ने मंगलवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इसकी घोषणा की। हालांकि 21 मई को वोटिंग वाले दिन ईवीएम पर जहांगीर का नाम और सिंबल रहेगा। जहांगीर ने बंगाल के नए मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी की तारीफ करते हुए कहा-मैं फालता का बेटा हूं।

टीएमसी बोली-

जहांगीर का नाम वापस लेना उनका निजी फैसला- टीएमसी ने पूरे मामले पर कहा है कि जहांगीर खान का चुनाव से हटने का फैसला उनका निजी है, यह पार्टी का फैसला नहीं है। पार्टी ने एक्स पर बयान जारी कर लिखा- 4 मई को चुनाव नतीजे आने के बाद फालता सीट पर हमारे 100 से ज्यादा कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया। भारी दबाव के बावजूद हमारे कार्यकर्ता भाजपा की डराने की राजनीति का मुकाबला कर रहे हैं।

'सुप्रीम' आदेश, खतरनाक कुत्तों को मौत का इंजेक्शन दें

● लोगों की सुरक्षा जरूरी, जो अफसर निर्देश न माने उस पर कार्यवाही

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि खतरनाक या रेबीज से संक्रमित आवारा कुत्तों को इंजेक्शन लगाकर मारा जा सकता है, लोगों की जान की हिफाजत जरूरी है और गरिमा के साथ जीने में कुत्तों के खतरे से मुक्त होकर रहने का अधिकार भी शामिल है। मंगलवार को दिए गए इस मामले पर आखिरी फैसले के साथ ही कोर्ट ने सार्वजनिक जगहों से आवारा कुत्तों को हटाने के आदेश के खिलाफ दाखिल सभी याचिकाएं खारिज कर दी। कोर्ट ने कहा कि आवारा कुत्तों के पुनर्वास और नसबंदी पर नवंबर 2025 में दिए गए निर्देश ही लागू होंगे।

मंगलवार के आदेश की 8 अहम बातें

राज्य सरकारें पशु कल्याण बोर्ड के नियमों को मजबूत करें और सही तरीके से लागू करें। हर जिले में पूरी तरह काम करने वाला एक सेंटर (एनिमल बर्थ कंट्रोल सेंटर) बनाया जाए। जहां आवारा कुत्तों की आबादी ज्यादा है, वहां जरूरत के हिसाब से सेंटरों की संख्या बढ़ाई जाए। जनता की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए दूसरे सार्वजनिक स्थानों पर भी ये नियम लागू करने पर फैसला लिया जाए और उसे तय समय में लागू किया जाए। एंटी-रेबीज दवाओं की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। नेशनल हाईवे पर आवारा पशुओं की समस्या से निपटने के लिए जरूरी कदम उठाए।

15 दिन में 50 बार घर में लगी आग

परिवार ने ठिकाना बदला तो वहां भी अग्नि से सामना, पुलिस के सामने भी घटी रहस्यमयी घटना

अशोकनगर (नप्र)। मध्यप्रदेश के अशोकनगर जिले में एक हैरत में डाल देने वाला मामला सामने आया है, जहां एक घर में 15 दिनों के अंदर 50 बार आगजनी की घटना हो गई। घटना की सूचना मिलते ही प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची। जांच के दौरान हैरान करने वाले तथ्य सामने आए हैं।

घर में 50 बार अलग-अलग जगहों पर लग चुकी है आग- दरअसल, अशोकनगर जिले के मुंगावली ब्लॉक के बाढ़ोली गांव में रहने वाले राजेश राजपूत के घर में अब तक 50 बार अलग-अलग जगहों पर आग लग चुकी है। 15 दिनों से आग लगने का यह सिलसिला लगातार जारी है, लेकिन कारण अब तक अज्ञात है। घर में लग रही इस रहस्यमयी आग में परिवार का अधिकांश सामान जलकर खाक हो चुका है। परिवार के सदस्यों ने जब इसे देवी प्रकोप मानकर घर में झाड़ू फूंक करवाई। उसके बाद आगजनी की घटना का सिलसिला और ज्यादा बढ़ गया है। अब परिवार के सदस्य खौफ और डर के माहौल में जी रहे हैं। हालात यह है कि परिवार के सदस्यों ने मंदिर में सहारा लिया है।

बिना बिजली सुलग उठे उपकरण

आगजनी की घटना से न केवल घर की छत, बच्चों के कपड़े, खिलौने, बिस्तर, राशन आदि जलकर खाक हो गई है बल्कि जहां शॉर्ट सर्किट एवं बिजली का अंदेशा भी नहीं है। वहां भी आग लगी जैसे घर की मिक्सी, मोटर और ट्रैक्टर में भी घटना हुई लेकिन परिवार के सदस्यों की सतर्कता से तुरंत उसे पर काबू पा लिया गया।

15 दिन से परेशान है परिवार

- 15 दिन में 50 बार घर के अलग-अलग हिस्सों में लगी आग
- दूसरे घर में शिफ्ट होने पर वहां भी लगी
- प्रशासन की टीम निरीक्षण करने आई तो उनके सामने भी आग लगी
- बिना बिजली के भी घर में हो रही है शॉर्ट सर्किट

प्रशासन से लेकर ग्रामीण तक हैरत

इस खौफनाक मंजर के बीच जब महिलाओं और बच्चों को गांव के ही दूसरे मकान में शिफ्ट किया गया तो आग ने वहां भी पीछा नहीं छोड़ा। देखते ही देखते दूसरे मकान में भी लपटें उठने लगीं। इस घटना से न केवल परिवार के सदस्य खौफ में है बल्कि ग्रामीण और प्रशासन भी हैरत में पड़ा हुआ है। घटना की सूचना लगते ही मौके पर पहुंचे एसडीम इसरार खान और थाना प्रभारी भारी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी ली। प्रशासन की टीम के सामने भी अचानक आग सुलग गई तो वे लोग हैरत में पड़ गए।

सितंबर में फिर भारत आएंगे रूसी राष्ट्रपति पुतिन

● ब्रिक्स समिट में हिस्सा लेंगे, 10 महीने में दूसरा दौरा, मोदी भी इस साल रूस जाएंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन इसी साल सितंबर में भारत आएंगे। रूसी सरकार ने मंगलवार को कहा कि पुतिन 12 और 13 सितंबर को नई दिल्ली में होने वाले ब्रिक्स समिट में हिस्सा लेंगे। पीएम मोदी ने पुतिन को दिसंबर 2025 में उनके भारत दौरे के दौरान आधिकारिक तौर पर समिट में शामिल होने का न्योता दिया था। एक साल के भीतर पुतिन का यह दूसरा भारत दौरा होगा।

पीएम मोदी भी इसी साल रूस दौरे पर जाएंगे। इससे पहले पुतिन दिसंबर 2025 में भारत आए थे। उस दौरान उन्होंने पीएम मोदी के साथ 23वें भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन में हिस्सा लिया था। 2025 का दौरा इसलिए भी खास माना गया था, क्योंकि यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद यह पुतिन का पहला भारत दौरा था। इससे पहले वह आखिरी बार 2021 में नई दिल्ली आए थे।

● **ब्रिक्स समिट की अध्यक्षता कर रहा है भारत-** इस साल भारत ब्रिक्स की अध्यक्षता कर रहा है। ब्रिक्स दुनिया की बड़ी उभरती अर्थव्यवस्थाओं का समूह है, जिसमें भारत, रूस, चीन, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका के अलावा अब मिस्र, ईरान, इथियोपिया, यूएई और इंडोनेशिया जैसे नए सदस्य भी शामिल हो चुके हैं। भारत की अध्यक्षता के दौरान पूरे साल देश के अलग-अलग शहरों में कई बैठकें, मंत्रीस्तरीय सम्मेलन और कार्यकारी समूहों की चर्चाएं आयोजित की जा रही हैं। भारत ने अपनी अध्यक्षता का फोकस 'ग्लोबल साउथ' यानी विकासशील देशों की आवाज को मजबूत करने, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, आर्थिक सहयोग, ऊर्जा सुरक्षा, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर, आतंकवाद विरोधी सहयोग और सप्लाई चेन को मजबूत करने पर रखा है।

पीएम मोदी भी इसी साल रूस जाएंगे

इससे पहले भारत दौरे पर आए रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने 15 मई को कहा था कि वे पीएम मोदी की रूस यात्रा की तैयारी कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि मोदी ने रूस आने की पुष्टि कर दी है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच रक्षा, ऊर्जा, व्यापार और कई अन्य क्षेत्रों में मजबूत सहयोग जारी है और रूस चाहता है कि यह साझेदारी आगे भी तेजी से मजबूत होती रहे। उनके बयान से माना जा रहा है कि मोदी इस साल भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए रूस जा सकते हैं। हालांकि अभी तक यात्रा की आधिकारिक तारीख या कार्यक्रम का औपचारिक ऐलान नहीं हुआ है। भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन ज्यादातर ठंड में होते हैं।

राहुल बोले- कॉम्प्रोमाइज्ड पीएम सवालों से भागते दिखे

● जब छिपाने को कुछ नहीं तो डर क्यों, मोदी ने नॉर्वे में पत्रकार को जवाब नहीं दिया था

नई दिल्ली (एजेंसी)। राहुल गांधी ने मंगलवार को नॉर्वे में एक महिला जर्नलिस्ट हेली लिंग के सवाल को टालने पर पीएम मोदी की आलोचना की। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा, जब दुनिया एक कॉम्प्रोमाइज्ड पीएम को कुछ सवालों से घबराकर भागते हुए देखती है, तो भारत की छवि पर क्या असर पड़ता है। जब छिपाने के लिए कुछ नहीं है तो डरने की भी कोई बात नहीं है। राहुल ने हेली की एक्स पोस्ट शेयर करते हुए यह लिखा। दरअसल, पीएम मोदी ने सोमवार को नॉर्वे के प्रधानमंत्री जोनास गार स्टोरे के साथ जॉइंट प्रेस मीट की थी, लेकिन मीडिया के सवाल नहीं लिए। मोदी नॉर्वे के 2 दिन के दौरे पर हैं। दौरा शाम को खत्म हो गया है। जॉइंट प्रेस मीट के बाद मोदी और जोनास गार जाने लगे तब हेली लिंग ने पूछा, पीएम मोदी आप दुनिया की सबसे आजाद प्रेस के कुछ सवालों के जवाब क्यों नहीं देते।

तकनीकी आधारित जनजाति विकास की अवधारणा पर कार्यशाला का शुभारंभ

विकास प्रक्रिया में जनजातीय समाज को शामिल करने प्रधानमंत्री मोदी ने बनाई नीतियां : मंत्री डॉ. शाह

भोपाल (नप्र)। जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जनजातीय समाज की पीड़ा को समझा और विकास प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी नीतियां बनायी हैं। प्रधानमंत्री जनमन योजना एवं धरती आबा ग्राम उत्कर्ष जैसी पहल से जनजातीय समाज के उत्थान के लिए ठोस कार्य हो रहे हैं। वे मंगलवार को भोपाल के आदि भवन में जनजातीय गरिमा उत्सव के तहत तकनीकी आधारित सतत् जनजाति विकास अवधारणा पर आयोजित कार्यशाला के शुभारंभ सत्र को संबोधित कर रहे थे। कार्यशाला में प्रमुख सचिव श्री गुलशन बामरा, आयुक्त डॉ. सतेंद्र सिंह सहित प्रदेश से आए विभाग के मैदानी अधिकारी उपस्थित थे। भगवान बिरसा मुंडा के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यशाला का शुभारंभ किया।

मंत्री डॉ. शाह ने कहा कि वे वर्ष 1990 से लगातार जनजातीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। जनजातीय समाज के साथ लगातार कार्य किया है। विभागीय अधिकारी भी सतत् रूप से गांवों में और वनवासी अंचल के बीच जाएं और उनके जीवन को नजदीक से देखें। साथ ही प्रत्यक्ष अनुभव से जो परिस्थितियां सामने आती है उसे समझें और उसके अनुरूप कार्य करें। मंत्री डॉ. शाह ने कहा कि जनजाति वर्ग के लिए शासन द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं को उनके द्वार तक पहुँचाने के लिए जन

भागीदारी - सबसे दूर, सबसे पहले अभियान संचालित किया जा रहा है। इस अभियान में शिविरों के माध्यम से 18 विभागों की 25 योजनाओं का लाभ जनजाति वर्ग के ग्रामीणों को दिलाया जाएगा।

मंत्री डॉ. शाह ने बताया कि किस तरह से वनवासी अंचल में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में उल्लेखनीय कार्य हो रहे हैं। उन्होंने बताया कि सन 1990 के दशक से लेकर अब तक स्थितियां बदल गयी है। आज जनजातीय समाज, विकास की मुख्यधारा में शामिल हैं। मंत्री डॉ. शाह ने बताया कि वे अपने विधानसभा क्षेत्र में आंगनवाड़ी केंद्रों में 50 हजार पानी की बॉटल वितरित कर रहे हैं। साथ ही पहली से कक्षा बारहवीं कक्षा तक के 45 हज़ार बच्चों को पेयजल के लिए पानी की बॉटल प्रदान की हैं। अपने विधानसभा क्षेत्र की 150 ग्राम पंचायतों में वॉटर कूलर और आरओ लगाया हैं। इससे हर गाँव, हर स्कूल में शुद्ध पेयजल सुलभ होगा। उन्होंने कहा कि जनजाति अंचल की बच्चियां शहर के कॉलेज जाने में हिचकिचाती हैं और सुविधाओं के अभाव में उच्च शिक्षा छोड़ भी देती है। ऐसी परिस्थितियों में उन्होंने प्रायोगिक तौर पर अपने क्षेत्र में 4 बसें संचालित की, जिससे कॉलेज जाने वाली बालिकाओं की संख्या 30 प्रतिशत से बढ़कर 80 प्रतिशत हो गई है। उन्होंने कहा कि इस सुविधा का अन्य क्षेत्रों में भी विस्तार होना चाहिए।

कार्यशाला में आयुक्त जनजातीय क्षेत्र विकास डॉ. सतेंद्र सिंह ने स्वागत उद्बोधन दिया। कार्यशाला में आजीविका तथा रोज़गार में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के अनुप्रयोग पर मैनिट के एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. संयम शुक्ला ने अपना उद्बोधन दिया। सतत जनजातीय विकास में जीआईएस तथा उपग्रह सुदूर संवेदन विषय पर आईआईएसईआर के एसोसियेट प्रोफेसर डॉ. कुमार गौरव ने भी संबोधित किया।

कार्यशाला के द्वितीय सत्र में जनजातीय आजीविका तथा उद्यमिता विकास विषय पर आईएएस आरएम ट्राइफेड श्रीमती प्रीति मैथिल ने संबोधित किया। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भारतीय कृषि को बदल रहा है विषय पर आईआईआईटी के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. शुभ्रज्योति देब ने संबोधित किया। साथ ही स्वास्थ्य के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग विषय पर आईआईआईटी के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. निखिल कुमार सिंह ने जानकारी दी।

मंत्री सुश्री भूरिया की अध्यक्षता में हुई महिला सशक्तिकरण योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु गठित मंत्रि-परिषद समिति की बैठक

भोपाल (नप्र)। महिला बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया की अध्यक्षता में मंगलवार को मंत्रालय में महिला सशक्तिकरण योजनाओं के क्रियान्वयन के लिये गठित मंत्रि-परिषद समिति की बैठक हुई। बैठक में पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्रीमती राधा सिंह उपस्थित थी। नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीतमी प्रतिमा बागरी बैठक में वर्चुवली शामिल हुईं। समिति द्वारा प्रमुख राज्य प्रवर्तित योजनाओं तथा महिलाओं को आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त करने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता एवं योजनाओं में अपेक्षित बदलाव पर विस्तृत चर्चा की गई।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सिंधी समाज के संत पूज्य साधराम जी के ब्रह्मलीन होने पर किया शोक व्यक्त

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सिंधी समाज के प्रमुख संत, पूज्य साधराम साहब जी के ब्रह्मलीन होने पर गहन शोक व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि संत साधराम जी ने सिंधी समाज की समृद्ध आध्यात्मिक परंपरा को नई ऊंचाइयां प्रदान कीं। मुख्यमंत्री ने ईश्वर से पूज्य साधराम जी की आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने और उनके अनुयायियों को यह दुख सहन करने की शक्ति देने की प्रार्थना की है।

मुख्यमंत्री ने उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री श्री खंडूरी के निधन पर दुख जताया

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री, मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) श्री भुवन चंद्र खंडूरी के देवलोक गमन पर गहन दुख और संवेदनाएं व्यक्त कर उन्हें श्रद्धांजलि दी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा केदारनाथ से स्व. खंडूरी की आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने और शोकाकुल परिजन को इस असीम दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

गुना नपाध्यक्ष के फर्जी दस्तखत से जिला पंचायत सीईओ और एसडीएम भी खा गए धोखा, पटवारी ने पकड़ा फ्रॉड

गुना (नप्र)। मध्य प्रदेश के गुना जिले में प्रशासनिक अधिकारियों के बाद अब जनप्रतिनिधियों के फर्जी हस्ताक्षर और नकली मुहर बनाकर सरकारी जमीन पर कब्जा करने का एक बेहद हैरान करने वाला मामला सामने आया है। डिप्टी कलेक्टर मंजूषा खत्री के बाद अब नगरपालिका अध्यक्ष सविता अरविंद गुप्ता के जाली हस्ताक्षर कर करोड़ों की शासकीय भूमि का पट्टा हासिल करने की साजिश रची गई।

इस हाई-प्रोफाइल धोखाधड़ी का खुलासा होने के बाद सोमवार को नपाध्यक्ष अपने वकील के साथ केंट थाने पहुंचीं और आरोपी के खिलाफ नामजद शिकायत दर्ज कराई।

जिला पंचायत सीईओ और एसडीएम भी खा गए धोखा

चौंकाने वाली बात यह है कि इस फर्जी अनुशंसा पत्र के आधार पर जिला पंचायत सीईओ से लेकर एसडीएम गुना तक ने फाइल को आगे बढ़ा दिया था। लेकिन जब यह फाइल पटवारी के पास पहुंची, तो उनकी पारखी नजर ने इस पूरे खेल को पकड़ लिया। दरअसल, जालसाज ने जो फर्जी सील बनवाई थी, उस पर अध्यक्ष, महानगरपालिका गुना लिखा हुआ था। चूंकि गुना में महानगरपालिका नहीं बल्कि नगरपालिका परिषद है, इसलिए महानगरपालिका शब्द पढ़ते ही पटवारी का माथा ठनका। उन्होंने तुरंत नपाध्यक्ष से संपर्क कर इसका वेरिफिकेशन किया, जिसके बाद इस महाघोटाले का पर्दाफाश हुआ। टीआई, केंट थाना, गुना के अनुसार इस संबंध में नगरपालिका अध्यक्ष की ओर से एक शिकायती आवेदन प्राप्त हुआ है। शासकीय भूमि के पट्टे के लिए कूट रचित दस्तावेज और फर्जी सील का इस्तेमाल करने के आरोपों की गंभीरता से जांच की जा रही है।

साधारण कागज पर हुआ खेल, जावक नंबर भी गायब

केंट थाने में दिए आवेदन के अनुसार, ग्राम देहरी निवासी सत्येन्द्र सिंह रघुवंशी ने पटवारी हल्का गोपालपुरा स्थित करीब 56 हेक्टेयर (सर्वे क्रमांक 142 और 231) की सरकारी जमीन पर फलदार आम के पेड़ लगाने के लिए पट्टे की मांग की थी। इसके लिए उसने नपाध्यक्ष के फर्जी हस्ताक्षर वाला पत्र लगाया था। नपाध्यक्ष सविता गुप्ता ने बताया कि वे हमेशा अपने आधिकारिक लेटरहेड पर ही पत्राचार करती हैं और उसमें जावक नंबर अनिवार्य होता है, जबकि आरोपी का पत्र एक साधारण कागज पर था और उस पर कोई जावक नंबर भी नहीं था। नपाध्यक्ष ने इसे अपने खिलाफ एक बड़ा राजनीतिक षड्यंत्र बताया है।

सागर के मुड़ारी में खुदाई में मिले ब्रिटिशकालीन सिक्के

प्रशासन ने 13 सिक्के जब्त किए, सिक्कों पर रानी विक्टोरिया का चित्र बना

सागर (नप्र)। सागर में शाहगढ़ क्षेत्र के मुड़ारी गांव में मंगलवार को मंदिर की जमीन की खुदाई के दौरान प्राचीन चांदी के सिक्के मिले हैं। सिक्के मिलने की खबर फैलते ही मौके पर ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई। लोगों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची और प्रशासन की टीम को बुलाया। टीम ने मौके से 13 चांदी के सिक्के जब्त किए हैं।

जानकारी के अनुसार, ठाकुर बब्बा मंदिर परिसर में चल रही खुदाई के दौरान जमीन से चांदी के सिक्के निकले हैं। जिन पर विशेष चिंह अंकित पाए गए हैं। सिक्के पर रानी विक्टोरिया का चित्र बना है। प्रारंभिक जानकारी के आधार पर इन सिक्कों को वर्ष 1837 से 1901 के बिटिश शासनकाल का माना जा रहा है। जिससे इनके ऐतिहासिक महत्व की संभावना जताई जा रही है।

सूचना मिलते ही राजस्व विभाग और पुलिस प्रशासन मौके पर पहुंचा। प्रशासन ने सिक्कों का ऐतिहासिक और पुरातत्व महत्व जानने के लिए जांच प्रक्रिया शुरू कर दी है। एसडीएम नवीन ठाकुर ने बताया कि खुदाई में चांदी के 13 सिक्का मिले हैं। जिन्हें जब्त किया है। सिक्का बिटिशकालीन हैं। मामले की एसआई टीम जांच करेगी।

मैहर एनएच-30 पर काल बनकर दौड़े ट्रक

श्रद्धालुओं की ट्रॉली पलटी, रेस्क्यू करने उतरे थाना प्रभारी को दूसरे ट्रक ने कुचला

मैहर (नप्र)। जिले के अमदरा थाना क्षेत्र अंतर्गत नेशनल हाईवे-30 पर सोमवार-मंगलवार की दरमियानी रात एक के बाद एक हुए दो भीषण सड़क हादसों ने कोहराम मचा दिया। कटनी से मैहर आ रही श्रद्धालुओं से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली को एक तेज रफ्तार ट्रक ने पीछे से टक्कर मार दी। इस हादसे के बाद जब पुलिस टीम मौके पर पहुंचकर रेस्क्यू ऑपरेशन चला रही थी, तभी पीछे से आए एक अन्य बेकाबू ट्रक ने अमदरा थाना प्रभारी टीकाराम कुर्मी को कुचल दिया। हादसों में हताहतों की संख्या को लेकर प्रशासन और पुलिस द्वारा स्थिति स्पष्ट की जा रही है, वहीं 23 लोग घायल बताए जा रहे हैं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, कटनी जिले से श्रद्धालुओं को लेकर एक ट्रैक्टर-ट्रॉली मैहर मां शारदा के दर्शन के लिए आ रही थी। रात में जैसे ही ट्रैक्टर-ट्रॉली नया गांव के पास पहुंची, तभी पीछे से आ रहे तेज रफ्तार ट्रकने उसे जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि ट्रैक्टर-ट्रॉली अनियंत्रित होकर डिवाइडर पर पलट गई, जिससे ट्रॉली में सवार श्रद्धालुओं में चीख-पुकार मच गई।

रेस्क्यू के दौरान अमदरा टीआई को ट्रक ने कुचला- घटना की सूचना मिलते ही अमदरा थाना प्रभारी टीकाराम कुर्मी पुलिस बल के साथ तत्काल मौके पर पहुंचे और राहत कार्य शुरू किया। टीआई कुर्मी जब हादसे में फंसे ड्राइवर को बाहर निकाल रहे थे, तभी करीब 20 मिनट बाद पीछे से आ रहे एक अन्य ट्रक ने पहले से खड़े ट्रक को जोरदार टक्कर मार दी। इस टक्कर के दौरान दूसरा ट्रक टीआई के ऊपर चढ़ गया, जिससे उनके पैर के पंजे गंभीर रूप से कुचल गए। हादसे के बाद मौके पर मौजूद सीएसपी महेंद्र सिंह चौहान, बदेरा टीआई अभिषेक सिंह और टीआई अनिमेष द्विवेदी ने भारी पुलिस बल के साथ मोर्चा संभाला। घायल अमदरा टीआई को प्राथमिक उपचार के बाद तुरंत जबलपुर रेफर किया गया है।

हादसे में मृतकों की पहचान और घायलों का हाल

हादसे में मृतकों की पहचान प्रकाश लोधी (14 वर्ष) निवासी शाहनगर जिला कटनी और धीरेंद्र सिंह निवासी रोहनिया जिला कटनी के रूप में हुई है। घायलों में राम मिलन यादव, सीमा देवी, संतोषी भाई सिंह, मुकेश सिंह, रजनी बाई लोधी और दीपाली लोधी शामिल है। हादसे में घायल सभी 23 लोगों को कटनी जिला अस्पताल भेजा गया, जहां से 6 लोगों की हालत गंभीर होने पर उन्हें बेहतर इलाज के लिए जबलपुर रेफर कर दिया गया है। वहीं, सीएसपी महेंद्र सिंह ने बताया कि प्राथमिक जानकारी के अनुसार घायलों का उपचार जारी है।

सीएसपी ने आधे घंटे की मशक्कत के बाद फंसे ड्राइवर को निकाला

दूसरे ट्रक की टक्कर इतनी भीषण थी कि उसका ड्राइवर भी केबिन में बुरी तरह फंस गया। मौके पर मौजूद सीएसपी महेंद्र सिंह चौहान ने खुद कमान संभालते हुए करीब आधे घंटे की कड़ी मशक्कत के फंसे हुए ड्राइवर को सुरक्षित बाहर निकाला। हादसे के बाद नेशनल हाईवे पर कई किलोमीटर लंबा जाम लग गया। सूचना पर तीन थानों की पुलिस, एनएचआई और पेट्रोलिंग टीम ने मौके पर पहुंचकर क्रेन की मदद से दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को हटाया, जिसके बाद हाईवे पर आवागमन बहाल हो सका। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। सीएसपी ने बताया कि 23 लोग हादसे में घायल हैं, जिनका उपचार जारी है।

भोपाल की लुटेरी दुल्हन, शादी के 8वें दिन ही गायब हुई

पैसे डूबे तो पीड़ित ने खुद ही मास्टर प्लान बनाकर दबोचा

भोपाल (नप्र)। राजधानी के ग्रामीण इलाके नजीराबाद में एक लुटेरी दुल्हन गैंग द्वारा किसान परिवार के साथ ढाई लाख रुपये की बड़ी धोखाधड़ी का मामला सामने आया है। गैंग ने एक युवक की शादी कराई और विवाह के महज आठ दिन बाद ही दुल्हन सारे पैसे लेकर रफूचक्कर हो गई। हालांकि, ठगी का अहसास होने के बाद पीड़ित परिवार ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने फिल्मी अंदाज में आरोपियों को दोबारा फंसाने के लिए जाल बिछाया और पूरे गिरोह को सलाखों के पीछे पहुंचा दिया।

मंडीदीप की विधवा बताकर कराई थी शादी- पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, नजीराबाद निवासी किसान रामचंद्र अपने छोटे भाई सरवन के लिए लड़की तलाश रहे थे। इसी दौरान उनका संपर्क रूप सिंह और रवि नाम के दो बिचौलियों से हुआ। उन्होंने मंडीदीप की रहने वाली एक महिला से सरवन का रिश्ता तय कराया और उसे एक विधवा बताया जो दोबारा घर बसाना चाहती है। बिचौलियों ने इस शादी के एवज में ढाई लाख रुपये की मांग की। रामचंद्र ने रकम का इंतजाम किया और अप्रैल महीने में एक मंदिर में सरवन और उस महिला की शादी करा दी गई।

8 दिन में खेल खत्म, ऐसे बिछाया जाल

शादी के बाद दुल्हन अपने ससुराल नजीराबाद आ गई। वह सब कुछ सामान्य दिखाते हुए वहां आठ दिनों तक रुकी और एक रात अचानक गायब हो गई। पीड़ित परिवार ने जब बिचौलियों से संपर्क कर अपने पैसे वापस मांगे, तो उन्होंने साफ मना कर दिया। जब दुल्हन का कहीं पता नहीं चला, तो रामचंद्र ने एक रिश्तेदार के जरिए बिचौलियों को फोन करवाया और कहा कि उनके पास शादी के लिए एक और लड़का है और वे ढाई लाख रुपये देने को तैयार हैं। बिचौलिये जैसे ही नए दूल्हे से डील करने भोपाल रेलवे स्टेशन के पास पहुंचे, पहले से मुस्तैद पुलिस ने उन्हें दबोच लिया। पकड़े गए आरोपी पेशे से टैक्सी ड्राइवर हैं।

विद्युत आपूर्ति में लापरवाही पर 2 इंजीनियरों को नोटिस

ऊर्जा मंत्री ने इंदौर में बिजली उपभोक्ताओं से की सीधे बात

भोपाल (नप्र)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने सोमवार रात इंदौर शहर के बिजली सब स्टेशनों का दौरा किया। उन्होंने उपभोक्ताओं से सीधे बात की, बिजली आपूर्ति के संबंध में प्रथम दृष्टया स्थानीय इंजीनियरों की लापरवाही पाए जाने पर 2 के खिलाफ नोटिस जारी कर कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

ऊर्जा मंत्री श्री सिंह ने इंदौर के ओल्ड पलासिया पहुंचकर बिजली उपभोक्ताओं से संवाद किया। कुछ उपभोक्ताओं ने बार-बार बिजली जाने की शिकायत की। ऊर्जा मंत्री ने कहा कि इस तरह की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। उन्होंने मुख्य अभियंता श्री आरसी जैन को ओल्ड पलासिया, मनोरमागंज क्षेत्र के बिजली इंजीनियरों श्री सत्यप्रकाश जायसवाल और श्री कमलेश टाले को नोटिस देने के निर्देश दिए। मंत्री श्री तोमर ने निर्देश दिए हैं कि मेंटेनेंस गुणवत्ता से हो ताकि बिजली बार-बार न जाए, मेंटेनेंस की सूचना स्थानीय रहवासियों को दी जाए। बिजली आपूर्ति के संबंध में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। ऊर्जा मंत्री के निर्देश पर 2 इंजीनियरों को मंगलवार दोपहर नोटिस जारी कर दिए गए। जवाब संतोषजनक नहीं मिलने पर वेतनवृद्धि रोकने की कार्रवाई भी की जाएगी। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक श्री प्रकाश सिहं चौहान, कार्यपालक निदेशक श्री गजरा मेहता, मुख्य अभियंता कार्य श्री एसएल करवाड़िया, शहर अधीक्षण अभियंता श्री डीके गाठे आदि प्रमुख रूप से मौजूद थे।

संपादकीय

महंगाई का झटके पे झटका

ईंधन के दामों में भारी इजाफे के पहले झटके से देश उबर भी न पाया कि महज पांच दिनों बाद ही तेल कंपनियों ने दूसरी बार देश में पेट्रोल डीजल के भाव फिर बढ़ा दिए हैं। हालांकि यह वृद्धि पहले के मुकाबले एक तिहाई ही है। लेकिन यह इस बात का स्पष्ट संकेत है कि पहले ही कमरतोड़ महंगाई और न्यूनतम आय से जूझ रहे भारतीय नागरिकों को लगातार झटके लगने वाले हैं। मंगलवार सुबह सरकारी तेल कंपनियों ने तेल कंपनियों ने ईंधन के दामों में करीब 90 पैसे प्रति लीटर की वृद्धि कर दी। इसके पहले ईंधन की दरों में तीन रूपए प्रति लीटर का इजाफा किया गया था, अब यह बढ़कर लगभग 4 रू. हो गया है। हालांकि कीमतों में इस वृद्धि का कारण मुख्य रूप से पश्चिम एशिया का संकट है, जिसकी वजह से खाड़ी देशों से भारत को तेल व गैस की सप्लाई लगभग ठप हो गई है। साथ ही वैश्विक बाजार में कच्चे तेल के दाम कई गुना बढ़ गए हैं। कहा जा रहा है कि तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में भारी तेजी के कारण भारत की तेल कंपनियों को भारी घाटा हो रहा है। मोदी सरकार ने पिछले दिनों चुनाव के चलते तीन माह तक घाटा झेला, लेकिन अब वह इसे आम उपभोक्ता के सिर पर डालना चाहती है। और इसकी शुरूआत पिछले शुक्रवार से हो चुकी है। पश्चिम एशिया का संकट जल्द सुलझेगा, इसके कोई आसार नहीं है। उल्टे अमेरिका और ईरान के बीच सीधी जंग छिड़ने का खतरा और गहरा गया है। ऐसा हुआ तो हालात और बदतर होंगे, जिसका सीधा असर भारत जैसे देशों पर होगा, जो ऊर्जा के लिए काफी हद तक खाड़ी देशों पर निर्भर है। आज कच्चे तेल की कीमतें रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गई हैं। यह 100 डॉलर प्रति बैरल के आसपास हैं। जानकारों का कहना है कि हालात नहीं सुधरे तो दाम 200 डॉलर प्रति बैरल तक भी जा सकते हैं। ऐसा हुआ तो भारतीय अर्थ व्यवस्था की चूलें हिल जाएंगी। बताया जाता है कि पेट्रोल और डीजल की कीमतों में जब तीन रुपये प्रति लीटर की बढ़ोतरी हुई थी। तब सरकारी तेल कंपनियों का दैनिक घाटा करीब 25 फीसदी कम होकर 750 करोड़ रुपये रह गया है। पहले ये लगभग 1 हजार करोड़ तक पहुंच गया था। पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय की संयुक्त सचिव सुजाता शर्मा के मुताबिक, तेल कंपनियों को घाटे की भरपाई के लिए किसी राहत पैकेज या सब्सिडी पर विचार नहीं किया जा रहा है। यहां सवाल केवल तेल के दाम बढ़ने भर का नहीं है, पेट्रोल डीजल और सीएनजी के दाम बढ़ने का सीधा असर परिवहन और पेट्रोलियम पदार्थों से बनने वाली वस्तुओं की लागत पर पड़ता है। ट्रकों, टैक्सियों का माल भाड़ा तुरंत बढ़ गया है। जिसका परिणाम दैनंदिन जीवन की उपभोग वस्तुओं की कीमतों पर पड़ना शुरू हो गया है। चाय की प्याली और खाने की थाली भी महंगी हो गई है। खेती की लागत बढ़ेगी। बस ऑटो का किराया बढ़ने से बच्चों को स्कूल कॉलेज भेजना और महंगा होगा। घर चलाने का औसत खर्च कम से कम 20 से 25 फीसदी तक बढ़ जाएगा। थोड़ी बहुत बचत होती थी, वह भी खत्म हो जाएगी। सर्वाधिक मार उन गरीब लोगों पर है, जो दिहाड़ी पर जीते हैं। खर्च बढ़ने से दैनिक मजदूरी बढ़ाने की मांग होगी नतीजतन जिनके पास धन है, उनके सामने में संकट खड़ा होगा। उधर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पहले तो लोगों से फिजूलखर्ची कम करने की अपील की। जिसका यही संदेश गया है कि आगे और भयावह संकट आने वाला है। हालात कितने बदतर होंगे, यह कोई नहीं कह सकता।

भाषा में संयम बनाम आचरण की भाषा

मैं लंबे समय तक इस गलतफहमी में रहा कि हमारी हिंदी फिल्में अपने मारधाड़ वाले डॉयलाग के माध्यम से हिंदी का प्रचार और विकास कर रही हैं। और इससे गैर हिंदी भाषी लोग हिंदी सीख रहे हैं। भले ही वे हिंदी की गालियां ही हों। फिर हिंदुत्ववादी संगठन और उसके प्रचार प्रसार से भी यह गलतफहमी बनी कि वे और कुछ भले न करें लेकिन गैर- हिंदी क्षेत्रों में अपनी विचारधारा के साथ हिंदी फैला रहे हैं। यह गलतफहमी एक हद तक हिंदी के इलेक्ट्रॉनिक चैनलों की बढ़ती दर्शक संख्या को देखकर भी हुई। लगा कि उनके परदे पर तू-तू मैं-मैं और मारधाड़ वाली स्थितियां आखिरकार हिंदी इलाके का गौरव बढ़ा रही हैं और राष्ट्रीय राजनीति के सारे विमर्श को राष्ट्रीय भाषा में केंद्रित कर रही हैं। जो काम दयानंद सरस्वती, भारतेंदु हरिश्चंद्र, गणेश शंकर विद्यार्थी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, हजारी प्रसाद द्विवेदी, महात्मा गांधी, पुरुषोत्तम दास टंडन, डॉ. राममनोहर लोहिया और पंडित जवाहर लाल नेहरू नहीं कर पाए वह काम इस दौर के नेता बखूबी कर रहे हैं।

नजरिया

अरुण कुमार त्रिपाठी

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

अच्छा हुआ कि भारत के मुख्य न्यायाधीश ने तुच्छ याचिकाएं डालने और सोशल मीडिया पर न्यायपालिका की आलोचना करने वालों को अंग्रेजी में 'काकरोच और परजीवी' कहा वरना हिंदी के निरंतर गिरते स्तर को और गहरी ठेस लगती। मैं लंबे समय तक इस गलतफहमी में रहा कि हमारी हिंदी फिल्में अपने मारधाड़ वाले डॉयलाग के माध्यम से हिंदी का प्रचार और विकास कर रही हैं। और इससे गैर हिंदी भाषी लोग हिंदी सीख रहे हैं। भले ही वे हिंदी की गालियां ही हों। फिर हिंदुत्ववादी संगठन और उसके प्रचार प्रसार से भी यह गलतफहमी बनी कि वे और कुछ भले न करें लेकिन गैर-हिंदी क्षेत्रों में अपनी विचारधारा के साथ हिंदी फैला रहे हैं। यह गलतफहमी एक हद तक हिंदी के इलेक्ट्रॉनिक चैनलों की बढ़ती दर्शक संख्या को देखकर भी हुई। लगा कि उनके परदे पर तू-तू मैं-मैं और मारधाड़ वाली स्थितियां आखिरकार हिंदी इलाके का गौरव बढ़ा रही हैं और राष्ट्रीय राजनीति के सारे विमर्श को राष्ट्रीय भाषा में केंद्रित कर रही हैं। जो काम दयानंद सरस्वती, भारतेंदु हरिश्चंद्र, गणेश शंकर विद्यार्थी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, हजारी प्रसाद द्विवेदी, महात्मा गांधी, पुरुषोत्तम दास टंडन, डॉ राममनोहर लोहिया और पंडित जवाहर लाल नेहरू नहीं कर पाए वह काम इस दौर के नेता बखूबी कर रहे हैं।

लेकिन यह गलतफहमी पिछले महीने हुए पश्चिम बंगाल के चुनावों में काफी कुछ उतर गई। वहां दोनों ओर से जितने हिंसक सांस्कृतिक विमर्श चले वे सब हिंदी में ही चल रहे थे। उल्टा करके सीधा कर देंगे, मार........को वगैरह वगैरह। बल्कि जो बंगाली कभी हिंदी वालों को छातू वाला, मेड़ो बोल रहे थे वे भी हिंदी में ही उतर आए। स्त्रियों से संबंधित जितनी अभद्र टिप्पणियां हिंदी में उभरी उन सभी ने नारी वंदन के नारे की सारी हवा निकाल दी। चुड़ैल, ताड़का और सूर्पनखा जैसे शब्द इतने धड़ल्ले से प्रयोग हो रहे हैं कि जैसे आप की बात न मानने वाला मनुष्य 'दैत्य और राक्षस' कुल का ही है। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनने का जैसा गौरव हमारे चुनावों में हासिल हुआ वैसा अभी न तो सरकारी दफ्तरों में हासिल हुआ है और न ही अदालतों में और न ही विश्वविद्यालयों में ज्ञान विज्ञान की भाषा के तौर पर। गाली गलौज के लिए हिंदी का प्रयोग अधिक प्रभावशाली होता जा रहा है और राष्ट्रीय स्तर पर यही स्वीकृत आचरण होता जा रहा है। पुलिस को तो इसमें महारत हासिल है। ऐसे में धन्य हैं हमारे गैर हिंदी भाषी क्षेत्र के हिंदी भाषी राष्ट्रीय नेता जिन्होंने अपनी मातृ भाषा को इस कलंक से बचाकर उसे हिंदी के माथे थोप दिया।

हालांकि भारत के मुख्य न्यायाधीश ने वकील, पत्रकार और आरटीआई एक्टविस्ट बने बेरोजगार युवाओं को 'काकरोच और परजीवी' कहने वाले बयान पर अपनी सफाई दे दी है और इस विवाद को शांत हो ही जाना चाहिए लेकिन इससे भाषा में संयम बरतने और मर्यादित आचरण करने का जो सवाल पैदा हुआ है उसे न तो शांत होना चाहिए और न ही उस पर कार्रवाई रुकनी चाहिए। वरिष्ठ वकील का दर्जा मांग रहे थे संजय दुबे जी और लानत भेजी गई देश के युवाओं पर। हालांकि उस लानत के बाद मुख्य न्यायाधीश ने युवाओं की मिजाज पुर्शी भी की लेकिन घाव तो इतने जल्दी भरेगा नहीं। इस प्रसंग पर एक युनानी कथा याद आती है। सिकंदर महान के पिता फिलिप्स द्वितीय जो एक सैन्य रणनीतिकार थे और जिन्होंने युनानी साम्राज्य को सुदृढ़ किया था, एक बार अपने दरबार में बैठे थे।

उनके समक्ष एक फरियादी आया। जब उसने राजा की हालत देखी तो उसने अपनी फरियाद वापस ले ली। जब दूसरे दिन उसने फिर अपनी फरियाद पेश की तो राजा ने पूछा कि तुमने कल अपनी फरियाद वापस क्यों ले ली थी। उसने कहा कि महराज कल आप दोहरे नशे में थे। एक तो सत्ता का नशा दूसरे शराब का नशा। इसलिए न्याय होने की उम्मीद नहीं थी। वैसे ही संजय दुबे को भी समझना चाहिए था। एक ओर हमारी लोकतांत्रिक संस्थाओं पर दक्षिणपंथी विचार का नशा है तो दूसरी ओर उनके पद का नशा है। ऐसे में उनसे न्याय की उम्मीद न तो एसआईआर के मामले में हो सकती है न ही चुनाव के मामले में, न वकीलों की वरिष्ठता के मामले में, न नीट परीक्षा के बारे में और न ही मजदूरों के वेतन के बारे में। अच्छा हुआ बाद में संजय दुबे ने अपनी याचिका वापस ले ली और माननीय न्यायमूर्ति ने उसकी इजाजत दे भी दी।

शांति और अहिंसा के प्रमुख विचारक योहान गाल्तुंग ने हिंसा के तीन स्तर बताए हैं। एक हिंसा सांस्कृतिक स्तर पर होती है। जिसमें भाषा और चिंतन के स्तर पर दूसरे व्यक्ति या समुदाय को हीन समझा जाता है और उसके साथ संबोधन से लेकर लेन देन तक में निम्न स्तर का घृणित व्यवहार किया जाता है। हिंसा का दूसरा स्तर भौतिक यानी शारीरिक हिंसा का है जिसमें मारपीट, हत्या डकैती और बलात्कार वगैरह शामिल है। तीसरा स्तर व्यवस्था यानी राज्य और समाज की संगठित शक्ति द्वारा की जाने वाली हिंसा है। उसमें बुलडोजर से किसी का मकान गिराना या किसी को जमीन और घर से बेदखल करने से लेकर उस पूरी कौम के नरसंहार की सैन्य कार्रवाई तक शामिल है। जैसे की गज़ा में इजराइल कर रहा है। ईरान में अमेरिका कर रहा है या ईरान की अपनी सत्ता अपने नागरिकों और विशेषकर आजादी चाहने वाली स्त्रियों के साथ करती रहती है। इजराइली बुलडोजर ने भारत के शासकों को भी प्रेरणा दी है। वे अब उसका प्रयोग अपने नागरिकों के एक हिस्से को पराया बताकर उस पर कर रहे हैं। ध्यान रहे भारत में आपातकाल में अतिक्रमण हटाओ अभियान के तहत संजय गांधी ने इसका जब दिल्ली के तुर्कमान गेट पर इसका प्रयोग किया था तो उसकी आलोचना तत्कालीन जनसंघ के नेताओं ने भी की थी।

निश्चित तौर पर असंयमित भाषा गंभीर किस्म की सांस्कृतिक हिंसा करती है और वह बाद में होने वाली भौतिक और संरचनात्मक हिंसा के लिए वातावरण निर्मित करती है। लेकिन अगर आचरण की भाषा में प्रेम और अहिंसा है, मर्यादा है तो इस भाषा का प्रभाव घाव देने के बजाय मलहम लगाने वाला होता है। प्रेम बढ़ाने वाला होता है। सुधारने वाला होता है। कई बार संत महात्मा, समाज सुधारक और साहित्यकार समाज के हित में असंयमित भाषा का उपयोग करते हैं। कई बार महिलाएं शादी विवाह में प्रेम भरी गालियां देती हैं। कई बार ब्रज में अपने ही इष्ट को गालियां दी जाती हैं। इससे इष्ट के प्रति सखा भाव जगता है और वह भक्त के अधिक करीब आता है। श्री मागो ने रामकृष्ण वचनामृत में ठाकुर के चरित्र का जो वर्णन किया है उसमें वे सहज भाव से गालियां देते हैं। जब कृष्ण बिहारी मिश्र ने वचनामृत को आधार बनाकर कल्पतरु की उत्सव लीला शीर्षक से ठाकुर की जीवनी लिखी और उसकी पांडुलिपि प्रकाशन के लिए भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन को भेजी तो संपादक ने आरंभिक पंक्तियों में लिखी गालियों पर आपत्ति की। इस पर लेखक का कहना था कि वे नहीं हटाई जाएंगी क्योंकि ठाकुर जी ऐसे ही बोलते थे।

एक बार जब काशीनाथ सिंह से किसी ने कहा कि उनके उपन्यास 'काशी का अस्सी' में गालियां बहुत हैं तो उनका कहना था कि काशी की गालियां फकीरों की गालियां हैं। लेकिन जब सत्ता के शीर्ष पदों पर बैठे राजनेता या चैनलों के प्रस्तोता और उन पर बहस के लिए बुलाए जाने वाले विशेषज्ञ सत्ता हासिल करने, उसे बनाए रखने और अपना बिजनेस चलाने के लिए 24 घंटे आक्रामक भाषा में सांस्कृतिक हिंसा करते हैं तो समाज की दशा दिशा पर चिंता होती है। गालियों और उनसे संरचनागत हिंसा के माहौल को निर्मित किया जाता है और फिर तानाशाह या फासिस्ट उसे सामान्य घटना बना देता है। विडंबना देखिए कि यहूदियों के लिए जिस भाषा का प्रयोग हिटलर करता था आज उसी भाषा का प्रयोग इजराइल फिलस्तीनियों के लिए करता है। हिटलर ने यहूदियों के लिए परजीवी और चूहा कहा था। इस तरह के साहित्य से जर्मनी का उस समय का विमर्श पटा पड़ा है। आज इजराइल फिलस्तीनियों के लिए जहरीला कीड़ा यानी वर्मिन शब्द का प्रयोग कर रहा है। जुलाई 1994 में रवांडा के सरकारी रेडियो ने तुर्तियों के लिए काकरोच शब्द का प्रयोग किया था उसके बाद सौ दिनों में आठ लाख तुर्ती मार दिए गए। उनकी नस्ल ही समाप्त कर दी गई। निश्चित तौर पर भाषा में संयम जरूरी है लेकिन उससे भी अधिक आवश्यक है आचरण की संयमित भाषा। अगर आप के फैसलों और कार्रवाइयों में श्रेष्ठ आचरण परिलक्षित होता है और कभी कभार भाषा में फिसलन हो जाती है तो चलेगा। लेकिन अगर आप की भाषा में संयम नहीं है और आचरण की भाषा भी हिंसक और अमर्यादित है तो सोचना होगा कि कहीं हमारा समाज गहराई में हिंसा और अराजकता की ओर तो नहीं जा रहा है। कबीर ने चेतावनी दी थी कि 'आपन आपन मेढ़ संभालों बढ़ो हाथ लो पानी।' उसी बात को गांधी जी ने पत्रकारिता और लेखन करने वालों (उसे बोलने वालों पर भी लागू कर सकते हैं) को सचेत करते हुए कहा था कि जिस प्रकार बाढ़ का पानी खेत के खेत और गांव के गांव तबाह करता हुआ चला जाता है, उसी प्रकार अनियंत्रित और अमर्यादित भाषा समाज और देश को तबाह कर देती है। यहां कम से कम हिंदी वालों से तो कहा ही जा सकता है कि वे अपनी भाषा को मर्यादा में रखें।

भारत ने मध्यस्थता न्यायालय का फैसला अवैध ठहराया

सिंधु जल संधि

प्रमोद भार्गव

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

भारत अब देशहित में कठोर फैसले लेने में चूक नहीं रहा है। भारत ने कश्मीर के पहलगाम में निर्दोष पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले के परिप्रेक्ष्य में कड़ा रुख अपनाते हुए पांच बड़े कूटनीतिक प्रहार किए थे। इनमें सबसे महत्वपूर्ण सिंधु जल समझौते को अनिश्चित काल के लिए स्थगित करना था। इस बाबत भारत ने दूसरा कठोर फैसला लेते हुए नीदरलैंड के हेग में स्थित अंतरराष्ट्रीय स्थाई मध्यस्थता न्यायालय के उस फैसले को खारिज करते हुए अवैध ठहरा दिया, जो जम्मू-कश्मीर से जुड़ी जल विद्युत परियोजनाओं से संबंधित था। इन पर पाकिस्तान ने सिंधु जल संधि के तहत आपत्ति जताई थी। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रंधीर जायसवाल ने दो टूक कहा कि 'अवैध रूप से गठित तथाकथित मध्यस्थता न्यायालय ने 15 मई 2026 को अधिकतम जल ग्रहण क्षेत्र से संबंधित एक फैसला दिया है, जो सिंधु जल संधि की सामान्य व्यख्या के मुद्दों पर दिए गए फैसलों का पूरक है। भारत इस तथाकथित फैसले को पूरी तरह खारिज करता है, ठीक उसी तरह जैसे उसने अवैध रूप से गठित मध्यस्थता न्यायालय के सभी पूर्व निर्णयों को दृढ़ता से खारिज किया हुआ है। इस संधि को स्थागित रखने का भारत का फैसला बरकरार है।'

22 मार्च 2025 को पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ कई कठोर निर्णय लिए थे, जिनमें से एक 19 सितंबर 1960 को अंतरराष्ट्रीय जल संरक्षण संधि है। इस संधि में 12 अनुच्छेद और 8 परिशिष्ट हैं। यह एक ऐसी कूटनीतिक चाल थी, जिससे पाकिस्तान को भीषण जलसंकट का सामना करना पड़ रहा है। पाक कि आर्थिक समृद्धि में भी इस फैसले ने मठा घोलने का काम किया है। सिंधु जल संधि में भारत और पाकिस्तान के बीच नदियों का पानी बांटने का समझौता हुआ था। इस समझौते पर प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और पाकिस्तानी राष्ट्रपति अयूब खान ने हस्ताक्षर किए थे। यह संधि विश्व बैंक की मध्यस्थता में हुई थी। इसके अंतर्गत पाकिस्तान से पूर्वी क्षेत्र की तीन नदियों व्यास, रावी व सतलज की जल राशि पर नियंत्रण भारत के सुपुर्द किया गया था और पश्चिम की नदियों सिंधु, चिनाब व झेलम पर नियंत्रण की जिम्मेदारी पाक को सौंपी गई थी। इसके तहत भारत के ऊपरी हिस्से में बहने वाली इन छह नदियों का 80.52 यानी 167.2 अरब घन मीटर पानी पाकिस्तान को हर साल दिया जाता है। जबकि भारत के हिस्से में महज 19.48 प्रतिशत पानी ही शेष रह जाता है। नदियों की ऊपरी धारा (भारत में बहने वाला पानी) के जल-बंटवारे में उदारता की ऐसी अनूठी मिसाल दुनिया के किसी भी अन्य जल-समझौते में देखने में नहीं आई है। इसलिए अमेरिकी सीनेट की विदेशी मामलों से संबंधित समिति ने 2011 में दावा किया था कि यह संधि दुनिया की सफलतम संधियों में से एक है। लेकिन यह संधि केवल इसलिए सफल है, क्योंकि भारत संधियों की शर्तों को निभाने के प्रति उदार एवं प्रतिबद्ध बना हुआ था। जबकि जम्मू-कश्मीर को हर साल इस संधि के पालन में करीब 60 हजार करोड़ रुपए का नुकसान उठाना पड़ता है। भारत की भूमि पर इन नदियों का अकूत जल भंडार होने के बावजूद इस संधि के चलते इस राज्य को पर्याप्त बिजली नहीं मिल पा रही है। पाकिस्तान की 2.6 करोड़ एकड़ कृषि भूमि की सिंचाई इन्हीं नदियों के जल से होती है। पाक के बड़े भू-भाग की 21 करोड़ से ज्यादा जनसंख्या की जल की जरूरतें इन्हीं नदियों पर निर्भर हैं। पिछले एक साल से सिंधु का पानी रोक दिए जाने से पाकिस्तान में खेती को बड़ा नुकसान हो रहा है।

दरअसल सिंधु-संधि के तहत उत्तर से दक्षिण को बांटने वाली एक रेखा सुनिश्चित की गई है। इसके तहत सिंधु क्षेत्र में आने वाली तीन नदियां सिंधु, चिनाब और झेलम पूरी तरह पाकिस्तान को उपहार में दे दी गई हैं। इसके उलट भारतीय संप्रभुता क्षेत्र में आने वाली व्यास, रावी व सतलज नदियों के बचे हुए हिस्से में ही जल सीमित रह गया है। इस लिहाज से यह संधि दुनिया की ऐसी इकलौती अंतर्देशीय जल संधि है, जिसमें सीमित संप्रभुता का सिद्धांत लागू होता है और संधि की असमान शर्तों के चलते ऊपरी जलधारा वाला देश नीचे की ओर प्रवाहित होने वाली जलधारा वाले देश पाकिस्तान के लिए अपने हितों की न केवल अनदेखी करता है, वरन बलिदान कर देता है। इतनी बेजोड़ और पाक हितकारी संधि होने के बावजूद पाक ने भारत की उदार शालीनता का उत्तर पूरे जम्मू-कश्मीर क्षेत्र में आतंकी हमलों के रूप में देता रहा है। आतंकवाद को बहाना बनाकर छद्म युद्ध तीन दशक से लड़ रहा है। जबकि सभी हमले पाक सेना की करतूत हैं। दरअसल छद्म युद्ध में लागत तो कम आती ही है, हमलाबर देश पाकिस्तान वैश्विक मंचों पर इस बहाने रक्षात्मक भी हो जाता है कि इन हमलों में उसका नहीं, आतंकवादियों का हाथ है। बावजूद हैरानी इस बात पर है कि इस संधि को तोड़ने की हिम्मत न तो 1965 में भारत-पाक युद्ध के बाद दिखाई गई और न ही 1971 में। हालांकि 1971 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने पाकिस्तान को दो टुकड़ों में विभाजित कर नए राष्ट्र बांग्लादेश को अस्तित्व में लाने की बड़ी कूट व रणनीतिक सफलता हासिल की थी। कारगिल युद्ध के समय भी इस संधि को तोड़ने से चुके हैं।

दरअसल पाकिस्तान की प्रकृति में ही अहसानफरोशी शुमार है। इसीलिए भारत ने जब झेलम की सहायक नदी किशनगंगा पर बनने वाली 'किशन गंगा जल विद्युत परियोजना' की बुनियाद रखी तो पाकिस्तान ने बुनियाद रखते ही 'मध्यस्थता न्यायालय' में 2010 में ही आपत्ति दर्ज करा दी थी। जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले में किशनगंगा नदी पर 300 मेगावाट की जल विद्युत परियोजना प्रस्तावित है। हालांकि 20 दिसंबर 2013 को इसका फैसला भी हो गया। दुर्भाग्य कहलें या भारत द्वारा ठीक से अपने पक्ष की पैरवी नहीं करने के कारण यह निर्णय भारत के व्यापक हित साधे रखने में असफल रहा है। न्यायालय ने भारत को परियोजना निर्माण की अनुमति तो दे दी, लेकिन भारत को बाध्य किया गया कि वह 'रन ऑफ द रिवर' प्रणाली के तहत नदियों का प्रवाह निरंतर जारी रखे। फैसले के मुताबिक किशनगंगा नदी में पूरे साल हर समय 9 क्यूसेक मीटर प्रति सेकंड का न्यूनतम जल प्रवाह जारी रहेगा। हालांकि पाकिस्तान ने अपील में 100 क्यूसेक मीटर प्रति सेकेंड पानी के प्राकृतिक प्रवाह की मांग की थी, जिसे न्यायालय ने नहीं माना। पाकिस्तान ने सिंधु जल-समझौते का उल्लंघन मानते हुए भारत के खिलाफ यह अपील दायर की थी। इसके पहले पाकिस्तान ने बगलिहार जल विद्युत परियोजना पर भी आपत्ति दर्ज कराई थी। जिसे विश्व बैंक ने निरस्त कर दिया था।

दरअसल द्विपक्षीय वार्ता के बाद शिमला समझौते में स्पष्ट उल्लेख है कि पाकिस्तान अपनी जमीन से भारत के खिलाफ आतंकवाद को फैलाने की इजाजत नहीं देगा। किंतु पाकिस्तान इस समझौते के लागू होने के बाद से ही, इसका खुला उल्लंघन कर रहा है। लिहाजा पाकिस्तान को उसी की भाषा में जवाब देने के नजरिए से भारत को सिंधु जल-संधि को ठुकरा कर पानी को हथियार के रूप में इस्तेमाल करने की मांग लंबे समय से उठ रही थी। पुलवामा हमले के बाद केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने पाकिस्तान पर दबाव बनाने के लिए पाकिस्तान की ओर बहने वाली नदियों का पानी रोकने की बात कही थी। भारत ने पहलगाम में हिंदू पर्यटकों पर हुए हमले के बाद इस मांग को अंजाम तक पहुंचा दिया है। तय है, इस कूटनीतिक पहल से पाक की कमर टूट रही है। नदियों के प्रवाह को बाधित करना इसलिए भी अनुचित नहीं है, क्योंकि यह संधि भारत के अपने राज्य जम्मू-कश्मीर के नागरिकों के लिए न केवल औद्योगिक व कृषि उत्पादन हेतु पानी के दोहन में बाधा बनी हुई थी, बल्कि पेयजल के लिए नए संसाधन निर्माण में भी बाधा थी। इस संधि के चलते यहां की जनता को पानी के उपयोग के मौलिक अधिकार से भी वंचित होना पड़ रहा था। हैरानी की बात यह भी है कि यहां सत्तारूढ़ रहने वाली सरकारों और अलगाववादी जमातों ने इस बुनियादी मुद्दे को उछालकर पाकिस्तान को कठघरे में खड़ा करने की कोशिश कभी नहीं की ? इसलिए आतंक का माकूल जवाब देने के लिए भारत सरकार की इस कूटनीतिक पहल का असर अब पाकिस्तान में साफ दिखाई दे रहा है।

'चौरासी माल' से 'तराई' तक की रोचक कथा

सामयिक

प्रयाग पाण्डे

नैनीताल निवासी पत्रकार

नाम की महिमा निराली है। 'नाम' को लेकर अनेक मत और मान्यताएं हैं। कुछ लोग कहते हैं नाम में क्या रक्खा है? जबकि कुछ लोगों के लिए 'नाम' की बहुत अहमियत होती है। कहा जाता है 'नामी रोए नाम को.....।' अधिकांश स्थान, गाँव, नगर -कस्बे और गली-मोहल्लों के नामों में वहाँ का राजनीतिक इतिहास, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक मान्यताएं एवं आर्थिक महत्व, भौगोलिक स्थिति और जलवायुगत विशेषताएं छिपी होती हैं। कतिपय स्थानों के नामों से संबंधित स्थान की विशेषताओं का बोध भी होता है। तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार स्थानों के नामों में बदलाव होता रहता है। नामांतरण की यह प्रक्रिया सतत जारी रहती है। इधर एकाध दशक से यह प्रक्रिया यकायक तेज हो गई है।

हालाँकि स्थानों के नामांतरण का यह सिलसिला सदियों पुराना है। इतिहास के प्रत्येक कालखंड में सत्ता में बदलाव के बाद क्षेत्र, शहर, नगर-कस्बों, सड़क-रास्तों और गाँवों के नाम और पहचान बदलती रही है। नाम के बदलाव के मामले में कुमाऊँ का तराई क्षेत्र और वहाँ के नगर-कस्बों का अपना दिलचस्प इतिहास रहा है। तराई के कई नगरों के नामों में कुमाऊँ के चंद राजवंश के राजाओं का इतिहास जुड़ा है। मौजूदा तराई क्षेत्र के नगर-कस्बों के पूर्व प्रचलित नामों के बहाने तराई क्षेत्र और वहाँ के नगरों के अतीत को बखूबी जाना और समझा जा सकता है।

आज से 236 साल पहले कुमाऊँ में देशज राजवंश चंद शासकों का राज था। 1565-1597 के दौरान रुद्रचंद कुमाऊँ के राजा थे। राजा रुद्रचंद, सम्राट अकबर के समकालीन थे। तराई का क्षेत्र शारदा से पीली नदी तक चौरासी कोस लंबा था, इसलिए तब तराई को 'चौरासी माल' कहा जाता था। उस दौर में तराई क्षेत्र का भू-राजस्व नौ लाख रुपये निर्धारित था, इस वजह से तराई का दूसरा नाम 'नौलखिया माल' था। तराई से नौ लाख रुपये की आमदनी के चलते कुमाऊँ के तत्कालीन राजा को 'नौलखिया' राजा भी कहा जाता था। तब इस क्षेत्र को 'मलवारा' और 'माल' नाम से भी जाना जाता था।

कुमाऊँ 1790 में गोरखा सैनिक शासन के चुंगल में आ गया। इसके पैंतीस वर्ष बाद 1815 में यहाँ ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपना आधिपत्य जमा लिया। कुमाऊँ में ब्रितानी हुकूमत कायम होने के बाद अंग्रेजों ने इस क्षेत्र को 'तराई' नाम दिया। आज भी इसे इसी नाम से जाना-पहचाना जाता है। चंद वंश के शासनकाल में तराई क्षेत्र के गाँव, कस्बे एवं नगरों को दूसरे नामों से जाना जाता था। ब्रिटिश राज में भी कमोवेश पुराने नाम प्रचलन में रहे। ब्रिटिशकालीन दस्तावेजों में वर्तमान रुद्रपुर के पुराने नाम भूक्सी, भुक्सर और किलपुरी बताए गए हैं। चंद राजा रुद्रचंद ने 1588 में यहाँ एक नगर बसाया था, जिसे रुद्रपुर नाम दिया गया। चंद राजा रुद्रचंद के सूबेदार काशीनाथ अधिकारी ने 1639 में काशीपुर नगर की स्थापना की, सो इस नगर को काशीपुर के नाम से जाना गया। काशीपुर का पुराना नाम 'कोटा' था। चंद राजा बाज बहादुर चंद ने (1638-1678) बाजपुर नगर बसाया, उन्हीं के नाम पर इस नगर का नाम बाजपुर पड़ा। इससे पहले इस क्षेत्र को 'मुंडिया' नाम से जाना जाता था। वर्तमान जसपुर का पुराना नाम 'सहजगढ़' था। गदरपुर का पुराना नाम 'गजरपुर' था। जबकि वर्तमान नानकमत्ता का पुराना नाम 'बख्शी' था। तराई की बेशकीमती जमीन को रोहिल्लों की बुरी नजर से बचाकर इसे पुनः आबाद करने और यहाँ कई नए नगर-कस्बे बसाने में चंद शासकों का अविस्मरणीय योगदान रहा है। रुद्रपुर, बाजपुर और काशीपुर नगर, चंद कालीन शासकों की याद दिलाते हैं।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मंत्री जी का जन दर्शन कार्यक्रम और प्रश्न प्रति प्रश्न

व्यंग्य

नंदकिशोर बर्वे

लेखक व्यंग्यकार हैं।

मंत्री जी का जन दर्शन कार्यक्रम। कार्यक्रम के नाम से स्पष्ट नहीं है, कि मंत्री जी जनता का दर्शन करते हैं, या जनता को दर्शन देते हैं। पर यह अनादि काल से होता रहता है, और इसे यही कहा जाता है। सो जन दर्शन में बड़ी तादात में लोग आते हैं। अपनी अपनी समस्याएं लेकर, और आश्वासन लेकर चले जाते हैं। समस्याओं के खेत में समाधान का कोई हल नहीं चलता। इसलिए उनका कोई हल भी नहीं निकलता। पर अब परिस्तिथियां बदल गई हैं। अब मंत्री जी आश्वासन नहीं देते, प्रतिप्रश्न करते हैं।

'हुजूर हमारे गाँव और शहर के बीच जो नदी है, अगर उस पर पुल बन जाये तो शहर पहुँचने में आसानी होगी।' लोग कहते।

'आसानी से शहर पहुँच कर क्या करोगे?' मंत्री जी आजकल ऐसे ही सवाल करते हैं।

'आसानी से शहर पहुंच कर फिर अपनी फ़सल बेचकर जीवन की जरूरतों का सामान लेंगे हुज़ूर।' लोग घिघियाते।

'सामान लेकर क्या करोगे?'

'सामान लेकर क्या करेंगे? मतलब जरुरी सामान से जीवन सुचारू और बेहतर हो जायेगा हुज़ूर।'

'जीवन को सुचारू और बेहतर बना कर क्या करोगे?' मंत्री जी के ऐसे उलटे प्रश्नों की श्रंखला टूट नहीं रही थी।

'सुचारू और बेहतर जीवन से जीना आसान होगा। और हम लम्बा और आरामदायक जीवन जियेंगे साहब।'

'लम्बा और आरामदायक जीवन जीकर क्या करोगे?'

'लम्बा जीवन जीकर बच्चों और नाती पोतों के साथ आनंद करेंगे माई बाप।'

'नाती पोतों के साथ आनंद लेकर क्या करोगे?' अब लोगों को लगने लगा कि इसका तो गेम बजाना पड़ेगा। फिर भी चुप थे।

'आनंद लेकर जीवन को सार्थक करेंगे। जो ईश्वर ने दिया है।'

'जीवन को सार्थक करके क्या करोगे?'

'सार्थक जीवन जीने से ईश्वर का दिया जीवन धन्य होगा।'

'जीवन धनी करके क्या करोगे?'

लोग समझ नहीं पा रहे थे कि आज मंत्री जी को हुआ क्या है? पहले तो कभी ऐसे उट पटांग प्रश्न नहीं किये। काम चाहे किसी का न किया हो, पर आश्वासनों से सब की झोली भरने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

'आज मंत्री जी को क्या हुआ है? कैसे कैसे प्रश्न पूछ रहे हैं? एक ने हिम्मत करके स्टाफ़ से पूछा।'

'अब समाज, सरकार और देश में ऐसे ही प्रश्न पूछने की परिपाटी शुरू हुई है। आप लोगों को नहीं मालूम?'

'नहीं साहब हम क्या जाने नई नई परिपाटी। हम गाँव देहात के लोग ठहरे। समय की ताल से ताल धीरे धीरे मिलाते हैं। वैसे एक प्रश्न मैं भी पूछूँ? ऐसे उल्टे प्रश्न पूछकर क्या कर लोगे आप?'

'अवाम से उल्टे प्रश्न पूछने से वह कुछ बोल नहीं पाती है, इससे सरकार चलाना आसान हो जाता है।'

'आसान सरकार चलाकर क्या कर लोगे आप?'

'अरे भाई आसान सरकार चला कर जनता की भलाई करेंगे।'

'जनता की भलाई कर के क्या कर लोगे आप? और सुनो जनता को रोटी के अलावा सड़क, अस्पताल, पानी, बिजली, गैस,पेट्रोल ही नहीं अब तो डेटा भी चाहिए।'

फिर ऐसे प्रश्नों की चौतरफा बौछार होने लगी। सब अपनी अपनी मांगें ऊँची आवाजों में ज़ोर ज़ोर से चिल्ला कर बताने लगे। कोई किसी की नहीं सुन रहा था। और सच पूछो तो कोई किसी की कुछ सुनना ही नहीं चाहता था। लग रहा था जैसे चुनावी लोकतंत्र ज़मीन पर साक्षात् उतर आया हो। सरकार ने स्थिति सँभालने की कोशिश की। स्थिति का ऐसा ही है जब तक वह स्वयं संभली रहती है, तब उसकी कोई परवाह नहीं करता। फिर जब हाथ से निकल जाती है,तो सँभालते फिरो।

'अरे आप लोग तो सरकार की ही नकल करने लगे। उलटे सवाल पूछने का हक़ सिर्फ़ सरकार को होता है। समझे।'

सरकार को लगा कि अगर जनता की बुद्धि 'वाम' हो गई तो लेने के देने पड़ जाएँगे। जनता के बेहिसाब हो हल्ले से उनकी नींद खुली। देखा तो वे ए सी लगे अपने आलीशान बेडरूम में सो रहे थे। उनके अचानक उठ बैठने से श्रीमती जी भी उठ बैठीं। मंत्री जी ने उनको बताया कि उन्होंने सपने में एक ऐसे स्वनामधन्य पत्रकार को अपना सलाहकार नियुक्त कर लिया था जो ऐसे 'जल्दी पहुंचकर क्या करोगे' सरीखे उल्टे और उट पटांग प्रश्नों के लिए जाना जाता है मंत्री जी ने श्रीमती जी से कहा कि वे अब आगे से ऐसे किसी भी आदमी को सलाहकार बनाना तो दूर उसकी कोई बात तक सुनना पसंद नहीं करेंगे। उन्होंने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि शुक्र है कि वह सपना था।

जयंती पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

सुमित्रानंदन पंत: कविता के आकाश में हिमालय सा व्यक्तित्व

सुमित्रानंदन पंत ने केवल आठ वर्ष की आयु में गुलाब के फूल पर अपनी पहली कविता लिखी थी। यह कविता उन्होंने अपनी दादी को सुनाई, जिन्होंने उन्हें प्रोत्साहित किया कि वे अपने अनुभवों और संवेदनाओं को शब्दों में ढालते रहें। यही प्रेरणा आगे चलकर उन्हें उस साहित्यिक संसार में ले गई, जहां वे हिंदी के छायावादी युग के प्रमुख स्तंभ बनकर उभरे। उनकी शिक्षा कौसानी, अल्मोड़ा, बनारस और अंततः इलाहाबाद में हुई। इलाहाबाद का समय उनके जीवन का अत्यंत निर्णायक दौर था। यहीं उन्होंने उस साहित्यिक वातावरण को आत्मसात किया, जो नवजागरण, स्वाधीनता संग्राम और सांस्कृतिक चेतना से ओतप्रोत था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में उनके सहपाठी हरिवंशराय बच्चन और महादेवी वर्मा थे। इन तीनों साहित्यकारों की मित्रता केवल व्यक्तिगत नहीं थी, यह साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत उर्वर संवाद थी, जिसमें जीवन, समाज, सौंदर्य और दर्शन पर गहन चर्चा होती रहती थी। वे अक्सर एक साथ बैठकर कविता पाठ करते, आलोचना करते और एक-दूसरे की रचनात्मकता को परिष्कृत करते।

साहित्यिक भारत के स्वर्णिम इतिहास में जिन विभूतियों ने काव्य की परंपरा को समृद्ध करने के साथ साहित्य को जीवन दर्शन और आत्म-संवाद का माध्यम बनाया, उनमें सुमित्रानंदन पंत का नाम सर्वोपरि है। पंत केवल एक कवि नहीं, एक साधक थे, जिनका सम्पूर्ण जीवन ही एक दीर्घ कविता की तरह विस्तृत और भावपूर्ण था। प्रकृति की अनुपम छवियों से भरे हिमालय की गोद में स्थित उत्तराखंड के अल्मोड़ा जनपद के कौसानी नामक पर्वतीय गांव में 20 मई 1900 को जन्मे पंत के बचपन में ही उनकी माता का निधन हो गया था और उनका पालन-पोषण दादी ने किया। यह शैशवकाल, जिसमें प्रकृति उनकी सबसे घनिष्ठ संगिनी बन गई, आगे चलकर उनके समूचे काव्य की प्रेरणा का मूल स्रोत बन गया। वे बचपन से ही अत्यंत अंतर्मुखी थे। कहा जाता है कि वे कई बार घंटों अकेले बैठकर पहाड़ों, बादलों और फूलों को निहारते रहते थे। उनके परिवार को कभी-कभी शंका होती थी कि कहीं यह बच्चा मानसिक रूप से असामान्य तो नहीं लेकिन यही अंतर्मुखता, यही गहराई आगे चलकर उनके भीतर ऐसी संवेदनशीलता के रूप में प्रकट हुई, जो उनके काव्य की आत्मा बन गई।

सुमित्रानंदन पंत ने केवल आठ वर्ष की आयु में गुलाब के फूल पर अपनी पहली कविता लिखी थी। यह कविता उन्होंने अपनी दादी को सुनाई, जिन्होंने उन्हें प्रोत्साहित किया कि वे अपने अनुभवों और संवेदनाओं को शब्दों में ढ़ालते रहें। यही प्रेरणा आगे चलकर उन्हें उस साहित्यिक संसार में ले गई, जहां वे हिंदी के छायावादी युग के प्रमुख स्तंभ बनकर उभरे। उनकी शिक्षा कौसानी, अल्मोड़ा, बनारस और अंततः इलाहाबाद में हुई। इलाहाबाद का समय उनके जीवन का अत्यंत निर्णायक दौर था। यहीं उन्होंने उस साहित्यिक वातावरण को आत्मसात किया, जो नवजागरण, स्वाधीनता संग्राम और सांस्कृतिक चेतना से ओतप्रोत था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में उनके सहपाठी हरिवंशराय बच्चन और महादेवी वर्मा थे। इन तीनों साहित्यकारों की मित्रता केवल व्यक्तिगत नहीं थी, यह साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत उर्वर संवाद थी, जिसमें जीवन, समाज, सौंदर्य और दर्शन पर गहन चर्चा होती रहती थी। वे अक्सर एक साथ बैठकर कविता पाठ करते, आलोचना करते और एक-दूसरे की रचनात्मकता को परिष्कृत करते। यही कारण है कि इलाहाबाद को उस समय हिंदी साहित्य का काशी कहा जाने लगा और सुमित्रानंदन पंत इस आंदोलन के केंद्र में थे।

पंत की भाषा अत्यंत कोमल, संस्कृतनिष्ठ और संगीतात्मक रही। उनका मानना था कि कविता केवल विचार नहीं, संवेदना का संप्रेषण है। उनकी रचनाओं में एक विशिष्ट लय, एक अनूठा सौंदर्यबोध और एक आत्मिक गहराई है। उनकी कविताएं केवल पढ़ी नहीं जाती, उन्हें महसूस किया जाता है। उनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियां 'पल्लव', 'गुंजन', 'ग्राम्या', 'युगांत', 'लोकायतन' और 'चिदंबरा' भारतीय काव्य परंपरा में मील का पत्थर हैं। 'पल्लव' में जहां छायावादी सौंदर्यबोध अपने पूर्ण यौवन पर है, वहीं 'लोकायतन' और 'चिदंबरा' में उनका चिंतन समाजवादी, मानवतावादी और दार्शनिक दृष्टि से विकसित होता है। पंत केवल प्रकृति के कवि नहीं थे, वे समय के साथ बदलते रहे। आरंभ में जहां वे सौंदर्य और प्रकृति के उपासक थे, वहीं बाद में उन्होंने सामाजिक यथार्थ, वर्गसंघर्ष और आत्मान्वेषण को अपने काव्य में स्थान दिया। उनकी कविता की आत्मा जितनी सौम्य और भावुक थी, उनकी जीवनशैली उतनी ही सादी और संयमित थी। नैनीताल के पास स्थित 'पंत निवास' में वे अपने अंतिम वर्षों में अत्यंत साधारण जीवन जीते थे। उनका यह निवास आज भी एक साहित्यिक तीर्थ के रूप में जाना जाता है, जहां उनकी हस्तलिपियां, पुस्तकें और अन्य स्मृतियां संरक्षित हैं। उनकी हस्तलिपि अत्यंत सुंदर और कलात्मक मानी जाती थी। कहा जाता है कि वे जब कविता लिखते थे तो पृष्ठ को इतने सौंदर्य से सजाते थे, मानो कोई चित्रकार रंग भर रहा हो। वे पहले कलम की नोक को परखते थे, यह देखते कि वह ठीक से बह रही है या नहीं, उसके बाद लिखना आरंभ करते। उनके लिए कविता लेखन केवल बौद्धिक प्रक्रिया नहीं बल्कि एक साधना थी, जिसमें

शब्दों की आत्मा तक पहुंचने का प्रयास होता था।

सुमित्रानंदन पंत के जीवन से जुड़ी अनेक घटनाएं उनकी करुणा और मानवीय संवेदना की गहराई को उजागर करती हैं। एक बार एक युवा पाठक ने उन्हें पत्र लिखा कि उनकी कविता 'नव जीवन' ने उसे आत्महत्या से रोक दिया। यह पत्र पढ़कर पंत जी रो पड़े और उन्होंने कहा कि यदि मेरी कविता ने किसी जीवन को फिर से दिशा दी है तो मेरा समस्त लेखन सफल है। उनकी प्रसिद्ध कविता 'पुष्प की अभिलाषा' के बारे में कहा जाता है कि इसे उन्होंने अपने स्कूल के दिनों में एक प्रतियोगिता के लिए लिखा था, जो आगे चलकर राष्ट्रीय भावना की प्रतीक बन गई किंतु पंत कभी भी इस लोकप्रियता को लेकर आत्ममुग्ध नहीं हुए। उनका कहना था कि यदि कोई कविता जनमानस के हृदय में बस जाए तो वह अब मेरी नहीं, जन की हो जाती है। यह कथन एक सच्चे रचनाकार की मानसिकता को दर्शाता है, जो अपने सृजन को निजी संपत्ति नहीं, सामाजिक उत्तरदायित्व मानता है।

पंत को कई बार राजनीतिक मंचों से जुड़ने के प्रस्ताव मिले लेकिन उन्होंने सदैव साहित्य को ही अपना धर्म माना। वे कहा करते थे कि राजनीति क्षणिक हो सकती है पर कविता शाश्वत होती है। अपने काव्य के माध्यम से उन्होंने भारत की आत्मा को स्वर दिया। उनके लिए साहित्य केवल मनोरंजन या कला का माध्यम नहीं था बल्कि आत्मा का स्पर्श और सामाजिक जागरण का यंत्र था। उनकी आत्मकथात्मक टिप्पणियों में कुछ स्वप्नवत अनुभवों का उल्लेख भी मिलता है। वे कहते थे कि जब वे हिमालय की चोटियों पर अकेले चलते थे तो कभी-कभी उन्हें ऐसा प्रतीत होता था कि ब्रह्मांड की कोई अदृश्य शक्ति उनके भीतर उतर रही है। इन्हीं अनुभूतियों की परिणति 'चिदंबरा' जैसे दार्शनिक ग्रंथ में हुई, जिसमें आत्मा और ब्रह्म के संवाद को काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह रचना न केवल साहित्यिक दृष्टि से अपूर्व है बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चिंतन की भी एक अनूठी प्रस्तुति है।

पंत को बागवानी का भी अत्यंत शौक था। 'पंत निवास' के आसपास उन्होंने अपने हाथों से फूल-पौधे लगाए थे और वे प्रत्येक पौधे को नाम देते थे, जैसे कोई अपने बच्चों को देता है। उनकी प्रिय चंपा, बेला और गुलाब की क्यारियां आज भी वहां मौजूद हैं और ऐसा प्रतीत होता है, मानो पंत आज भी वहीं कहीं शब्दों की बगिया में ध्यानरत हैं। उनका अंतिम समय अत्यंत भावुक करने वाला था। कहा जाता है कि मृत्यु से कुछ दिन पहले उन्होंने एक कविता लिखी थी 'अब लौट चलें', जिसमें जीवन से विदा लेने की आत्मीय पुकार थी। यह कविता उनके निधन के कुछ दिन बाद प्रकाशित हुई और आज भी जब कोई पाठक इसे पढ़ता है तो उसकी आंखें नम हो जाती हैं। यह केवल एक विदाई नहीं थी, यह जीवन की पूर्णता की घोषणा थी, एक साधक का अंतिम प्रणाम।

सुमित्रानंदन पंत को भारत सरकार और विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें पद्मभूषण, साहित्य अकादमी पुरस्कार और ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रमुख हैं। 1968 में उन्हें उनके काव्य संग्रह 'चिदंबरा' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया, जो उस साधना की सार्वजनिक स्वीकृति थी, जो उन्होंने जीवनभर निभाई। पंत ने शब्दों को केवल भाषा में नहीं, चेतना में ढ़ाला। उन्होंने कवि को समाज का दीपक कहा, जो अंधकार में प्रकाश करता है। उनकी कविताएं आज भी उस दीपक की लौ की तरह जल रही हैं, जो आने वाली पीढ़ियों को सौंदर्य, करुणा और मानवता का मार्ग दिखाती रहेंगी। उनका स्मरण करना केवल किसी साहित्यकार को श्रद्धांजलि देना नहीं बल्कि उस आत्मचेतना का पुनर्जागरण है, जो हर युग में जीवन के अर्थ को फिर से खोजने के लिए जरूरी होती है। वे एक ऐसे कवि थे, जिन्होंने अपने समय से आगे देखा और जिनकी दृष्टि आज भी हमारे भविष्य को आलोकित करती है।

पुस्तक समीक्षा

प्रकाश कान्त

समीक्षक

हँसी के भीतर अपनी भाषा ढूँढती कविताएँ

दरमियानी तबके की एक आम स्त्री का अनुभव-संसार इन कविताओं का संसार है अनुभूत संसार। संग्रह की अधिकतर कविताएँ उसी से निकली हैं, जिनमें से ज़्यादातर स्त्री को लेकर या स्त्री की तरफ़ से हैं। स्त्री इन कविताओं की अनिवार्य उपस्थिति है। यह परिचित स्त्री है सामान्य नौकरी-पेशा घर-परिवारों की पढ़ी-लिखी स्त्री, अमूमन कामकाजी भी। घर-परिवार और अपने कार्यस्थल के बीच निरंतर दौड़ती-भागती, कई तरह की चिंताओं से ग्रस्त! अपने पिछले घर, पिता के घर को याद करती, उसकी खोज-ख़बर लेती। यह 'अबके बरस भेज भैया को बाबुल...' वाले फ़िल्मी गीत से आगे की स्त्री है, कई मामलों में आत्मनिर्भर। उसके जुड़ाव जीवंत हैं, छोटी-मोटी बाधाओं के बावजूद। यह स्त्री पिछले हज़ार वर्षों के सामाजिक ढाँचे द्वारा अपनी ज़रूरत के हिसाब से निर्मित और विकसित स्त्री है।

सुमन कुमावत के दूसरे कविता-संग्रह 'मेरी हँसी की भाषा' की भूमिका में वरिष्ठ कवि आशुतोष दुबे ने संग्रह की कुछ ख़ास बातों को रेखांकित किया है। इन कविताओं की प्रभावी कल्पना-प्रवणता, व्यक्त को अभिव्यक्त करने की विकलता और अमूर्त बिम्ब! साथ ही कविताओं में दर्ज स्मृति, उनमें अनुभव होते एकांत और जीवन की विडम्बनाओं को भी लक्षित किया है। स्त्रियों की अदृष्ट पीड़ा, घुटे हुए हाहाकार की अंतर्धारा, मार्मिकता और व्यंजकता को भी।

दरमियानी तबके की एक आम स्त्री का अनुभव-संसार इन कविताओं का संसार है अनुभूत संसार। संग्रह की अधिकतर कविताएँ उसी से निकली हैं, जिनमें से ज़्यादातर स्त्री को लेकर या स्त्री की तरफ़ से हैं। स्त्री इन कविताओं की अनिवार्य उपस्थिति है। यह परिचित स्त्री है सामान्य नौकरी-पेशा घर-परिवारों की पढ़ी-लिखी स्त्री, अमूमन कामकाजी भी। घर-परिवार और अपने कार्यस्थल के बीच निरंतर दौड़ती-भागती, कई तरह की चिंताओं से ग्रस्त! अपने पिछले घर, पिता के घर को याद करती, उसकी खोज-ख़बर लेती। यह 'अबके बरस भेज भैया को बाबुल...' वाले फ़िल्मी गीत से आगे की स्त्री है, कई मामलों में आत्मनिर्भर। उसके जुड़ाव जीवंत हैं, छोटी-मोटी बाधाओं के बावजूद। यह स्त्री पिछले हज़ार वर्षों के सामाजिक ढाँचे द्वारा अपनी ज़रूरत के हिसाब से निर्मित और विकसित स्त्री है। उसकी इच्छा, अपेक्षा, सपने इत्यादि इसी ढाँचे में तय हुए हैं और लंबे समय तक उसी द्वारा नियंत्रित भी रहे हैं। इधर की स्त्री में उस सब को लेकर बेचैनी, छटपटाहट रही है। संग्रह की कविताओं में यह स्त्री कई जगह नज़र आती है, प्रतीक्षारत, छूटे हुए घर-गलियों को याद करती, अपने दाम्पत्य जीवन को सहेजती, उसे आकार देती; अपने लिए अपना मनचाहा एकांत चाहती, उसे तलाशती, और मान-मनुहार के साथ माँ द्वारा दी जाने वाली आधी रोटी को याद करती।

इन कविताओं में कई तरह की स्त्रियाँ हैं, बूढ़ी, काम पर जातीं, कई जगहों से विस्थापित, अलग-अलग तरह की चीज़ों और चिंताओं में फँसी हुई। स्त्री को मालूम है कि पुरुष द्वारा उसके हिस्से की धूप छीनी गई है। उसकी इच्छा सम्पूर्ण रूप से मुक्त होने की भी है। उसकी स्मृतियों में उल्लास, मौन, थकान और हँसी की तलाश शामिल है। यह सब मिलकर स्त्री की भाषा की तलाश बन जाता है। इसके अलावा इन कविताओं में तारा, राग मल्हार, लिबास, पतझड़, तपिश, पलाश, धूप, चिड़िया, पिता जैसी अलग-अलग चीज़ें भी हैं।

इन कविताओं की भाषा स्त्री के लिए सदियों से स्थगित और वर्जित रखी गई भाषा की तलाश है। कविताओं की आत्मपरकता स्वाभाविक है, जिससे उनमें एक तरह की तरलता है। वे जड़ होने से बच पाई हैं। और जैसा कि आशुतोष दुबे ने कहा है, उनमें वे सारे बीज, पथ-चिह्न हैं जो अगली काव्य-यात्रा में निखरेंगे और विकसित होंगे।

काव्य संग्रहः मेरी हँसी की भाषा
लेखकः सुमन कुमावत
मूल्यः 200 रुपए
प्रकाशनः वेरा प्रकाशन, जयपुर

मुद्दा

सय्यद असीम अली

बांधवगढ़: शिकारगाह से टाइगर रिजर्व तक बेमिसाल संरक्षण यात्रा

भारत के प्रमुख टाइगर रिजर्वों में शामिल बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व आज केवल बाघों के लिए ही नहीं, बल्कि अपनी समृद्ध जैव विविधता, ऐतिहासिक विरासत और सफल वन्यजीव संरक्षण प्रयासों के कारण भी विश्वभर में प्रसिद्ध है। घने जंगलों, प्राचीन पहाड़ियों, दुर्लभ वन्यजीवों और प्राकृतिक जल स्रोतों से भरपूर बांधवगढ़ आज प्रकृति प्रेमियों और वन्यजीव फोटोग्राफरों की पहली पसंद बन चुका है।

भारत के प्रमुख टाइगर रिजर्वों में शामिल बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व आज केवल बाघों के लिए ही नहीं, बल्कि अपनी समृद्ध जैव विविधता, ऐतिहासिक विरासत और सफल वन्यजीव संरक्षण प्रयासों के कारण भी विश्वभर में प्रसिद्ध है। घने जंगलों, प्राचीन पहाड़ियों, दुर्लभ वन्यजीवों और प्राकृतिक जल स्रोतों से भरपूर बांधवगढ़ आज प्रकृति प्रेमियों और वन्यजीव फोटोग्राफरों की पहली पसंद बन चुका है।

कभी बांधवगढ़ का जंगल Maharajas of Rewa की निजी शिकारगाह हुआ करता था। यहां राजघराने द्वारा शिकार अभियानों का आयोजन किया जाता था। इसी धरती ने दुनिया को प्रसिद्ध सफेद बाघ 'Mohan' दिया, जिसे वर्ष 1951 में रीवा रियासत के महाराजा मार्तंड सिंह ने खोजा था। मोहन को विश्व के सभी सफेद बाघों का मूल माना जाता है।

समय के साथ अत्यधिक शिकार और मानवीय हस्तक्षेप के कारण जंगलों में वन्यजीवों की संख्या तेजी से घटने लगी। इसके बाद वन विभाग और सरकार ने संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए। पहले इसे राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया और बाद में वर्ष 1993 में बांधवगढ़ को आधिकारिक रूप से टाइगर रिजर्व का दर्जा मिला।

आज वन विभाग की सतत निगरानी, गश्त और वैज्ञानिक प्रबंधन के कारण बांधवगढ़ वन्यजीव संरक्षण का सफल मॉडल बन चुका है। बांधवगढ़ टाइगर रिज़र्व की पहचान केवल बाघों के लिए ही नहीं, बल्कि इसकी ऐतिहासिक और प्राकृतिक धरोहरों के लिए भी की जाती है। बांधवगढ़ में लगभग 582 एकड़ क्षेत्र में फैले 12 प्राचीन तालाब आज भी इस जंगल की जीवनरेखा माने जाते हैं। माना जाता है कि इन तालाबों का निर्माण प्राचीन काल में जल संरक्षण और वन्यजीवों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया गया था।

ये तालाब आज भी जंगल के पारिस्थितिकीय संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन तालाबों के आसपास फैले घने साल और सागौन के जंगल बांधवगढ़ की सुंदरता को और अधिक अद्भुत बनाते हैं। प्रकृति, इतिहास और वन्यजीवन का ऐसा अनोखा संगम बांधवगढ़ को देश के सबसे विशेष टाइगर रिजर्वों में शामिल करता है।

बांधवगढ़ में गौरों की वापसी भारत के सबसे सफल वन्यजीव पुर्नस्थापन अभियानों में गिनी जाती है। एक समय लगभग विलुप्त हो चुके गौर के संरक्षण के लिए मप्र वन विभाग ने वर्ष 2012 में गौर पुर्नस्थापन परियोजना शुरू की। 2026 में तीसरे चरण के तहत 27 गौरों का सफल ट्रांसलोकेशन किया गया, जिसका उद्देश्य उनकी आनुवंशिक विविधता को मजबूत करना था। धीरे-धीरे गौरों ने जंगल को अपना नया आवास बना लिया और उनकी संख्या बढ़ने लगी। वर्तमान में बांधवगढ़ में गौरों की संख्या लगभग 160 तक पहुंच चुकी है।

बांधवगढ़ टाइगर रिज़र्व लंबे समय से बाघों की धरती के रूप में प्रसिद्ध रहा है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में यहां एशियाई जंगली हाथियों की बढ़ती मौजूदगी ने जंगल के पारिस्थितिकी तंत्र में बड़ा बदलाव लाया है। वर्ष 2017-18 से ओडिशा और छत्तीसगढ़ के जंगलों से हाथियों के झुंड स्वाभाविक रूप से बांधवगढ़ पहुंचने लगे। उन्होंने स्वयं इस क्षेत्र को अपना नया आवास बनाया।

वन विभाग के अनुसार वर्तमान में बांधवगढ़ और आसपास के वन क्षेत्रों में लगभग 80 से 90 जंगली हाथी मौजूद हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि हाथी जंगल में नए रास्ते और घासभूमियां विकसित करते हैं, जिससे हिरण, सांभर, चीतल और बारहसिंगा जैसे शाकाहारी वन्यजीवों को लाभ मिलता है। साथ ही बीजों के प्रसार से जंगल का प्राकृतिक पुनर्जनन भी तेजी से होता है।

बांधवगढ़ टाइगर रिज़र्व के मगधी रेंज में विकसित लगभग 75 हेक्टेयर का बारहसिंगा संरक्षण क्षेत्र वन्यजीव संरक्षण की एक महत्वपूर्ण पहल है। एक समय मध्य भारत में बारहसिंगा बड़ी संख्या में पाए जाते थे, लेकिन शिकार, आवास की कमी और पर्यावरणीय बदलावों के कारण इनकी संख्या तेजी से घट गई। इसी को ध्यान में रखते हुए वन विभाग ने मगधी रेंज में इनके लिए यह विशेष संरक्षण क्षेत्र विकसित किया, क्योंकि यहां का घासभूमि और जल स्रोत इनके लिए अनुकूल हैं। परियोजना के सकारात्मक परिणाम अब दिखाई देने लगे हैं–बारहसिंगों की संख्या में वृद्धि हो रही है और उनका व्यवहार भी प्राकृतिक होता जा रहा है।

बांधवगढ़ टाइगर रिज़र्व का ताला जोन हमेशा से बाघों की शानदार गतिविधियों और रोमांचक सफारी अनुभवों के लिए प्रसिद्ध रहा है। लेकिन एक ही सफारी में 9 बाघों का दिखाई देना अपने आप में एक ऐतिहासिक और बेहद दुर्लभ घटना मानी गई। बाघों की मौजूदगी ने पर्यटकों और वन्यजीव प्रेमियों को रोमांच से भर दिया। यही कारण है कि अन्य टाइगर रिजर्वों की तुलना में भी बांधवगढ़ को 'शेरों का गढ़' कहा जाता है। यह अनुभव पर्यटकों के लिए जीवनभर याद रहने वाला पल बन गया।

पिछली गणना के अनुसार बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में लगभग 220 बाघों की मौजूदगी दर्ज की गई थी, जो वन्यजीव संरक्षण की दिशा में एक बड़ी उपलब्धि है। कि आने वाली गणनाओं में यह आंकड़ा और अधिक बढ़ सकता है।

बांधवगढ़ का नाम आते ही जिस बाघ की सबसे पहले चर्चा होती है, वह है प्रसिद्ध टाइगर 'बजरंग '। अपनी विशाल कद-काठी, दमदार चाल और प्रभावशाली मौजूदगी के कारण बजरंग केवल एक बाघ नहीं, बल्कि बांधवगढ़ की पहचान बन चुका है। देश ही नहीं बल्कि दुनिया भर के वन्यजीव प्रेमियों और फोटोग्राफरों के बीच भी उसकी अलग पहचान है। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक हर कोई उसकी एक झलक पाने के लिए उत्साहित रहता है। बजरंग ने न केवल पर्यटकों को आकर्षित किया है, बल्कि बांधवगढ़ को विश्वभर में नई पहचान दिलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

बांधवगढ़ के चर्चित नर बाघ 'पुजारी ' की मौत ने वन्यजीव प्रेमियों को गहरा दुख पहुंचाया। डी-1 टाइगर के साथ संघर्ष में पुजारी की मृत्यु हो गई, जिसने पर्यटकों, स्थानीय निवासियों और वन विभाग के कर्मचारियों को भावुक कर दिया। पुजारी वाइल्डलाइफ फोटोग्राफरों और पर्यटकों के बीच बेहद लोकप्रिय था। वह अक्सर कैमरों के सामने शानदार अंदाज में दिखाई देता था। स्थानीय लोगों ने उसका नाम 'पुजारी' इसलिए रखा था क्योंकि सुबह के समय वह ऐसी मुद्रा में दिखाई देता था, मानो सूर्य को प्रणाम कर रहा हो। उसकी मौत पर सोशल मीडिया पर उमड़ी यह संवेदनाएं इस बात का प्रमाण हैं कि पुजारी केवल एक बाघ नहीं, बल्कि लोगों की भावनाओं से जुड़ा हुआ एक जीवंत प्रतीक बन चुका था।

आज बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व केवल एक टाइगर रिजर्व नहीं, बल्कि सफल वन्यजीव संरक्षण, समृद्ध जैव विविधता और मानव-प्रकृति संबंध का जीवंत उदाहरण बन चुका है। वन विभाग, स्थानीय समुदाय और संरक्षण विशेषज्ञों के संयुक्त प्रयासों ने बांधवगढ़ को विश्व स्तर पर नई पहचान दिलाई है।

घने जंगलों में गूंजती बाघों की दहाड़, हाथियों की आवाजाही, गौरों के विशाल झुंड और प्राचीन पहाड़ियों के बीच बसे तालाब आज भी यह संदेश देते हैं कि यदि संरक्षण के प्रयास निरंतर और ईमानदारी से किए जाएं, तो प्रकृति स्वयं को फिर से जीवंत कर सकती है।

प्रभारी मंत्री ने जनसुनवाई में सुनी, नागरिकों की समस्याएं

सरकार की प्राथमिकता आम नागरिकों को समय पर राहत पहुंचाना : प्रभारी मंत्री

बैतूल। प्रदेश के लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री तथा बैतूल जिले के प्रभारी मंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित जनसुनवाई में आमजन की समस्याएं गंभीरता से सुनीं और अधिकारियों को जनहित से जुड़े मामलों का त्वरित निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री तथा बैतूल जिले के प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने कहा कि सरकार की प्राथमिकता आम नागरिकों को समय पर राहत पहुंचाना है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनसुनवाई में प्राप्त सभी आवेदनों का व्यवस्थित निराकरण सात दिनों के भीतर किया जाए, ताकि लोगों को दफ्तरों के चक्कर न लगाने पड़ें। लापरवाही पर संबंधित के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। जनसुनवाई में आमला तहसील के ग्राम अंधारिया निवासी रामकिशोर के सीमांकन संबंधी आवेदन पर प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने आमला एसडीएम को एक सप्ताह में आवेदक की समस्या का निराकरण किए जाने के निर्देश दिए। वहीं भयावाड़ी में नदी में अवैध उत्खनन की शिकायत पर शाहपुर एसडीएम को निरीक्षण के निर्देश दिए। बैतूल तहसीलदार द्वारा पट्टा वाला मकान तोड़े जाने की शिकायत पर प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने बैतूल एसडीएम को तत्काल निरीक्षण कर आवेदक की समस्या की निराकरण के निर्देश दिए। इसके अलावा भी प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने जनसुनवाई में आए ग्रामीणों की समस्याओं पर सुनवाई कर त्वरित निराकरण के निर्देश अधिकारियों को दिए। इस अवसर पर कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे और अपर कलेक्टर वंदना जाट ने भी नागरिकों की समस्याएं सुनीं। जनसुनवाई में सभी विभागीय अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित रहे।

भूमि का सीमांकन किए जाने के दिए निर्देश- जनसुनवाई में मुलताई तहसील के ग्राम बिरुल बाजार निवासी सुदर्शन ने अनावेदक द्वारा भूमि पर किए जा रहे अवैध कब्जे को रोकने के लिए आवेदन दिया, जिस पर कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने मुलताई एसडीएम को सीमांकन कर आवेदक की समस्या के निराकरण के निर्देश दिए। तिलक वार्ड टिकारी बैतूल निवासी राधाबाई यादव ने बिना सीमांकन किए उनकी भूमि पर मकान बनाए जाने की शिकायत की, जिस पर कलेक्टर ने बैतूल तहसीलदार को आवेदक की समस्या का निराकरण किए जाने के निर्देश दिए।

पट्टा नवीनीकरण किए जाने की मांग

मुलताई के शास्त्री वार्ड निवासी शंकरलाल सोनी ने पट्टा नवीनीकरण किए जाने के लिए आवेदन दिया, जिस पर कलेक्टर ने मुलताई एसडीएम को आवेदक की समस्या के निराकरण के निर्देश दिए। चिखलीमाल निवासी सुभाष यादव ने ग्राम में हैंडपंप स्वीकृत किए जाने के लिए आवेदन दिया। जिस पर कलेक्टर ने घोड़ाडोंगरी जनपद सीईओ को आवेदक की समस्या के निराकरण के निर्देश दिए। ग्राम मरामझिरी निवासी रामचरित यादव ने फसल नुकसान की शिकायत की। जिस पर कलेक्टर ने बैतूल तहसीलदार को आवेदक की समस्या के निराकरण के लिए निर्देशित किया। घोड़ाडोंगरी तहसील के ग्राम फुलबेरिया निवासी रुद्र सरकार ने ट्राईसाईकिल के लिए आवेदन दिया, जिस पर कलेक्टर ने सामाजिक न्याय विभाग एवं जिला शिक्षा अधिकारी को प्रकरण के निराकरण के निर्देश दिए। मुलताई निवासी योगेश पाटनकर ने जल योजना के तहत खुदी नाली को बराबर नहीं किए जाने की शिकायत की। जिस पर कलेक्टर ने जनपद पंचायत सीईओ को निरीक्षण कर प्रकरण के निराकरण के निर्देश दिए।

सेवा समर्पण और संस्कार हमारी कार्य पद्धति : हेमंत खंडेलवाल

भाजपा के दो दिवसीय जिला स्तरीय प्रशिक्षण वर्ग का समापन

बैतूल। भारतीय जनता पार्टी के पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान के अंतर्गत आयोजित दो दिवसीय जिला स्तरीय आवासीय प्रशिक्षण वर्ग के दूसरे दिन की शुरूवात योग एवं प्रार्थना से हुई। इसके पश्चात वर्ग के तहत कार्य पद्धति विषय पर संबोधित करते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि सेवा समर्पण और संस्कार हमारे कार्यकर्ता की पहचान है। हमारी पार्टी की पहचान कार्यकर्ताओं से है। संगठन की आत्मा हमारे प्रशिक्षित कार्यकर्ता है। राष्ट्र प्रथम के विचार के साथ केन्द्र में सेवा का भाव लेकर समर्पण के साथ अपने लक्ष्य के प्रति संस्कारो के साथ सतत संवाद करना हमें देश के अन्य राजनीतिक दलो से अलग करता है। श्री खंडेलवाल ने कहा कि प्रशिक्षण से जो आत्म विश्वास कार्यकर्ताओ का बढ़ता है उसका असर परिणामों पर भी दिखाई देता है। हम एक व्यक्ति की शांति के लिए नही करोड़ों कार्यकर्ताओं के सामुहिक प्रयास के लिए पहचाने जाते है। मै नही हम की भावना से आज हम हर क्षेत्र में सफल हो रहे है। किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष जयपाल सिंह चावडा ने कहा कि कार्यकर्ता ही संगठन के स्तंभ है।

हम कार्यकर्ता को महज सांधन नही संकल्प के रूप में देखते है। यहा उपस्थित हर कार्यकर्ता या पदाधिकारी को किसी न किसी ने जब पहली बार विचार परिवार मे लाया था तो हम इससे जुड़ते चले गए हमें उन्हे हमेशा याद रखना चाहिए। व्यक्ति विशेष के लिए हमारे कार्यकर्ता कार्य नही करते हम विचारो के लिए कार्य करते है। जब भी हम सार्वजनिक बैठक कार्यशाला या व्याख्यान में हो तो हमारे कार्यकर्ताओ के साथ स्नेह पूर्ण व्यवहार व गुण व क्षमता देखकर कार्य सौपने की परंपरा से हम कार्यकर्ता आधारित संगठन बने हुए है। इस सत्र की अध्यक्षता पूर्व विधायक चैतराम मानेकर ने की। प्रशिक्षण वर्ग के अंतिम व समापन सत्र में प्रदेश सरकार की उपलब्धियों पर बोलते हुए प्रदेश सरकार के राज्यमंत्री एवं जिले के प्रभारी मंत्री नरेन्द्रशिवाजी पटेल ने कहा कि 2003 के पहले का मध्यप्रदेश और 2003 के बाद का मध्यप्रदेश हमारी उपलब्धियों का ऐसा प्रमाण रखता है जिसे सिर्फ आकडो से नही ऑखो से देखकर समझ सकते हैं। 2003 के पहले किसानो के लिए न तो सिंचाई के साधन थे न तो सिंचाई का रकबा। डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में हम 100 लाख हेक्टे. भूमि की सिंचाई का लक्ष्य लेकर चल रहे हैं जिसका आधे से ज्यादा लक्ष्य हमने प्राप्त कर लिया है। इसी तरह 2003 के पहले एमएसपी नही हुआ करती थी आज हम अन्य अनाजो को भी इसमें जोड रहे है और भावान्तर दे रहे है।

स्वावलंबी भारत अभियान का एक दिवसीय जिला विचार एवं प्रशिक्षण वर्ग संपन्न

बैतूल। स्वदेशी विचार एवं आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को जन-जन तक पहुचाने के उद्देश्य से स्वावलंबी भारत अभियान का एक दिवसीय जिला विचार एवं प्रशिक्षण वर्ग भारती एग्रो क्लस्टर, महुपानी, खंडवा रोड बैतूल में संपन्न हुआ। कार्यक्रम तीन सत्रों में आयोजित किया गया, जिसमें स्वदेशी, जैविक उद्यमिता, महिला सहभागिता एवं आत्मनिर्भर भारत जैसे विषयों पर विस्तार से मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। प्रथम सत्र में अरुण मालवीया (विभाग पूर्णकालिक, नर्मदापुरम विभाग) ने स्वावलंबी भारत अभियान विषय पर अपने विचार रखते हुए कहा कि भारत की आर्थिक स्वतंत्रता का आधार स्वदेशी चिंतन एवं स्थानीय उद्यमिता है। उन्होंने युवाओं से रोजगार खोजने के बजाय रोजगार देने वाला बनने का आह्वान किया। साथ ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था, लघु उद्योग एवं स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया। इसके पश्चात श्रीमती हेमलता कुंभारे सह महिला कार्य प्रमुख, मध्य भारत प्रांत ने स्वदेशी में महिला कार्य की भूमिका विषय पर मार्गदर्शन देते हुए कहा कि भारतीय परिवार व्यवस्था एवं स्वदेशी संस्कारों के संरक्षण में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने महिलाओं को स्वरोजगार, कुटीर उद्योग एवं सामाजिक जागरण से जुड़ने का आह्वान किया। द्वितीय सत्र में राहुल कावले (जिला समन्वयक, स्वावलंबी भारत अभियान बैतूल) ने श्रद्धेय दत्तोपंत ठेंगड़ी जी के जीवन, विचार एवं संगठन निर्माण में उनके योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि ठेंगड़ी जी ने स्वदेशी आधारित आर्थिक मॉडल को भारत के भविष्य के लिए आवश्यक बताया था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रेम सूर्यवंशी संचालक, पार्थ एजेंसी बैतूल ने की। इसी क्रम में धर्मेंद्र सिंह परिहार जिला युवा आयाम प्रमुख ने जैविक उद्यमिता विषय पर अपने विचार रखते हुए प्राकृतिक खेती, जैविक उत्पाद एवं ग्रामीण आधारित रोजगार के महत्व को बताया। उन्होंने कहा कि जैविक खेती आर्थिक सशक्तिकरण का भी माध्यम बन सकती है। अंतिम सत्र में केशव दुबौलिया (दो क्षेत्र पश्चिम और मध्य क्षेत्र के संगठक स्वदेशी जागरण मंच) का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उन्होंने स्वदेशी की विकास यात्रा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत की संस्कृति, अर्थव्यवस्था एवं आत्मसम्मान का आधार स्वदेशी विचार ही है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से समाज के प्रत्येक वर्ग तक स्वदेशी विचार पहुचाने का आग्रह किया। कार्यक्रम में विपिन अग्रवाल (हनुमंत शुगर मिल) ने सफल उद्यमी के रूप में अपने अनुभव साझा किए तथा युवाओं को उद्योग एवं स्वरोजगार की दिशा में आगे बढने के लिए प्रेरित किया। साथ ही युवा उद्यमी महेंद्र पिंपलकर की भी विशेष उपस्थिति रही। इसी बीच वर्ग का मंच संचालन राजू आठनेरे द्वारा किया गया।

प्रसव के बाद महिला की मौत पर हंगामा, परिजन शव लेकर कलेक्ट्रेट पहुंचे

बैतूल। मुलताई सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में प्रसव के बाद एक महिला की मौत हो जाने पर मंगलवार को परिजनों ने जमकर हंगामा किया। परिजनों ने अस्पताल प्रबंधन पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए महिला का शव एंबुलेंस में रखकर कलेक्ट्रेट पहुंचकर जांच और कार्रवाई की मांग की। सूचना मिलने पर स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंचे और मामले की जांच का आश्वासन दिया। जानकारी के मुताबिक पारस ठानी गांव निवासी 30 वर्षीय रोशनी पवार, पति कमलनाथ पवार को सोमवार को प्रसूति के लिए मुलताई सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया था। रोशनी के पति कमलनाथ पवार पांढुर्णा की एक निजी कंपनी में एचआर पद पर कार्यरत हैं। परिजनों के अनुसार भर्ती के समय महिला की स्थिति सामान्य थी और उसके सभी स्वास्थ्य पैरामीटर भी सामान्य बताए गए थे। मंगलवार सुबह करीब 7.45 बजे रोशनी की सामान्य डिलीवरी हुई और उसने एक स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया। परिजनों का आरोप है कि डिलीवरी के बाद महिला को लगातार ब्लीडिंग शुरू हो गई, जो सुबह 10 बजे तक जारी रही। परिवार का कहना है कि हालत बिगड़ने के बावजूद समय पर उचित उपचार नहीं मिला और रेफर करने में भी देरी की गई। महिला के पति

कमलनाथ पवार ने आरोप लगाया कि जब स्थिति गंभीर हो गई, तब अस्पताल प्रबंधन ने रोशनी को रेफर किया, लेकिन रास्ते में ही उसकी मौत हो गई। उन्होंने बताया कि नवजात बच्चे को दूसरे निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। कमलनाथ ने कहा, हमने इलाज में कोई देरी नहीं की। मैं अपनी पत्नी को सुरक्षित रखना चाहता था, लेकिन अस्पताल में लापरवाही हुई है। मामले की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए।

शव लेकर पहुंचे कलेक्ट्रेट, जांच का आश्वासन

घटना के बाद परिजन शव को शव वाहन में रखकर कलेक्ट्रेट पहुंचे और स्वास्थ्य विभाग के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। मौके पर सीएमएचओ डॉ. मनोज हुरमाड़े, सिविल सर्जन डॉ. जगदीश घोरे और आरएमओ डॉ. रानू वर्मा पहुंचे। अधिकारियों ने परिजनों से चर्चा कर जांच का भरोसा दिलाया। इसके बाद शव को जिला अस्पताल भेजा गया, जहां स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. रूपा श्रीवास्तव और डॉ. देव प्रकाश तिवारी के पैनल ने पोस्टमार्टम किया। परिजनों के मुताबिक महिला के दस्तावेजों में हीमोग्लोबिन स्तर 10 दर्ज था और उसे खून की कोई कमी नहीं थी। यह उसकी दूसरी डिलीवरी थी। इससे पहले भी उसका सामान्य प्रसव हो चुका था। परिवार का आरोप है कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में प्रसव और उसके बाद उपचार में गंभीर लापरवाही बरती गई, जिसके कारण रोशनी पवार की मौत हुई।

कतिया समाज की बैठक सूर्यवंशी के निवास पर सम्पन्न हुई

सोहागपुर। कतिया समाज की उप समिति की बैठक भाजपा नेता एवं कतिया समाज के जिला नर्मदापुरम उपाध्यक्ष नितिन कुमार सूर्यवंशी के निवास पलास परिसर में आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता नितिन सूर्यवंशी ने की। इस बैठक में जिला कतिया समाज समिति नर्मदापुरम के अध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार अमरवंशी ,किरेश प्रसाद आरसे नर्मदापुरम एवं माननीय ब्रजकिशोर पठारिया जिला पंचायत सदस्य विशेष रूप से उपस्थित थे। इसके अलावा सर्वश्री राधेश्याम अमरवंशी,के.एल. ब्राह्मवंशी, परमसुख पठारिया, गोविंद ब्रह्मवंशी, लखन लाल नागवंशी, तरुण सूर्यवंशी, ठाकुर दास,छगनलाल पगारे, रितेश कुमार, राजेश पठारिया ,नितेश सूर्यवंशी, राजू पठारिया समनापुर, मातृशक्ति श्रीमती गौरी, श्रीमती देवा सूर्यवंशी, श्रीमती जिजनबाई अमरवंशी, आनंद अमरवंशी, सुंदरलाल आदि गणमान्य नागरिकों की उपस्थित में

संम्पन्न हुई। इस गरिमामय कार्यक्रम में सर्वप्रथम मां सरस्वती की पूजन अर्चन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इसके बाद में संत भूरा भगत, एवं मां नर्मदा की पूजन अर्चना अतिथियों ने की। श्री नितिन सूर्यवंशी आदि अतिथियों ने जिला अध्यक्ष का आर.बी. सूर्यवंशी का शाल एवं श्रीफल से सम्मान किया गया । इसके साथ जिला पंचायत सदस्य का पुष्पहारों से आपका स्वागत किया गया। बैठक में अनुशासन, नैतिकता व सामाजिक मर्यादा मुख्य चर्चा का विषय रहा। जिसमें सामाजिक मर्यादा पर मुख्य चर्चा का बिन्दु रहा। इसके पश्चात उप समिति के गठन के विषय में चर्चा की गई। जिसमें समिति बनाने हेतु सदस्यता अभियान चलाने एवं न्यूनतम राशि रू. 5 सौ रूपये की राशि सर्व समिति से निर्धारित की गई।

समिति सोहागपुर विकासखंड के लगभग 25 ग्रामों से लगभग 75 सदस्यों को 15 जून तक बनाने हेतु कार्य सोंपा गया। इसके उपरांत 5 जुलाई 2026 को चुनाव की प्रक्रिया की तिथि निर्धारित की गई ।इसके अलावा भी कई विषय विषयों पर चर्चाएं की गई। कार्यक्रम में उपस्थित जनों ने अपने अपने विचार व्यक्त किए। इस बैठक में मातृशक्ति ने भी अपनी भागीदारी के निभाई। महिला को भी समाज में विशेष सहभागिता प्रदान करने का महत्वपूर्ण चर्चा की गई ।इस बैठक में कार्यक्रम के परिवर्तन का पूरा अधिकार जिला कतिया समाज समिति के सचिव के पास रहेगा। अंत में रामभरोस सूर्यवंशी ने आभार व्यक्त किया।

लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री श्री पटेल ने वंदे भारत ट्रेन से किया सफर

प्रधानमंत्री के सार्वजनिक परिवहन उपयोग के आह्वान को किया आत्मसात

बैतूल। मध्यप्रदेश शासन के लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री तथा बैतूल जिले के प्रभारी मंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने मंगलवार को अपने प्रभार के जिले बैतूल पहुंचने के लिए वंदे भारत ट्रेन से यात्रा कर मितव्ययता एवं सार्वजनिक परिवहन के उपयोग का संदेश दिया। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा देशवासियों से ईंधन की बचत तथा सार्वजनिक परिवहन के अधिकाधिक उपयोग की अपील की है। इसी क्रम में प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने भोपाल से बैतूल रेलवे स्टेशन तक वंदे भारत ट्रेन में यात्रा की। इस अवसर पर मंत्री श्री पटेल ने कहा कि सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था न केवल ईंधन बचत में सहायक है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण और यातायात दबाव कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने आमजन से भी दैनिक जीवन में सार्वजनिक परिवहन को अपनाने की अपील की।

जगन्नाथ परम्परा में तुझमें,मुझमें का भेद नहीं है, उत्थान पतन सामाजिक प्रक्रिया है , उड़ीसा में कल्कि अवतार होगा : डॉ. काशीनाथ मिश्र उड़ीसा

(हीरालाल गोलानी)

भोपाल। जगन्नाथ संस्कृति परम्परा, जगन्नाथ महाप्रभु में तुझमें मुझमें का भेद नहीं है। उत्थान एवं पतन सामाजिक प्रक्रिया है समाज के नागरिकों को विचार करके गरीब,जीव, जन्तु चांडाल सबको एक समान दर्जा दो। मनुष्य को मन की बढ़ाई से बचना चाहिए। आजकल हर व्यक्ति को पराएं का सुख देकर स्वयं दुःखी होता है। मैं समस्त नागरिकों एवं मातृशक्ति को सलाह देता हूं कि इस विकृति से अलग होना पड़ेगा। मानव मात्र को अपना जीवन सार्थक बनाने का प्रयास करना चाहिए। इसका सरल उपाय आपको बतलाता हूं। श्रीमद्भागवत कथा का कम से कम एक अध्याय को आवश्यक पढ़ें। समस्त कल्याणकारी है। मैं किसी को अपना शिष्य नहीं बनाता हूं।आप सभी को सलाह देता हूं कि आप भगवान् जगन्नाथ प्रभु को अपना जीवन समर्पित करके उसको गुरु बना लें। उक्त उद्गार

जगन्नाथ संस्कृति के विशारद विद्वान पंडित डॉ काशीनाथ मिश्र जी ने भोपाल गर्ल्स स्कूल परिसर पंचवटी कालोनी में कहें। उक्त श्रीमद्भागवत कथा, भविष्य मालिका पुराण का सप्त दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन श्रीमती नीरजा गोलानी खूबचदानी एवं पंकज खूबचदानी इन्द्र विहार कालोनी के द्वारा किया जा रहा है।

महंतों का आगमन- भोपाल गर्ल्स स्कूल पंचवटी परिसर उस समय धन्य हो गई जब कथा चतुर्थ दिवस उक्त आयोजन में महामंडलेश्वर स्वामी अनिल आनंद जी खाटूश्यामजी मंदिर सिन्धी कालोनी, श्री महंत कन्हैया दासजी महाराज, महंत लोकनाथ योगी जी महंत विनोद जी उदासी, पंडित श्री पवन दुबे, पंडित श्री राधावल्लभ पाठक कथा श्रवण करने पहुंचे। उपस्थित जनों उनका करतल ध्वनि से स्वागत किया।उनका डाक्टर काशीनाथ मिश्र उड़ीसा ने अभिवादन किया। इसी अवसर पर महामंडलेश्वर सहित समस्त सम्माननीय संतों ने डाक्टर काशीनाथ जी मिश्र का शाल पहनाकर स्वागत किया। वहीं डा काशीनाथ मिश्र उड़ीसा ने भी समस्त सम्माननीय संतों का शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर महामंडलेश्वर स्वामी अनिल आनंद जी महाराज खाटूश्यामजी मंदिर सिन्धी कालोनी भोपाल ने श्रद्धालुओं भक्तों को संबोधित करते हुए कहा इस धरा पर जगन्नाथ संस्कृति के डॉ. काशीनाथ जी मिश्र जैसे संतों का आगमन पंचवटी कालोनी के समस्त जनों के लिए ईश्वर शुभ संकेत है।

कार्यालय नगर पालिका परिषद बैतूल (म.प्र.)

क्रमांक/लो.नि.शा./ई./1936 से 1938 बैतूल दिनांक 15/05/2026

//ई-टेन्डर आमंत्रण सूचना//

(प्रथम निविदा आमंत्रण सूचना)

निम्नलिखित कार्य हेतु केन्द्रीकृत प्रणाली में पंजीकृत ठेकेदारों से ऑन लाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा का विस्तृत विवरण वेबसाइट https://mptenders.gov.in/nicgep/app पर देखा जा सकता है।

क्र.	ऑनलाईन निविदा क्र.	कार्य / सामग्री का विवरण	कार्य की समयावधि एवं लागत	निविदा प्रपत्र का मूल्य एवं EMD	निविदा की अंतिम तिथि
1	2026_UAD_507616_1	CONSTRUCTION OF RCC DRAIN OXFORD SCHOOL TO BABU SETH HOUSE ARYA WARD BETUL	1- 30 Days 2-170950/-	1-1000/- 2- 3400/-	01/06/2026
2	2026_UAD_507617_1	CONSTRUCTION OF TIN SHED IN ANGANWADI JAWAHAR WARD BETUL	1- 30 Days 2-163637/-	1-1000/- 2-3300/-	01/06/2026
3	2026_UAD_507618_1	CONSTRUCTION OF LT LINE AT NAGLE HOUSE TO SHRIWASTAV HOUSE AND DEEPAK YADAV RAJU RATHORE HOUSE UNDAR BETUL ZONE 01 VIKASH WARD BETUL	1- 30 Days 2-164549/-	1- 1000/- 2- 3100/-	01/06/2026

नोट :- निविदा से संबंधित किसी भी प्रकार के संशोधन का प्रकाशन ऑनलाईन https://mptenders.gov.in/nicgep/app की वेबसाईड पर ही किया जावेगा, पृथक से समाचार पत्र में प्रकाशन नहीं किया जावेगा।

नवनीत पाण्डेय, सीएमओ, नगर पालिका परिषद बैतूल

जल संवाद में पर्यावरण पत्रकार कुमार सिद्धार्थ सम्मानित

इंदौर। नागपुर में आयोजित राष्ट्रीय स्तर के 'जल संवाद-2026' में पर्यावरण पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए इंदौर के पर्यावरण पत्रकार कुमार सिद्धार्थ को सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी एवं पद्म विभूषण से अंलकृत पर्यावरणविद् अनिल प्रकाश जोशी ने शाल, प्रतीक चिन्ह और सम्मान पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

कुमार सिद्धार्थ को यह सम्मान उन्हें पर्यावरण संरक्षण, जल प्रबंधन और प्रकृति से जुड़े विषयों पर लंबे समय से किए जा रहे लेखन कार्य एवं जनजागरण के लिए प्रदान किया गया। देशभर से आए जल विशेषज्ञों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और पर्यावरण क्षेत्र से जुड़े प्रतिनिधियों की उपस्थिति में आयोजित इस समारोह में उनके योगदान की विशेष सराहना की गई।

कुमार सिद्धार्थ पिछले लगभग तीन दशकों से पर्यावरण, जल संरक्षण, जैव विविधता, प्रकृति संरक्षण और सतत विकास जैसे विषयों पर लगातार लेखन कर रहे हैं।

कुमार सिद्धार्थ पिछले 25 वर्षों से सर्वोदय प्रेस सर्विस (सप्रेस), इंदौर, पर्यावरण विकास पत्रिका के संपादन तथा पर्यावरण डाइजेस्ट (रतलाम) जैसे प्रकाशनों से भी जुड़े हैं।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने जताया शोक

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता व उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री, सेवानिवृत्त मेजर जनरल श्री भुवन चंद्र खंडूरी के निधन पर शोक व्यक्त किया है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने एवं परिजनों को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

एम्स भोपाल ने किया चौथा सफल हृदय प्रत्यारोपण

भोपाल। एम्स भोपाल ने चौथा हृदय प्रत्यारोपण सफलतापूर्वक पूरा कर एक और ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज की है। यह हृदय एक ब्रेन-डेड मरीज से प्राप्त किया गया था। उनके परिजनों ने मानवता और अंगदान की भावना को सर्वोपरि रखते हुए अंगदान के लिए सहमति प्रदान की, जिसके कारण यह जीवनरक्षक प्रत्यारोपण संभव हो सका।

प्रत्यारोपण प्राप्त करने वाली 26 वर्षीय महिला मरीज भोपाल की निवासी थी, जो पोस्ट पार्टम डाइलेटेड कार्डियोमायोपैथी से पीड़ित थी। मरीज को 25 अप्रैल 2026 को एम्स भोपाल में भर्ती किया गया था और उसी दिन सफलतापूर्वक हृदय प्रत्यारोपण किया गया। विशेषज्ञ चिकित्सकीय देखरेख, निरंतर निगरानी और उपचार के बाद मरीज के स्वास्थ्य में उल्लेखनीय सुधार हुआ तथा 19 मई को उसे स्वस्थ अवस्था में अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

प्रत्यारोपण की इस जटिल प्रक्रिया को कार्डियोथोरेसिक एवं वैस्कुलर सर्जरी (सीटीवीएस) विभाग की विशेषज्ञ टीम ने उच्च दक्षता और समन्वय के साथ अंजाम दिया। एम्स में चिकित्सको व अन्य टीम ने प्रत्यारोपण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाई।

एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक एवं सीईओ प्रो. (डॉ.) माधवानन्द कर ने इस सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि एम्स भोपाल द्वारा चौथे सफल हृदय प्रत्यारोपण का संपन्न होना संस्थान की उन्नत चिकित्सा सेवाओं और विशेषज्ञता का प्रमाण है। व उन्होंने अंगदान करने वाले परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया ।

संक्षिप्त समाचार

सीएम हेल्पलाइन शिकायतों के त्वरित निराकरण पर जोर

विदिशा (निप्र)। प्रभारी कलेक्टर श्री अनिल कुमार डामोर ने आज जिले में सीएम हेल्पलाइन के लंबित आवेदनों की गहन समीक्षा करते हुए सभी विभागों के अधिकारियों को शिकायतों के समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निराकरण के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी विभाग सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए विशेष ध्यान दें, ताकि जिला एक ग्रेड सूची में शामिल होकर बेहतर रैंकिंग प्राप्त कर सके। बैठक में प्रभारी कलेक्टर श्री डामोर ने विभागवार लंबित शिकायतों की स्थिति की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को निर्देशित किया कि आवेदनों के निराकरण में अनावश्यक विलंब न किया जाए। उन्होंने कहा कि शिकायतों का समाधान स्थानीय स्तर पर ही प्राथमिकता के साथ किया जाए, जिससे आमजन की समस्याओं का त्वरित एवं प्रभावी निराकरण सुनिश्चित हो सके। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि शिकायतकर्ता से सतत संवाद बनाए रखते हुए समाधान की प्रक्रिया को पारदर्शी बनाया जाए। साथ ही निराकृत प्रकरणों में संतुष्टि स्तर बेहतर रखने के लिए गंभीरता से कार्य करने के निर्देश दिए गए। प्रभारी कलेक्टर ने जिले की मासिक ग्रेडिंग एवं रैंकिंग सुधारने के लिए विभागीय समन्वय, नियमित मॉनिटरिंग तथा जवाबदेही सुनिश्चित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि सीएम हेल्पलाइन शासन की महत्वपूर्ण जनकल्याणकारी व्यवस्था है, जिसके माध्यम से नागरिकों की समस्याओं का समाधान प्राथमिकता के साथ किया जाना आवश्यक है। कलेक्ट्रेट के बेतवा सभागार में आयोजित इस बैठक में जिला पंचायत सीईओ श्री ओपी सनोडिया समेत विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

कृषक कल्याण वर्ष 2026 के तहत हरदा में कृषि रथ का हुआ शुभारंभ

हरदा (निप्र)। कृषक कल्याण वर्ष 2026 के उपलक्ष्य में शनिवार को जिला हरदा में 'कृषि रथ' अभियान का शुभारंभ किया गया। इसके साथ ही टिमरनी एवं खिरकिया विकासखंडों में भी तीन कृषि रथों का संचालन शुरू हुआ, जो आगामी 10 दिनों तक ग्राम पंचायतों का भ्रमण करेंगे। जिले के कृषि रथ को जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री दर्शनसिंह गहलोत, भाजपा जिला अध्यक्ष श्री राजेश वर्मा, उप संचालक कृषि श्री जे.एल. कासदे, कृषि वैज्ञानिक डॉ. पुष्पा झरिया, पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. सत्यनारायण बांके एवं अन्य विभागीय अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उप संचालक श्री कास्दे ने बताया कि कृषि रथ के माध्यम से जिले की ग्राम पंचायतों में पहुंचकर किसानों को ई-विकास प्रणाली से उर्वरक वितरण व एग्री स्टैक पर फार्मर आईडी बनाने, संतुलित उर्वरक उपयोग, जैविक एवं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा, मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना, कीट एवं रोग प्रबंधन, नरवाई प्रबंधन, फसल विविधीकरण, कृषि को लाभकारी बनाने के उपाय व विभाग की जनकल्याणकारी योजनाएं, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना सहित शासन की अन्य योजनाओं का प्रचार-प्रसार किया जाएगा। कृषि रथ में कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक तथा कृषि, आत्मा परियोजना, पशुपालन, उद्यानिकी विभाग के अधिकारी-कर्मचारी प्रतिदिन मौजूद रहकर किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन देंगे। कृषि रथ रोजाना 3 से 4 ग्राम पंचायतों का भ्रमण कर किसानों से सीधे संवाद कर उन्हें आधुनिक कृषि तकनीकों एवं योजनाओं से लाभान्वित करेगा। कार्यक्रम में सभी जनप्रतिनिधिगण एवं संबंधित विभागों के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय डेंगू दिवस पर दिलाई डेंगू नियंत्रण की शपथ

हरदा (निप्र)। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी 16 मई को राष्ट्रीय डेंगू दिवस 'डेंगू नियंत्रण के लिए जनभागीदारी, जाँच करें, सफाई करें और ढके' थीम पर मनाया गया। इस अवसर पर जिला मुख्यालय सहित सभी स्वास्थ्य संस्थाओं पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एच.पी. सिंह ने कर्मचारियों व आमजन को डेंगू नियंत्रण की शपथ दिलाई। उन्होंने अपील की कि टंकियों, कूलरों व अन्य पात्रों में जमा पानी में हर तीन दिन में मच्छर के लार्वा की जाँच करें, सफाई करें और पानी को ढककर रखें। डॉ. सिंह ने कहा, 'डेंगू फैलाने वाला एडीज मच्छर साफ व रुके हुए पानी में अंडे देता है। इसलिए घर व आस-पास पानी जमा न होने दें और निकासी की व्यवस्था करें। डेंगू नियंत्रण के लिए हम सभी की जागरूकता और सहभागिता जरूरी है।' इस अवसर पर जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया तथा सभी स्वास्थ्य संस्थाओं पर शपथ ग्रहण कार्यक्रम हुए। ग्रामों में नारा लेखन, ऑटो से माइकिंग व पंपलेट वितरण कर लोगों को जागरूक किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सिंह ने बताया कि डेंगू से संक्रमित होने के 4-7 दिन में तेज बुखार, सिरदर्द, मांसपेशी-हड्डी-जोड़ों में दर्द, उल्टी, आंखों में दर्द, त्वचा पर लाल चकते, सांस लेने में कठिनाई, थकान, चिड़चिड़ापन जैसे लक्षण दिखाई देते है।

भुवनेश्वर में पूर्वी क्षेत्रीय कृषि सम्मेलन का केंद्रीय मंत्री शिवराज और ओडिशा के मुख्यमंत्री मांझी ने किया उद्घाटन

पूर्वी भारत बन सकता है देश के कृषि विकास का ग्रोथ इंजन : शिवराज सिंह चौहान

भुवनेश्वर/ नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने मंगलवार को भुवनेश्वर के मेफेयर कन्वेंशन में ओडिशा के मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण मांझी के साथ पूर्वी क्षेत्रीय कृषि सम्मेलन का उद्घाटन किया। केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने पूर्वी भारत की कृषि को अधिक उत्पादक, टिकाऊ, वैज्ञानिक और लाभकारी बनाने का सशक्त आह्वान किया। ओडिशा, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल से जुड़े इस महत्वपूर्ण सम्मेलन में दलहन-तिलहन उत्पादन, छोटी जोत वाले किसानों के लिए इंटीग्रेटेड फार्मिंग, प्राकृतिक खेती, किसान रजिस्ट्री, बागवानी, कृषि ऋण, विपणन, नकली कृषि आदानों पर नियंत्रण और किसान आय वृद्धि जैसे विषयों पर व्यापक चर्चा का खाका रखा गया।

पूर्वी क्षेत्रीय कृषि सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि यह आयोजन केवल औपचारिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि पूर्वी भारत की कृषि, किसानों की आजीविका और क्षेत्रीय कृषि रणनीति को नई दिशा देने के लिए गंभीर विचार-विमर्श का मंच है। श्री चौहान ने कहा कि महाप्रभु जगन्नाथ की पावन धरती पर एकत्र हुई यह टीम एग्रीकल्चर पूर्वी भारत की खेती की हालत को बेहतर बनाने और किसानों की आय बढ़ाने के संकल्प के साथ बैठी है। उन्होंने पूर्वी भारत की उर्वरा भूमि, जल उपलब्धता, विविध जलवायु और किसानों की मेहनत को इस क्षेत्र की सबसे बड़ी ताकत बताते हुए कहा कि थोड़े से सही प्रयासों से यही क्षेत्र भारत के कृषि विकास का ग्रोथ इंजन बन सकता है।

केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने किसानों को केवल अन्नदाता नहीं, बल्कि जीवनदाता बताते हुए कहा कि किसानों की सेवा ही भगवान की पूजा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश विकसित, आत्मनिर्भर, समृद्ध और शक्तिशाली भारत की ओर बढ़ रहा है और इस यात्रा की रीढ़ कृषि है। उन्होंने कृषि के सामने तीन प्रमुख लक्ष्य रखे- 140 करोड़ देशवासियों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना, पोषणयुक्त आहार उपलब्ध कराना और किसानों की बेहतर आजीविका व आय वृद्धि सुनिश्चित करना।

शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि उत्पादन बढ़ाना, लागत घटाना, उपज का उचित मूल्य सुनिश्चित करना, नुकसान होने पर भरपाई करना और कृषि का विविधीकरण करना आज की सबसे बड़ी जरूरत है। उन्होंने विशेष रूप से कहा कि केवल धान और गेहूं से काम नहीं चलेगा, बल्कि दलहन, तिलहन, फल, सब्जियां और अन्य उच्च मूल्य फसलों की ओर भी आगे बढ़ना होगा, क्योंकि पूर्वी भारत में इन सभी क्षेत्रों में अपार संभावनाएं हैं।

उन्होंने कहा कि पूर्वी राज्यों में छोटी जोत एक बड़ी वास्तविकता है, इसलिए इंटीग्रेटेड फार्मिंग को केवल नारा नहीं, बल्कि जमीन पर उतरा हुआ मॉडल बनाना होगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि अनाज के साथ फल, सब्जियां, मछली पालन, पशुपालन, मधुमक्खी पालन और कृषि वानिकी जैसी गतिविधियों को जोड़कर छोटे किसान की आय में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है। उन्होंने आईसीएआर, कृषि मंत्रियों और अधिकारियों से आग्रह किया कि इंटीग्रेटेड फार्मिंग के मॉडल किसानों तक प्रेरक और व्यवहारिक रूप में पहुंचें।

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह ने टिकाऊ कृषि की दिशा में मृदा स्वास्थ्य की रक्षा को अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि संतुलित उर्वरक उपयोग पर विशेष ध्यान देना होगा। उन्होंने कहा कि बिना मृदा परीक्षण के अंधाधुंध खाद का प्रयोग खर्च भी बढ़ाता है और धरती की सेहत भी बिगाड़ता है, इसलिए किसानों को आवश्यकतानुसार ही उर्वरक उपयोग के लिए प्रेरित करना होगा। उन्होंने प्राकृतिक खेती को भी प्रधानमंत्री के फोकस का क्षेत्र बताते हुए किसानों से अपनी जमीन के एक हिस्से में प्राकृतिक खेती अपनाने का आग्रह किया।

श्री चौहान ने बताया कि 1 जून से खेत बचाओ अभियान शुरू किया जाएगा, जिसके माध्यम से संतुलित खाद उपयोग, मिट्टी की सेहत, आधुनिक तकनीक, योजनाओं की जानकारी और किसान जागरूकता पर विशेष बल दिया जाएगा। मुख्यमंत्री श्री मांझी ने कहा कि ओडिशा मूल रूप से कृषि प्रधान राज्य है और कृषि यहां की आजीविका, खाद्य सुरक्षा तथा सामाजिक-आर्थिक विकास का मुख्य आधार है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार कृषि को अधिक समावेशी, जलवायु अनुकूल और किसान-केंद्रित बनाने के लिए प्रतिबद्ध है तथा इसी दिशा में अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं।

सभी नागरिक क्यूआर कोड स्केन कर स्वच्छता सर्वेक्षण फीडबैक में करें सहभागिता : आयुक्त श्री भोंडवे

सीहोर (निप्र)। नगरीय विकास एवं आवास आयुक्त श्री संकेत भोंडवे ने कहा है कि स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) के अंतर्गत आयोजित होने वाले विश्व के सबसे बड़े स्वच्छता सर्वेक्षण 2025-26 में मध्यप्रदेश अपनी संकल्पबद्धता और जन-सहयोग के अनूठे संगम के साथ अग्रणी भूमिका निभा रहा है। प्रदेश के कुल 406 नगरीय निकायों में स्वच्छता के प्रति जो उत्साह और चेतना जाग्रत हुई है, उसका प्रत्यक्ष प्रमाण नागरिकों द्वारा अब तक दर्ज कराए गए 19 लाख से अधिक फीडबैक हैं। यह संख्या न केवल नागरिकों की अपनी शहर की स्वच्छता के प्रति सजगता को दर्शाती है, बल्कि यह प्रदेश की उस सामूहिकता का भी परिचायक है जो मध्यप्रदेश को स्वच्छता के शिखर पर बनाए रखने के लिए तत्पर है। विभाग द्वारा इस विशाल जन-समर्थन को एक सकारात्मक संकेत के रूप में देखा जा रहा है, जो आगामी रैंकिंग में प्रदेश के शहरों की स्थिति को और अधिक सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

जल संरक्षण के संकल्प के साथ सापना नदी के भवानी घाट पर हुआ श्रमदान

बैतूल (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान के द्वितीय चरण के अंतर्गत रविवार को बैतूल बाजार की जीवनदायिनी सापना नदी के भवानी घाट पर विशाल श्रमदान कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद की नगर विकास प्रस्फुटन समिति एवं नगर परिषद बैतूल बाजार के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। कार्यक्रम में जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष श्री मोहन नागर ने उपस्थित श्रमदानियों से जल संवाद करते हुए कहा कि सापना नदी ने पूरे क्षेत्र को हराभरा एवं समृद्ध बनाया है, लेकिन वर्तमान में यह नदी जल संकट एवं प्रदूषण की समस्या से जूझ रही है। उन्होंने कहा कि हमारी पीढ़ी ने नदियों को सदानीरा एवं स्वच्छ रूप में देखा है और अब यह जिम्मेदारी हम सभी की है कि आने वाली पीढ़ियों को भी स्वच्छ एवं बहती नदियां सौंपें। कार्यक्रम में नगर विकास प्रस्फुटन समिति, जनप्रतिनिधियों, सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों के 100 से अधिक पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने नदी तट की स्वच्छता के लिए श्रमदान किया तथा जल संरक्षण का संदेश दिया। उपस्थित बुजुर्गों ने बताया कि पूर्व में गर्मी के दिनों में भी सापना नदी में पर्याप्त जल रहता था तथा लोग इसमें स्नान किया करते थे।

श्रमदान कार्यक्रम में नगर विकास प्रस्फुटन समिति बैतूल बाजार के अध्यक्ष श्री उमेश राठौर, सचिव श्री अभिषेक राठौर, पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष श्री सुधाकर पवार, पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष श्री नरेन्द्र शुक्ला, श्री संजय वर्मा, श्री जितेन्द्र वर्मा, रमेश पवार, कृष्ण कुमार वर्मा, दीपक वर्मा, विवेक शुक्ला, अरविंद राठौर, अजय पवार, अनूप वर्मा, भूपेन पवार, सुभाष राठौड़, दीपक राठौर, सुनील पवार, सुरेन्द्र राठौर, विक्रम ईथापे, पंकज लोणारे, प्रदीप लोणारे, सारंग पात्रिकर, मनोज पवार, धर्मेन्द्र खवसे, रमेश चंद्र पवार, राजेश पवार सहित सिंह वाहिनी दुर्गा मंडल, गायत्री परिवार, योग परिवार, दुर्गा मंडल बाजार चौक, नवांकुर संस्थाओं एवं नगर के अनेक सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में परिषद की जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी, पर्यावरण प्रमुख श्री अमोल पानकर, नगर परिषद बैतूल बाजार के सी.एम.ओ. श्री देशमुख एवं नगर परिषद आमला का अमला भी सहभागी रहा।

बिजली उपभोक्ता सायबर जालसाजों से सावधान रहें : मंत्री श्री तोमर

बिजली बिल का भुगतान बिजली कंपनी के अधिकृत पेमेंट गेटवे अथवा बिजली कंपनी के कैश काउण्टर पर ही करें

सीहोर (निप्र)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बिजली उपभोक्ताओं से अपील की है कि वे अपने बिजली बिलों का नगद भुगतान कंपनी के जोन, वितरण केन्द्र कार्यालय, पीओएस मशीन अथवा अधिकृत भुगतान केन्द्रों जैसे एम.पी.ऑनलाइन, कॉमन सर्विस सेंटर पर ही करें। उपभोक्ताओं को बिजली बिलों के केशलेस भुगतान के लिये कंपनी के पोर्टल (नेट बैंकिंग, क्रेडिट/डेबिट कार्ड, यूपीआई, ईसीएस, बीबीपीएस, कैश कार्ड एवं वॉलेट आदि) फोन पे, अमेजान पे, गूगल पे, पेटीएम ऐप, व्हाट्सएप पे एवं उपाय मोबाइल ऐप के माध्यम से भी बिल भुगतान की सुविधा उपलब्ध है। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कहा है कि उपभोक्ता को असमय विद्युत विच्छेदन से बचने के लिए किसी निजी मोबाईल नंबर से कॉल कर भुगतान करने के लिये कोई एसएमएस/ व्हाट्सएप जारी नहीं किया जाता है। कंपनी द्वारा एसएमएस केवल निर्धारित सेंडर आईडी से ही भेजे जाते हैं। उपभोक्ता किसी अन्य सेंडर आईडी अथवा निजी नंबर से आए भ्रामक मेसेज से सतर्क रहें। कंपनी अंतर्गत विद्युत देयकों के भुगतान के लिए उपभोक्ता पहचान नंबर यानि आईवीआरएस नंबर की जरूरत होती है।

आईवीआरएस नंबर के आधार पर ही जोन, वितरण केन्द्रों या अन्य गेटवे एमपी ऑनलाइन, पेटीएम, फोन पे, गूगल पे. अमेजन पे, व्हाट्सएप पे आदि पर बिजली बिलों का भुगतान होता है। उपभोक्ता किसी भी अनजान मोबाइल नंबर से आए फोन या व्हाट्सएप मैसेज के आधार पर किसी भी मोबाइल नंबर पर देयकों की राशि अंतरित न करें। साथ ही अपना पिन नंबर भी किसी के साथ साझा न करें। कंपनी के संज्ञान में आया है कि सायबर जालसाजों द्वारा बिजली उपभोक्ताओं को एसएमएस, व्हाट्सएप मैसेज अथवा आई.व्ही.आर. तकनीक से फोन कॉल पर नंबर दबाने के लिये कहा जाता है, जिसमें बिल भुगतान कराने के लिए भय बनाकर कि आपकी बिजली कुछ घंटों बाद काट दी जाएगी, इसके लिए बिल भुगतान करने के लिये विशेष नंबर दबाएं, मोबाइल नंबर विशेष अथवा अनजान लिंक/ऐप पर क्लिक कर या संपर्क कर बकाया राशि जमा कराएं। इस प्रकार के एसएमएस, व्हाट्सएप मैसेज एवं आई.व्ही.आर. फोन कॉल फर्जी हैं। इन पर ध्यान नहीं दें। इस प्रकार के फर्जी सायबर जालसाजों से सतर्क और सावधान रहें। साइबर फ्रॉड संबंधित किसी भी घटना की सूचना तत्काल भारत सरकार की हेल्पलाइन 1930 पर दर्ज कराएं।

जनगणना निदेशक ने बुधनी में किया जनगणना कार्य की गुणवत्ता का निरीक्षण

सीहोर (निप्र)। जनगणना निदेशक श्री संजीव श्रीवास्तव ने बुधनी में जनगणना कार्य का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने फील्ड पर पहुंचकर जनगणना कार्य की गुणवत्ता की जांच की और आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उल्लेखनीय है कि बुधनी में जनगणना के प्रथम चरण के अंतर्गत मकान सूचीकरण का शत-प्रतिशत कार्य पूर्ण किया जा चुका है। प्रथम चरण में बुधनी तहसील अंतर्गत 20,743 मकानों का सर्वेक्षण किया गया, जिसमें 77,107 जनसंख्या का विवरण संकलित किया गया है। निरीक्षण के दौरान जिला जनगणना अधिकारी श्री जमील खान, जनगणना के संयुक्त निदेशक श्री रामावतार पटेल, जिला जनगणना प्रभारी सुश्री यशस्वी, तहसीलदार श्री ललित सोनी सहित अन्य अधिकारी, सुपरवाइजर और प्रगणक उपस्थित थे।

टाटा मेमोरियल सेंटर की एक यूनिट विदिशा में होगी प्रारंभ : केंद्रीय मंत्री चौहान

विदिशा (निप्र)। केंद्रीय किसान कल्याण तथा कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आज विदिशा के कलेक्ट्रेट स्थित बेतवा सभा कक्ष में रबी फसल उपार्जन की समीक्षा बैठक की। इस बैठक के पहले उन्होंने विदिशा सहित रायसेन, सीहोर और देवास जिले के कैंसर पीड़ित मरीजों की सुविधा के लिए कैंसर जैसी गंभीर बीमारी के परीक्षण व इलाज की व्यवस्थाओं के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल सहित अन्य जिले के अधिकारियों और टाटा मेमोरियल सेंटर मुंबई के वरिष्ठ अधिकारियों से चर्चा की है। इस दौरान बैठक में विधायकगण सहित अन्य जनप्रतिनिधियों के अलावा जिला प्रशासन की टीम भी मौजूद रही। केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज

सिंह चौहान ने कहा कि मध्य प्रदेश सरकार के के सहयोग से टाटा मेमोरियल सेंटर की एक नवीन इकाई विदिशा में प्रारंभ की जाएगी। इसके लिए स्थान का चिन्हांकन किया जाएगा, अपितु भवन बनने में समय लगेगा इसके लिए टाटा मेमोरियल की टीम विदिशा में आयोजित केम्प के पहले टीम द्वारा व्यवस्थाओं के प्रबंधो का जायजा लेने हेतु विदिशा के शासकीय अटल बिहारी वाजपेई चिकित्सा महाविद्यालय में प्रारंभिक सुविधा शुरू करने के उद्देश्य से निरीक्षण हेतु आएंगी। इस दौरान बतलाया गया कि मेडिकल कॉलेज में 5, 6 और 7 जून को सिर्फ कैंसर जैसी घातक बीमारी का परीक्षण व पीड़ितो के उपचार हेतु वृहद शिविर का आयोजन किया गया है। केन्द्रीय मंत्री श्री चौहान ने कहा कि पीड़ित मानवता की सेवा की दिशा में यह कार्य किये जा रहे हैं, ताकि विदिशा सहित आसपास के अन्य जिले के कैंसर पीड़ित मरीज अनावश्यक परेशानियों से बच सकें। उन्होंने कहा कि टाटा मेमोरियल सेंटर कैंसर जैसी बीमारी के इलाज के लिए सबसे विश्वसनीय अस्पताल है। इसी उद्देश्य से विदिशा सहित आसपास के जिलों के कैंसर पीड़ित मरीजों के उचित इलाज के लिए टाटा मेमोरियल सेंटर की यह इकाई विदिशा में शुरू की जाएगी। उन्होंने बताया कि 5, 6 और 7 जून तक तीन दिवस के लिए टाटा मेमोरियल सेंटर के वरिष्ठ डाक्टर व विशेषज्ञों की टीम विदिशा आएगी। जिला प्रशासन के सहयोग से यहां पर कार्य किए जाएंगे ताकि कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से पीड़ित मरीजों को टाटा मेमोरियल कैंसर अस्पताल की तर्ज पर उचित उपचार मरीजों को स्थानीय स्तर पर ही मिल सके। केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने कहा कि कैंसर जैसी बीमारी से पीड़ित मरीजों की सुविधा के लिए कीमोथेरेपी जैसी सुविधाओं के लिए मेडिकल कॉलेज में शीघ्र ही प्रक्रिया शुरू की जाएगी। टाटा मेमोरियल सेंटर की टीम विदिशा आ रही है 15 दिवस के भीतर समस्त आवश्यक तैयारियां पूर्ण कर ली जाएंगी।

सालभर पहले फर्जी कार्डियोलॉजिस्ट ने ली थी 7 की जान

दमोह में फिर पकड़े गए 3 फर्जी एमबीबीएस डॉक्टर

दमोह (नप्र)। मध्य प्रदेश के सरकारी स्वास्थ्य सिस्टम में सेंधमारी का एक बेहद खौफनाक और चौंकाने वाला मामला सामने आया है। दमोह जिले के सुभाष कॉलोनी स्थित सरकारी संजीवनी क्लिनिक में फर्जी डॉक्टरों की एक टोली करीब एक साल से मरीजों का इलाज कर रही थी। पुलिस ने जाली एमबीबीएस डिग्री और मेडिकल काउंसिल के फर्जी रजिस्ट्रेशन

दस्तावेजों के आधार पर नौकरी पाने वाले दो मुख्य आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जबकि एक अन्य को हिरासत में लिया गया है।

सीएमएचओ की रिपोर्ट से खुला फर्जीवाड़े का राज

पुलिस के मुताबिक, गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान कुमार सचिन यादव निवासी ग्वालियर और राजपाल गौर निवासी सीहोर के रूप में हुई है। इन दोनों ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत संजीवनी क्लिनिक में डॉक्टर के पद पर नियुक्ति पाई थी। इस धोखाधड़ी का भंडाफोड़ तब हुआ, जब दमोह सीएमएचओ कार्यालय ने 16 मई को कोतवाली थाने को एक वेरिफिकेशन रिपोर्ट सौंपी। जांच में इन दोनों के शैक्षणिक और रजिस्ट्रेशन दस्तावेज पूरी तरह फर्जी पाए गए, जिसके बाद पुलिस ने जालसाजी और धोखाधड़ी का मामला दर्ज कर इन्हें दबोच लिया।

जबलपुर तक फैला नेटवर्क

पकड़े गए आरोपियों से जब पुलिस ने सख्ती से पूछताछ की, तो इस खेल में शामिल एक तीसरे चेहरे अजय मौर्य का नाम सामने आया। पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए अजय मौर्य को जबलपुर से हिरासत में लिया, जो वहां के एक संजीवनी क्लिनिक में इन्हीं फर्जी दस्तावेजों के दम पर मरीजों की जिंदगी से खिलवाड़ कर रहा था। जांच अधिकारियों को अंदेशा है कि यह पूरा मामला एक बड़े संगठित रैकेट से जुड़ा हो सकता है, जो पैसे लेकर फर्जी एमबीबीएस डिग्रियां, नकली मेडिकल रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट और सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों में नौकरियां दिलवाने का धंधा चला रहा है।

एमपी के मेडिकल स्टोर्स आज बंद रहेंगे

भोपाल में 3 हजार दुकानों पर असर, दवा की ऑनलाइन बिक्री का विरोध

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में आज यानी 20 मई को दवा दुकानों की हड़ताल रहेगी। भोपाल में 3 हजार से ज्यादा मेडिकल स्टोर बंद रहेंगे। ऑल इंडिया ऑर्गनाइजेशन ऑफ केमिस्ट्स एंड ड्रगिस्ट्स ने ऑनलाइन दवा बिक्री के विरोध में यह बंद बुलाया है।

भोपाल केमिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष जितेंद्र धाकड़ ने बताया कि जिले के सभी रिटेल और थोक दवा व्यवसायी इस बंद का समर्थन करेंगे और 20 मई को अपनी दुकानें बंद रखेंगे। एसोसिएशन का कहना है कि यह मुद्दा सीधे आम लोगों की सेहत से जुड़ा है। घर-घर पहुंच रही ऑनलाइन दवाओं की गुणवत्ता और निगरानी को लेकर अभी स्पष्ट सिस्टम नहीं है, जो गंभीर चिंता का विषय है।

अस्पतालों के मेडिकल बंद से मुक्त

एसोसिएशन के अध्यक्ष धाकड़ ने बताया कि ऑनलाइन दवा व्यापार की आड़ में नकली, एक्सपायरी एवं गलत दवाओं के वितरण की संभावनाएं बढ़ रही हैं, जिससे मरीजों की जान जोखिम में पड़ सकती है।

उन्होंने भोपाल की जनता से इस बंद के कारण होने वाली असुविधा के लिए खेद व्यक्त किया है तथा नागरिकों से अपील की है कि वे 20 मई से पूर्व ही अपनी नियमित उपयोग की आवश्यक दवाओं का संग्रह कर लें।

साथ ही उन्होंने स्पष्ट किया कि अस्पतालों के अंदर संचालित मेडिकल स्टोर्स को इस बंद से मुक्त रखा गया है, ताकि मरीजों को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

ये हैं प्रमुख मांगें

- ऑनलाइन दवा बिक्री पर सख्त नियंत्रण
- कॉरपोरेट कंपनियों द्वारा भारी डिस्काउंट पर रोक
- नकली और बिना निगरानी वाली दवाओं पर कार्रवाई
- हृदय, शुगर या बीपी के मरीज हैं तो बरतें सावधानी

जिन घरों में बुजुर्ग, हृदय रोगी, शुगर या बीपी के नियमित मरीज हैं, वे अपनी जरूरी दवाओं की अग्रिम व्यवस्था 19 मई तक अनिवार्य रूप से कर लें। ताकि 20 मई को होने वाले पूर्ण बंद के दौरान किसी भी अप्रिय स्थिति से बचा जा सके।

रंगदारी, ब्लैकमेलिंग का सनसनीखेज जाल, कारोबारी से मारपीट, पैसे मांगे

रियल एस्टेट में साझेदारी का दबाव, भोपाल से महिला हिरासत में

इंदौर। जमीन और शराब के कारोबार से जुड़े एक बड़े व्यवसाई को बंधक बनाकर करोड़ों रुपये की वसूली करने की कोशिश का एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। जानकारी के अनुसार, जमीन के कारोबार में जबरन हिस्सा बनाने में नाकाम रहने पर एक महिला और उसके साथियों ने व्यवसायी की गाड़ी को बीच रास्ते में रोक लिया। इसके बाद आरोपियों ने व्यवसायी के साथ मारपीट की और एक करोड़ रुपये न देने की स्थिति में उसके पूरे कुनबे को जान से मारने का भय दिखाया।

इस पूरे घटनाक्रम में एक पुराने और चर्चित ब्लैकमेलिंग गिरोह के जुड़े होने की आशंका जताई जा रही है। इंदौर पुलिस के विशेष दस्ते ने मुस्तैदी दिखाते हुए भोपाल के औद्योगिक क्षेत्र से श्वेता जैन नामक महिला को अपनी गिरफ्त में ले लिया है, जिससे इस पूरे नेटवर्क को लेकर गहन पूछताछ की जा रही है। इस पूरे विवाद की शुरुआत एक सुनियोजित जान-पहचान से हुई। पीड़ित व्यवसायी हितेंद्र सिंह, जो बाणगंगा क्षेत्र के निवासी हैं, उन्होंने पुलिस को दी अपनी शिकायत में बताया कि कुछ दिनों पूर्व उनकी मुलाकात अलका दीक्षित नामक महिला से हुई थी। अलका ने उन्हें लाखन चौधरी नाम

के एक व्यक्ति से मिलवाया, जिसने खुद को कई जिलों का रसूखदार कारोबारी बताते हुए जमीन के धंधे में साथ मिलकर काम करने का लालच दिया।

जबरन हिस्सेदारी की मांग रखी

जब हितेंद्र सिंह ने इस प्रस्ताव को खारिज कर दिया, तो आरोपियों ने उन पर अलका के नाम 50 प्रतिशत की हिस्सेदारी का कानूनी दस्तावेज बनाने के लिए दबाव डालना शुरू कर दिया। व्यवसाई ने महिला के पुराने विवादित इतिहास को देखते हुए इस सौदे से पूरी तरह दूरी बना ली, जिसके बाद आरोपियों ने उन्हें डराना-धमकाना शुरू कर दिया।

एक करोड़ की रंगदारी मांगी

अप्रैल 18 की देर रात जब व्यवसाई सुपर कॉरिडोर से होकर गुजर रहे थे, तभी अपनी गाड़ी रोककर बात करने के दौरान आरोपियों ने उन्हें घेर लिया। अलका, उसके बेटे जयदीप और लाखन चौधरी ने अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर व्यवसाई पर हमला कर दिया और साफ लफ्जों में कहा कि यदि व्यापार में हिस्सा नहीं देना है, तो एक करोड़ रुपये नकद चुकाने होंगे, अन्यथा अंजाम भुगतने के लिए तैयार रहें। आरोपियों ने व्यवसायी के मन में खौफ पैदा करने के लिए उनके परिवार की पल-पल की जानकारी होने का दावा किया और साथ ही कुछ व्यक्तिगत चित्रों व चलचित्रों को सार्वजनिक कर समाज में छवि धूमिल करने की धमकी भी दी।

पुलिस की पड़ताल शुरू

इस घटना से भयभीत व्यवसाई ने पुलिस की शरण ली। इंदौर पुलिस के विशेष दस्ते ने मामले की गंभीरता को देखते हुए भारतीय न्याय संहिता के तहत विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। पुलिस अधिकारी के अनुसार, घटनास्थल के आसपास लगे कैमरों के फुटेज और फोन पर बातचीत की बारीकी से पड़ताल की जा रही है, जिसके बाद भोपाल से पकड़ी गई महिला की भूमिका का पूरी तरह खुलासा हो सकेगा।

बरघाट में बाघ का खौफ

युवक को जंगल में खींच ले गया आदमखोर, शरीर का आधा हिस्सा खाया; इलाके में भारी दहशत

सिवनी (नप्र)। मध्य प्रदेश के सिवनी जिले में वन्यजीव और इंसानों के बीच संघर्ष की एक बेहद दर्दनाक और दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। बरघाट थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम चमरवाही में मंगलवार सुबह तेंदूपत्ता तोड़ने जंगल गए एक आदिवासी युवक को बाघ ने अपनी चपेट में ले लिया। बाघ के इस जानलेवा हमले में युवक की मौके पर ही मौत हो गई। इस घटना के बाद से चमरवाही और उसके आसपास के दर्जनों गांवों में भारी दहशत और सन्नाटा पसरा हुआ है।

काफी देर तक नहीं लौटा, तो जंगल पहुंचे ग्रामीण- प्राप्त जानकारी के अनुसार, चमरवाही निवासी इंद्र कुमार कोरचे (30) इन दिनों चल रहे तेंदूपत्ता सीजन के कारण रोज की तरह सुबह-सुबह पास के जंगल में पत्तियां तोड़ने गया था। इसी दौरान झाड़ियों में घात लगाए बैठे एक बाघ ने उस पर अचानक हमला कर दिया और उसे अंदर घने जंगल की तरफ खींच ले गया। जब दोपहर तक इंद्र कुमार घर वापस नहीं लौटा, तो परिजनों की चिंता बढ़ी। इसके बाद ग्रामीणों ने लाठी-डंडों के साथ जंगल में उसकी तलाश शुरू की।

क्षत-विक्षत हालत में मिला शव- जंगल के भीतर काफी तलाश करने के बाद ग्रामीणों को इंद्र कुमार का क्षत-विक्षत शव बरामद हुआ, जिसे देखकर लोगों के होश उड़ गए। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, बाघ ने युवक के शरीर के निचले हिस्से को काफी नुकसान पहुंचाया था। घटना की भनक लगते ही बरघाट पुलिस और वन विभाग की टीमें तुरंत मौके पर पहुंचीं। अधिकारियों ने मौका पंचनामा तैयार कर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए बरघाट सिविल अस्पताल भिजवाया है।

एक्ट्रेस ट्विशा की डेडबॉडी पर मल्टीपल चोटें

एम्स की पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट पर सास बोलीं- केवल सनसनी फैलाने के इरादे से रिपोर्ट बनाई

भोपाल (नप्र)। भोपाल की एक्ट्रेस ट्विशा शर्मा की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत मामले ने तूल पकड़ लिया है। एम्स भोपाल की शॉर्ट पोस्टमॉर्ट्म रिपोर्ट में बॉडी पर मल्टीपल चोटों के निशानों का जिक्र है। ट्विशा के परिजन शुरुआत से हत्या की आशंका जता रहे हैं। वहीं, ट्विशा की सास गिरिबाला सिंह और उनके वकील इनोश जॉर्ज कार्लो ने रिपोर्ट पर सवाल उठाए हैं।

उनका कहना है कि रिपोर्ट केवल सेंसेशन फैलाने के इरादे से तैयार की गई है। रिपोर्ट में चोटों का जिक्र है, लेकिन कहां और कितनी चोट हैं, यह स्पष्ट नहीं किया गया। उन्होंने कहा कि सेकेंड पोस्टमॉर्ट्म या किसी भी एजेंसी से जांच कराने पर हमें कोई ऐतराज नहीं है। हम जांच में सहयोग करेंगे।

बेल्ट नहीं मिलने से अधूरी रह गई फोरेंसिक जांच- मामले में पुलिस जांच पर सवाल उठ रहे हैं। पोस्टमॉर्ट्म रिपोर्ट के अनुसार जिस बेल्ट से फांसी लगाने की बात कही गई थी, उसे जांच अधिकारी पोस्टमॉर्ट्म के समय एम्स भोपाल नहीं ले गए थे। बाद में बेल्ट जांच के लिए सौंपी गई, लेकिन डॉ. कथित फांसी के साधन और गर्दन के निशानों का वैज्ञानिक परीक्षण नहीं कर सके।पोस्टमॉर्टम में हुई चूक के बाद ट्विशा के परिजन ने मामले की जांच मध्य प्रदेश से बाहर किसी स्वतंत्र एजेंसी से कराने और दिल्ली एम्स में दोबारा पोस्टमॉर्ट्म की मांग की है।

भोपाल, इंदौर में तेज गर्मी और लू से बाजार-सड़कें सूनी

शहडोल में पारा 45 डिग्री पार, कई शहरों में लू जैसे हालात, 3 दिन और तपेगा मप्र

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में गर्मी से पूरा प्रदेश तप रहा है। मंगलवार को राजधानी भोपाल में भीषण गर्मी के कारण दोपहर में बाजार और सड़कें सूनी नजर आईं। इंदौर में दोपहर का सड़कों पर कम ही लोग नजर आए। खजुराहो में मंगलवार को भी पारा 46.4 डिग्री दर्ज किया गया था। शहडोल में 45 शाजापुर में यह 45.2 डिग्री तापमान दर्ज किया गया। कई शहरों में टेम्प्रेचर 45 के पार हो चुका है।

मौसम विभाग ने अगले 3 दिन प्रदेश में भीषण गर्मी और तापमान में 2 से 3 डिग्री तक और बढ़ोतरी का अनुमान जताया है। प्रदेश के कई शहरों में लगातार लू जैसे हालात बने हुए हैं। इससे जनजीवन प्रभावित होने लगा है। दोपहर के समय लोग घरों से बाहर निकलने से बच रहे हैं।

मौसम विभाग का कहना है कि अगले कुछ दिनों तक राहत के आसार नहीं हैं।

22 शहरों में 44 डिग्री के पार पहुंचा पारा- प्रदेश के कई शहरों में अधिकतम तापमान 44 डिग्री या उससे ऊपर बना हुआ है। नौगांव में 46 डिग्री, राजगढ़ में 45.5 डिग्री, रतलाम में 45.4 डिग्री और खंडवा में 45.1 डिग्री दर्ज किया गया था। इंदौर में 44.3 डिग्री, भोपाल में 44 डिग्री, उज्जैन में 44 डिग्री और जबलपुर में 44.2 डिग्री तापमान दर्ज किया गया। कई शहरों में पिछले साल के मुकाबले अधिक गर्मी दर्ज की गई है।

आज भी भीषण गर्मी का अलर्ट- मौसम विभाग ने भिंड, दतिया, निवाड़ी, टीकमगढ़ और छतरपुर में तीव्र लू का अलर्ट जारी किया है। यहां पारा 45 डिग्री या इससे अधिक रह सकता है।

भोपाल, ग्वालियर, इंदौर, उज्जैन, नीमच, मंदसौर, रतलाम, आगर-मालवा, राजगढ़, शाजापुर, धार, बड़वानी, खरगोन, बुरहानपुर, खंडवा, देवास, सीहोर, विदिशा, रायसेन, नरसिंहपुर, सागर, दमोह, पन्ना, गुना, अशोकनगर, शिवपुरी, श्योपुर और मुरैना में भी हीट वेव की चेतावनी दी गई है।

इन जिलों में तेज गर्मी का अनुमान- मौसम विभाग ने जबलपुर, झाबुआ, आलीराजपुर, हरदा, नर्मदापुरम, बैतूल, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, बालाघाट, मंडला, डिंडौरी, अनूपपुर, शहडोल, उमरिया, कटनी, सतना, मैहर, रीवा, मऊगंज, सीधी और सिंगरौली में लू का अलर्ट तो जारी नहीं किया है, लेकिन यहां गर्मी का असर तेज रहेगा।

चेतावनी- दोपहर 12 से 3 बजे तक बाहर न निकलें

मौसम वैज्ञानिक एचएस पांडे ने कहा कि दोपहर 12 से 3 बजे तक ज्यादा असर रहेगा। ऐसे में लोग जरूरी होने पर ही घरों से बाहर निकले। अगले 3 दिन यानी, 17, 18 और 19 मई को प्रदेश के अधिकांश हिस्सों में भीषण गर्मी पड़ेगी।

मई के 18 में से 15 दिन गिरा पानी

मध्य प्रदेश में 30 अप्रैल से आंधी-बारिश का दौर शुरू हो गया था। लगातार 11 दिन यानी 10 मई तक प्रदेश में बारिश हुई। कभी वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) का असर देखने को मिला तो कभी चक्रवात और टर्फ का। इस वजह से मई के पहले सप्ताह में बारिश हुई।11 मई को आंधी-बारिश का दौर थमा। लेकिन 12 से 18 मई तक लगातार प्रदेश के किसी न किसी हिस्से में आंधी-बारिश या ओलावृष्टि का दौर बना रहा। इस तरह मई के 18 में से 14 दिन आंधी, बारिश या ओलावृष्टि का असर रहा। मौसम विभाग ने मंगलवार को कहीं भी बारिश का अलर्ट जारी नहीं किया है।

छिंदवाड़ा में पेट्रोल-डीजल का भारी अकाल, पंपों पर लगे 'नो स्टॉक' के बोर्ड

200 से ज्यादा का पेट्रोल नहीं दे रहे पंप संचालक

छिंदवाड़ा(नप्र)। जिले में पेट्रोल और डीजल की भारी किल्लत ने आम लोगों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल की सप्लाई चेन प्रभावित होने और तेल कंपनियों द्वारा सख्त निगरानी व्यवस्था लागू किए जाने के बाद जिले के कई हिस्सों में ईंधन संकट गहरा गया है। सबसे ज्यादा असर कोयलांचल क्षेत्र परासिया में दिखाई दिया, जहां सोमवार को नगर के लगभग सभी पेट्रोल पंप पूरी तरह ड्राय हो गए। हालात इतने बिगड़ गए कि कई वाहन चालकों को अपने वाहन धक्का लगाकर ले जाने पड़े।

सुबह से ही पेट्रोल पंपों के बाहर 'नो स्टॉक' और 'ड्राय' के बोर्ड लग गए थे। लोग एक पंप से दूसरे पंप तक पेट्रोल की तलाश में भटकते रहे। कई जगहों पर वाहन चालकों और पंप कर्मचारियों के बीच बहस की स्थिति भी बनी। दोपहर तक अधिकांश पंपों पर लंबी कतारें लग गईं और ईंधन खत्म होते ही लोगों में बेचैनी बढ़ गई।

कंपनियों ने शुरू की सख्त मॉनिटरिंग- जानकारी के अनुसार तेल कंपनियों ने डीलर्स को मौखिक निर्देश जारी कर तय सीमा से अधिक ईंधन बेचने पर रोक लगा दी है। अब हर पेट्रोल पंप के स्टॉक और बिक्री की ऑनलाइन निगरानी सीधे कंपनियों द्वारा की जा रही है। डीलर्स को साफ चेतावनी दी गई है कि यदि निर्धारित लिमिट से ज्यादा पेट्रोल या डीजल बेचा गया, तो संबंधित मशीन को तुरंत लॉक कर दिया जाएगा। कंपनियों की ओर से नया टैंकर भी तभी भेजा जा रहा है, जब पंप का पुराना स्टॉक पूरी तरह खत्म होने की स्थिति में पहुंच जाए। इससे जिले के कई हिस्सों में सप्लाई बाधित हो रही है।

सीमित मात्रा में मिल रहा ईंधन- ईंधन संकट को देखते हुए पेट्रोल पंप संचालकों ने भी राशनिंग व्यवस्था लागू कर दी है। ज्यादा से ज्यादा लोगों तक ईंधन पहुंच सके, इसके लिए

ग्राहकों को सीमित मात्रा में ही पेट्रोल-डीजल दिया जा रहा है। कई पंपों पर वाहन की टैंक क्षमता का केवल 25 प्रतिशत तक ही ईंधन उपलब्ध कराया जा रहा है।

लागू की गई नई लिमिट

दोपहिया और छोटी कारों को 200 से 500 तक पेट्रोल
चार पहिया वाहनों को अधिकतम 50 लीटर पेट्रोल
भारी वाहनों को एक बार में अधिकतम 200 लीटर डीजल

इस व्यवस्था के कारण कई वाहन चालकों को बार-बार पंपों के चक्कर लगाने पड़ रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले लोगों की परेशानी सबसे ज्यादा बढ़ गई है।

परासिया में सबसे ज्यादा असर

परासिया में संकट की स्थिति सबसे गंभीर रही। नगर क्षेत्र में संचालित पांचों पेट्रोल पंप सोमवार सुबह से ही खाली हो गए। पंपों पर पेट्रोल खत्म होने की सूचना मिलते ही वाहन चालकों की भीड़ उमड़ पड़ी। कई लोगों ने डिब्बों और कैनों में अतिरिक्त पेट्रोल भरवाने की कोशिश की, लेकिन पंप संचालकों ने ऐसे ग्राहकों को मना कर दिया। शाम के समय कुछ पंपों पर सीमित मात्रा में स्टॉक पहुंचा, जिसके बाद देर रात तक वाहन चालकों की लंबी कतारें लगी रहीं। लोगों को घंटों इंतजार के बाद भी पूरा पेट्रोल नहीं मिल सका।

इन इलाकों में भी बिगड़े हालात

संकट का असर न्यूटन चिखली, रावनवाड़ा बाईपास और खिरसाढोह क्षेत्र में स्थित पेट्रोल पंपों पर भी देखने को मिला। यहां दिनभर उपभोक्ता परेशान होते रहे। कई पंपों पर शाम तक स्टॉक नहीं पहुंचा, जिससे लोगों को दूसरे क्षेत्रों की ओर जाना पड़ा।

मिडिल ईस्ट तनाव का असर

जानकारों के मुताबिक मध्य पूर्व यानी मिडिल ईस्ट में बिगड़ते हालातों की आशंका के चलते कच्चे तेल की सप्लाई चेन प्रभावित हुई है। इसी के चलते तेल कंपनियों ने सप्लाई और बिक्री पर सख्ती बढ़ा दी है। कंपनियां फिलहाल कालाबाजारी और जमाखोरी रोकने के लिए नियंत्रित वितरण व्यवस्था लागू कर रही हैं। दूसरी ओर, ईंधन संकट की खबर फैलते ही आम लोगों में घबराहट बढ़ गई है। कई लोग एहतियातन अतिरिक्त पेट्रोल-डीजल स्टोर करने की कोशिश कर रहे हैं, जिससे अचानक मांग बढ़ गई और हालात और खराब हो गए।